प्रथम पुरुष

वीरेन्द्र मल्लिक



अग्नि पीढ़ीक स्तम्भ कवि वीरेन्द्र मल्लिक अपन काव्यालोचना पोथी 'प्रथम पुरुष' मे गंभीर अध्येताक रूप मे सोझाँ अबैत छथि। बहुधंधी मल्लिकजी कवि, आलोचक, संपादक आ रंगकर्मी रहलाह अछि। ई पोथी हुनकर आलोचकक रूप केँ आर बेसी देखार करैत अछि।

पोथी अद्‌भुत अछि। ओकर कालखंड प्रायः आठ सय बर्खक। मिथिला मे एहि अवधि मे रचल अनेकानेक प्रकारक काव्यक चर्च ओ एहि पोथी मे करैत छथि।

मिथिलाक वैष्णव काव्य धारा केँ एक टा पुरातत्वशास्त्री जकाँ उत्खनित करैत ओ मैथिली साहित्यक इतिहास मे एक टा सार्थक हस्तक्षेप करैत छथि। मैथिलीक रामकाव्य, खास क' दुनू रामायणक विषय मे दू टा उपयोगी लेख छै जे मैथिली रामायण सभ केँ व्यापक रामकथाक परम्परा मे अवस्थित करैत ओकर विश्लेषण करैत अछि।

सुभद्रा हरणक बिम्बविधानक चर्चा करैत एक टा आलेख एहि हेरायल जाइत पोथीक सौष्ठवक वर्णन करैत ओकरा समकालीन चेतना मे अनैत अछि।

मैथिलीक महत्त्वपूर्ण कवि जीवकांतक कविता पर लिखल लेख हुनक काव्य केँ बुझबा मे, ओकर तह मे पहुँच' मे मदति करत।

पोथीक पहिल आलेख एक टा सैद्धांतिक लेख अछि जकरा पढ़ला सँ कविता बूझ' मे तँ मदति भेटबे करतै, संगहि पछिला एक सय पचीस बरखक मैथिली कविताक आलोचनात्मक इतिहास सेहो। समकालीन कविता पर लिखल लेख एहि प्रकल्प केँ आर गँहीर करैत अछि।

पोथी पढ़निहार लोकनि मल्लिकजीक अध्ययनक विस्तृत फलक-वेद सँ ल'क' लेनिन आ साहित्य आलोचनाक मनीषी सब धरि, हुनकर फड़िच्छ आलोचकीय दृष्टि आ हुनकर जनपक्षधरता सँ जनमल स्निग्धता सँ ओतबे प्रभावित हेताह जतेक हम भेलहुँ अछि, से आशा अछि।

मैथिली कविताक मादे एक टा तथ्यगत, इतिहास सम्मत आ फड़िच्छ पोथी जँ पढ़' चाही, तँ ई पोथी पढ़ी।

—विद्यानंद झा

प्रथम पुरुष

प्रथम पुरुष

(काव्यालोचना)

डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक



अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-91925-81-9

प्रथम पुरुष

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2023

मूल्य : 435.00 रुपए

प्रकाशक

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

सी-56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फ़ोन : +91-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

सौजन्य सहयोग : आनन्द मल्लिक

आवरण चित्र : संजीव शाश्वती

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

PRATHAM PURUSH (Maithili Poetics) by Dr. Virendra Mullick
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 435.00

माता स्वर्गीया सतरूपा देवी
आ
पिता स्वर्गीय अजब नारायण मल्लिक
केर
स्मृति मे
समर्पित

अनुक्रम

परम्परा : प्रयोग एवं आधुनिक बोधक कविता

परम्परा अत्यन्त व्यापक शब्द थिक। जीवनक प्रत्येक क्षेत्र सँ एकर सम्बन्ध अछि। धर्मशास्त्र, समाजविज्ञान, कला एवं साहित्यिक क्षेत्र मे परम्पराक विविध रूप परिलक्षित होइछ। परम्परा मे स्वीकृत विधि, प्रथा तथा प्रणालीसभक अनुसरण एवं पूर्वापर सँ आबि रहल विचारधारासभक अभिव्यक्ति होइछ। यदि कोनो युगक मनुक्ख सभक कतिपय अद्‌भुत एवं विचित्र बातसभ केँ तथा कोनो आन समाज सँ आयल अनुकरण-मूलक प्रथासभ केँ छोड़ि देल जाय तँ सामाजिक जीवनक प्रत्येक बात परम्पराक क्षेत्र मे आबि जाइछ। परम्परा आचार, व्यवहार, संस्था, भाषा, वस्त्र, गीत एवं लोक-वार्ता—सभ किछु परम्परेक अंग थिक।[1]

वर्त्तमान युग मे अनेक दृष्टियें परम्पराक अध्ययन प्रस्तुत कयल जा रहल अछि। गिंसबर्ग सामाजिक परम्परा सभक मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत कयलनि अछि। ओ सामाजिक प्रथा, रीति, व्यवहार एवं आचारक सम्बन्ध मे विस्तार सँ विवेचन प्रस्तुत कयलनि अछि।[2] वंट महोदय सामाजिक प्रथासभ केँ ओहि ऐच्छिक कार्य सभक रूप बतौलनि अछि, जे राष्ट्रीय वा जातीय जीवन मे विकसित भेल अछि। हुनका विचारें सभ प्रकारक सामाजिक परम्परा सभक मूल केँ पूजा-कार्य मे ताकल जा सकैछ। राष्ट्र, सम्प्रदाय, समाज, धर्म, संस्था अथवा कोनो जातिक संघटन मे परम्पराक महती योगदान रहैछ। राष्ट्रक परिभाषा निर्धारित करैत सिडनी हर्बर्टक कथन छनि जे राष्ट्र सेहो परम्परेक एक टा रूप थिक।[3] ईसाई, इस्लाम, जैन, बौध आदि सभ धर्म मे स्थूल एवं सुनिश्चित रूढ़िक मूल तत्व सन्निहित अछि, जे ओहि मे परम्परा सँ आबि रहल अछि। एहि धर्म सभक साम्प्रदायिक ग्रंथ सभ मे एहि बात सभक उल्लेख भेल अछि।[4]

एहि प्रकारें समाज, धर्म, राष्ट्र, जाति एवं सम्प्रदाय—जीवनक नाना क्षेत्रे मे रूढ़ि तथा परम्पराक तत्व विद्यमान अछि जे ओकरा अतीत युग सँ अनुप्राणित करैत आबि रहल अछि। टी.एस. इलियटक अनुसारें ''जाहि सँ एकहि टा देशक लोक

सभक जातीयताक भाव प्रकट होइछ, ओ स्वभाव, स्वाभाविक कार्य, सामाजिक प्रथा, धार्मिक विधि, अभिवादन-प्रणाली—सभ परम्पराक अन्तर्गत आबि जाइछ। एहि मे सामाजिक विधि-निषेधक सेहो अन्तर्भाव भ' जाइछ। एहि प्रकारें परम्परा मान्यता, विश्वास, रीति, प्रथा, रूढ़ि, आचार—सभ एकहि वस्तुक रूपान्तरण थिक। साहित्यिक परम्परावाद (Classicism), स्वच्छन्दतावाद (Romanticism) तथा यथार्थवाद (Realism) सेहो एही मे अन्तर्भूत भ' जाइछ।[5] अत: एतय हम विभिन्न क्षेत्रक परम्परा सभक स्वरूप, उत्पत्ति, विकास एवं ओकर सभक महत्त्व पर अपन विचार अति संक्षेप मे सम्प्रेषित करब।

परम्पराक स्वरूप

परम्परा अथवा रूढ़ि मे मान्यता, विश्वास एवं नैरन्तर्यक आधार होइछ। ''कविजन कहत-कहत चलि आये, सुधिकरि काहू न कही''—सूरदासक एहि पंक्ति मे परम्पराक दू टा लक्षण स्पष्ट होइछ—गतानुगतिकता तथा मान्यता वा विश्वास। अंग्रेजीक कवि वर्ड्सवर्थ एकरा भिन्न प्रकारें कहलनि अछि—''जीवनक प्रारम्भिक अवस्था (वाल्यकाल) मे हमरो प्रकृति सँ अनुराग छल, एहि युवावस्था मे सेहो हमरा ओहने अनुराग अछि तथा अपन वृद्धावस्था मे सेहो हम एकरा राखय चाहैत छी। हमरा प्रकृतिक उपासना मे ईश्वरोपासना सदृश आनन्द प्राप्त होइत रहय आओर एहि प्रकारें हमर जीवनक दिन प्रकृति-प्रेमक आनन्द सँ आह्लादित भ'उठय।''[6] एहि उक्ति मे सेहो परम्पराक भाव चरितार्थ भेल अछि।

जान लिविंग्सिटनक मतें परम्परा मे मूलत: दू टा तत्व प्रधान होइछ—मान्यता आओर भ्रांति। काव्य-क्षेत्रक सम्पूर्ण परम्पराक विकास एही दू तत्वक आधार पर भेल अछि। हुनका मतें विभिन्न शब्द सभ सँ जे अर्थ प्रकट होइछ, ओकर एक मात्र कारण अछि दीर्घकालीन सामाजिक मान्यता। एकरहि माध्यम सँ लोक अभीष्ट अर्थ ग्रहण करैछ।[7] एकर अतिरिक्त कल्पना मे दोसर तत्व छै भ्रांति। काव्यक सम्पूर्ण अप्रस्तुत विधान एकरहि पर आश्रित छै। काव्य-रचना मे उपमान अथवा प्रतीक द्वारा जाहि भाव कें व्यंजित कराओल जाइछ, ओकर मूल मे भ्रांति किंवा कल्पनाक तत्व रहैछ।

मैथ्यू आर्नाल्ड सेहो भाव, भाषा आओर वस्तु—कविक तीन गोट साधन कें स्वीकारलनि अछि। काव्य-सम्बन्धी परम्पराक विकास एहि सभ मे पाओल जाइछ। शनै:-शनै: काव्यक वर्ण्य, भाषा, शैली, रीति तथा काव्यादर्श मे सेहो परम्परा स्थापित भ' जाइछ। अत: गिलवर्ट मरेक कबह छनि, ''प्राचीन सभ्यता सँ जे पूर्ण प्रवाह निकलि क' आयल अछि, तथा जे हमरा लोकनि कें काव्यक रूप तथा एकान्विति प्रदान कयलक अछि, ओएह आदर्श परम्परा थिक।[8]

परम्परा आ काव्यशास्त्र

काव्य-क्षेत्रक परम्परा तथा काव्यशास्त्रीय परम्परा मे अन्तर होइछ। काव्यशास्त्र मे काव्यक स्वरूप, शब्द-वृत्ति, रस, ध्वनि, गुण, दोष—एही बात सभक विवेचन रहैछ। काव्यप्रकाश, साहित्यदर्पण आदि ग्रंथ सभ मे एहि बात सभक विचार कयल गेल अछि, मुदा ई विषय काव्य-परम्परा सँ भिन्न थिक। जाहि क्षेत्र मे किछु विशिष्ट रीति, रूढ़ि एवं प्रणाली स्थापित भ' जाइछ, ओकरे सभ कें काव्य-परम्पराक अन्तर्गत लेल जाइछ। काव्यांगक वर्णन अलंकार, शास्त्रीय ग्रंथ सभ मे पाओल जाइछ, मुदा काव्य-परम्पराक ओहि मे कोनो उल्लेख नहि भेटैछ। ई अधिकांशत: मौखिके रूप मे चलैत रहैत अछि। विद्यापतिक गीतकाव्यक विषय मैथिली साहित्य मे काव्य-परम्परेक रूप मे चल आबि रहल अछि। एकर अतिरिक्त अलंकार-शास्त्र एक टा व्यापक विषय थिक, परम्पराक विषय अपेक्षाकृत सीमित अछि।

कवि-प्रसिद्धि

काव्य-परम्परा मे 'कवि-प्रसिद्धि' कें सेहो स्थान देल जाइछ। साहित्य मे एहन अनेक अनगढ़ंत बात पाओल जाइछ, जे कवि-समाज मे स्वीकृत भ' गेलाक कारणें रूढ़ि बनि गेल अछि। कवि-सम्प्रदाय मे, असत्य रहलो सन्ता, ओ सभ परम्परा सँ चल आबि रहल अछि। हंसक नीर-क्षीर...चकोरक अंगार भक्षण, राति मे चकवा-चकवीक वियोग, यश एवं हास्यक श्वेत रंग, पापक कृष्ण वर्ण, क्रोध एवं प्रेमक रक्तता, चन्द्रमाक शश-लांछन, कामदेवक मकरकेतन नाम, महादेवक भाल पर द्वितीयाक चन्द्रमाक स्थिति, विष्णुक क्षीर शयन, कोल, कमठ आओर शेषक पृथ्वी धारण आदि अनेक बात 'कवि-समय'क नाम सँ प्रसिद्ध अछि तथा ओकरा सर्व सम्मति सँ स्वीकृति प्राप्त छै। तें ई काव्य-परम्पराक रूप मे प्रचलित अछि तथा महाकवि लोकनि सेहो एकरा काव्य मे स्थान प्रदान कयने छथि।

राजशेखरक अनुसारें काव्य-परम्पराक पहिल आवश्यक तत्व होइछ —मान्यता वा विश्वास। दोसर तत्व थिक अलौकिकता। एकर तात्पर्य ओहि बात सभ सँ अछि जे लोक-व्यवहार सँ वहिर्भूत, विलक्षण आओर अद्भुत अछि। ई कल्पनाक आश्रित रहैछ। एहि सँ ई सिद्ध होइछ जे काव्य-परम्पराक दोसर तत्व थिक—कल्पना अर्थात् भ्रांति। तेसर तत्व थिक-परम्परा। एकर अर्थ पूर्वकालक कवि लोकनि सँ चल अबैत काव्य प्रवृत्तिक अनुसरण थिक। एहि प्रकारें परम्परा मे गतानुगतिकता एवं अनुकरणक तत्व विद्यमान रहैछ। राजशेखरक मतक निष्कर्ष ई जे काव्य-परम्पराक तीन आधारभूत तत्व अछि—(1) मान्यता, (2) कल्पना एवं (3) अनुकरणक प्रवृत्ति। उपर्युक्त विभिन्न विद्वानक विचार सँ ई स्पष्ट होइछ जे कवि-समय, कवि-परम्परा अथवा काव्य-

रूढ़िक एकमात्र आधार थिक—सर्वमान्यता। एहि मे स्वीकृति, अनुकृति तथा मान्यताक भाव विद्यमान रहैछ।

परम्परा मे रूपान्तर

साहित्यिक इतिहास मे प्रायः देखल जाइछ जे कला अपन विकासक हेतु दू प्रकारक विरोधी मार्गक अनुसरण करैछ। एक टा मार्ग छै परम्पराक स्वीकृतिक आओर दोसर मार्ग छै मुक्तिक। पहिल मार्ग पर चलयवला कवि परम्परावादी कहबैत छथि आओर दोसर मार्ग पर चलयवला क्रांतिकारी। प्रथम श्रेणीक कवि रचनात्मक विधि मे विश्वास करैछ। आओर दोसर नव-नव 'खोज' एवं प्रयोग मे। एकर अतिरिक्त परिस्थितिक परिवर्त्तन सँ सेहो काव्य-मार्ग बदलि जाइछ। कोनो राज्य मे राजनीतिक, आर्थिक अथवा सामाजिक उत्क्रांतिक अवसर पर सेहो प्राचीन परम्परा विशृंखलित भ' जाइछ। जखन नव चेतना नव क्रांति केँ जन्म दैछ, तखन प्राचीन परम्परा असामयिक अनुपयोगी एवं असक्त सिद्ध भेला सँ समाप्त भ' जाइछ। सन् 1889 ई.क राज्य क्रांतिक पश्चात् फ्रांस मे एहने स्थितिक प्रार्दुर्भाव भेल छलै जाहि मे प्रतिक्रियावादी तत्व केँ विजयी भेला सँ प्राचन परम्परा पराभूत भ' गेलै आओर आगाँ चलि ओकर अस्तित्वो समाप्त भ' गेलै। भाव ई जे ओ परम्परा, जे परिस्थितिक संग-संग नहि चलि पबैछ, ओ पंगु एवं निर्जीव भ' जाइछ। स्वस्थ एवं समर्थ परम्परा जीवित रहैछ तथा असक्त एवं निरुपयोगी तत्व समाप्त भ' जाइछ।

निष्कर्ष ई जे जीवन सदृश साहित्य मे सेहो कोनो प्रवृत्ति स्थायी नहि होइछ। एक प्रवृत्ति अपन दोसर प्रवृत्ति केँ जन्म दैछ। ओही सँ ओ अपन पुष्टि करैछ, कखनो रूपान्तरित होइछ तथा कखनो अपने अस्तित्व केँ समाप्त क' दैछ।

प्रयोग आ परम्परा

परम्पराक सम्बन्ध अतीत सँ तथा प्रयोगक सम्बन्ध वर्त्तमान सँ होइछ। मुदा अतीत आओर वर्त्तमान, प्राचीन आओर नवीन सापेक्षिते मे देखल जा सकैछ। कर्त्तव्य आओर अधिकारक भाँति परम्परा आओर प्रयोग मे अनिवार्य सम्बन्ध होइछ। प्रत्येक कवि मे प्राचीन आओर नवीन बात सभकँ कोनो-ने-कोनो अंश मे अवश्यम्भावी योग रहैछ, कारण अतीत सँ विच्छिन्न भ' सर्वथा स्वतन्त्र भ'क' चलब कोनो कलाकारक लेल सम्भव नहि। टी. एस. इलियटक सेहो एहने मत छनि—कोनो कवि वा कलाकार अपने मे सर्वथा पूर्ण नहि होइछ। प्राचीन युगक कवि वा कलाकार सभक सम्बन्ध सँ ओकर गुण तथा गौरवक प्रशंसा कयल जाइछ। ओकर स्वतन्त्र आओर निरपेक्ष सत्ताक कोनो मूल्य नहि होइछ। समान वा असमान बात सभ मे प्राचीन

कवि सभक संग ओकर तुलना कएले सन्ता ओकर विशेषत्व प्रकट होइत अछि।[9]

साहित्यिक परम्परा केँ ऐतिहासिकतेक परिप्रेक्ष्य मे देखला सन्ता कार्य-कारणक सम्बन्ध प्रकट होइछ। यैह कारण जे मार्क्सवादी समीक्षक ऐतिहासिकतेक परिप्रेक्ष्य मे कोनो रचनाक मूल्यांकन पर जोर दैत छथि। एही सिद्धान्त केँ पुष्ट करैत जे. बिचर कहैत छथि :

> *"We do not say : 'Back to Goethe',*
> *We say : 'Onward to Goethe, '*
> *Onward with Goethe."*[10]

एहि प्रकारेँ परम्परा आओर प्रयोग मे अभेद्य सम्बन्ध अछि तथा ओ एक-दोसराक पूरक अछि। प्रत्येक प्रयोग किछु कालक अनन्तर परम्परा बनि जाइछ तथा प्रत्येक परम्परा मे नव प्रयोग सभक सृष्टि होइत रहैछ। जाहि परम्परा मे प्रयोग करबाक क्षमता नहि रहैछ, ओ ओतबहि निरर्थक अछि, जतबा ओ प्रयोग, जे नव परम्परा सभ केँ स्थापित करबा मे असमर्थ रहैत अछि।[11] प्रयोगक प्रेरणा परम्परा मे निहित रहैछ। यदि परम्परा मे विकास शक्ति नहि, गति नहि, तँ ओ बेसी दिन धरि जीवित नहि रहि सकैछ। प्रयोगहीनता निर्जीव परम्पराक लक्षण थिक। स्वस्थ परम्परा बरोबरि विकासोन्मुख रहैछ।

निष्कर्ष ई जे प्रयोग आओर परम्परा मे मूलतः कोनो अन्तर नहि अछि। प्रयोगशील कवि वा कलाकार परम्परा केँ स्वायत्त कइये क' प्रयोगक सृष्टि करैछ। स्वस्थ परम्परा सँ नव रूप, नव रंग एवं नव अभिव्यक्तिक विकास होइत रहैछ, जकरा हमरा लोकनि नव प्रयोग कहय लगैत छी।

आधुनिकता बोध आ परम्परा

व्यक्ति जाहि युग मे जिबैत अछि, जकर, क्षिति, जल, अनल एवं बसात सँ पालित होइछ, तकर बोध ओकरा लेल स्वाभाविक होइछ। ओकर व्यक्तित्व-निर्माण मे परम्परा, रूढ़ि एवं पुरातन संस्कृतिक बीजक सन्निवेश रहैछ, ओकर विकास मे आनुवंशिक तत्व सभक प्रचुर योग रहैछ, तथापि ओकरा मे युग-जीवनक-परिवेश एवं युगधर्मक पर्याप्त सहयोग रहैछ। मनोवैज्ञानिक दृष्टि सँ सेहो व्यक्ति आनुवंशिक एवं पारिवेशिक तत्वक सम्मिलित सृष्टि थिक। मुदा ककरो मे एक प्रकारक तत्वक प्रधानता रहैछ, तँ ककरो मे दोसर तत्वक। जाहि व्यक्तिक मूल मे आनुवंशिकताक प्राबल्य तथा पारिवेशिकताक न्यूनता रहैछ, ओकरा परम्परावादी कहल जाइछ। जाहि व्यक्ति मे परिवेश—जीवन एवं युगधर्मक प्रधानता तथा आनुवंशिकताक न्यूनता रहैछ, ओकरा आधुनिक कहल जाइछ। तहिना जाहि व्यक्ति मे आनुवंशिक आओर पारिवेशिक

दुनू प्रकारक तत्वक समान सम्मिश्रण रहैछ, ओकरा मिश्रित अथवा संतुलित कहल जाइछ। स्थूलतः यैह तीन प्रकारक व्यक्ति होइछ जकरा क्रमशः परम्परावादी, आधुनिक तथा संतुलित व्यक्ति कहल जाइछ।

परम्परावादी व्यक्ति अपन आनुवंशिक पारम्परिक विशेषता सभक प्राबल्यक कारणें आधुनिकताक किरण केँ देखियो क' ओकर उपेक्षा क' दैछ। ओकर स्वरूप केँ चिन्हियो क' अपन आत्मगत दृष्टिकोणक प्राबल्यक कारणें ओकरा अनुपदेय, निरर्थक एवं त्याज्य बुझय लगैत अछि आओर ओकर हँसी उड़ा क' परम सन्तोष लाभ करैत अछि। एकर कतेको ज्वलन्त उदाहरण मैथिली साहित्यक इतिहास मे तथा पत्र-पत्रिका मे देखल जा सकैछ। यैह कारण जे आधुनिकतावादी प्रतिभासम्पन्न कवि-कलाकारक रचना केँ देखि आदर्शक व्यवसाय करयवला प्राचीन पीढ़ीक गोलवलकर, हिटलर आओर बिड़ला यदा-कदा खिसिआयल बिलाड़ि जकाँ धुरखुर नोचय लगैत छथि। एहिना आधुनिकतावादी परम्परा तथा पुरातनता केँ उपेक्ष्य, उपहासास्पद एवं निर्जीव बूझि ओकरा सँ विमुख आओर आधुनिकता मे आकण्ठ मग्न रहैत छथि। बीचक व्यक्ति मांगल्यक इन्द्रधनुषी निर्माण मे संलग्न रहैत छथि।

आधुनिकता मात्र बाह्य वेष-भूषा, खान-पान, रहन-सहन अथवा सभ्यताक अन्य स्थूल रूप सभक विशेषता नहि, ओकर जड़ि व्यक्तिक अन्तराल मे निहित रहैछ। आधुनिक व्यक्तिक विचारधारा, तार्किकता, दृष्टिकोणक वैज्ञानिकता, साहित्यिक एवं सामाजिक धारणा आदि सभ किछु युग-जीवनक यथार्थ पर आश्रित रहैछ। ओकर युगबोध एवं सौन्दर्य-बोधक अपन मान्यता होइछ। परम्परागत भाषा ओकरा लेल निष्प्राण एवं निरर्थक होइछ आओर तें, ओ ओकर तिरस्कार एवं बहिष्कार करैत अछि।

शब्दक वैयक्तिक एवं फैण्टेस्टिक (fantastic) प्रयोग आधुनिकतावादी कवि एहि हेतुएँ करैछ, कारण ओकरा अपन परम्परागत उपयोग सँ चिढ़ रहैत छै। माइकेल राबर्टसक अनुसारें "प्रत्येक कवि केँ शब्द सँ खेलएबाक अधिकार रहैछ, प्रत्येक कविता मे शाब्दिक खेलबाड़क तत्व रहैछ आओर एक प्रकारें शाब्दिक खेल सेहो एक प्रकारक फैंटेसियेक रूप होइछ।[12] शब्दक एहि प्रकारक प्रयोग मैथिलीक नव कविता मे सहजता सँ देखल जा सकैछ। कमिंग्सक कविता सभ मे अक्षर सभक आकार-प्रकार आओर अन्तरण तथा शब्द, बिन्दु एवं चिह्न सभक महत्त्व अधिक भ' गेल अछि। यथा—

"—LOOK—
Pigcons fly ing and
Whee (are SPRINKLINS and in Sant with Sun
Light then)

Ing all go back wh-e-e-
Ling"

भाव ई जे आधुनिकताक प्रति जागरूकता काव्यक क्षेत्र मे आइ जतबा बेसी अछि, अन्य साहित्यिक विधा मे ओतबा नहि। मुदा एकर कोनो कसौटी निर्धारित करब सम्भव नहि। एहि विषय मे पाश्चात्य विचारक जी.एस. फ्रेजर 'क्लिष्ट, ओझरायल जटिलता केँ आधुनिकताक एकमात्र कसौटी बतौलनि अछि। मुदा हमरा विचारें क्लिष्टता एवं ओझरायल जटिलता केँ आधुनिकता मानब ओहिना अछि, जेना हाथीक कोनो एक टा अंग केँ हाथी कहब। वस्तुतः आधुनिकता बौद्धिक जागरूकताक आधार पर वर्त्तमान रूढ़ि सभक समक्ष विद्रोहीक रूप मे प्रस्तुत होइछ। विघटित मूल्यक तिरस्कार तथा नव मूल्यक स्थापना काव्य मे आधुनिकताक मानदण्ड थिक।

कहबाक आवश्यकता नहि जे वर्त्तमान औद्योगीकरणक निस्सीम प्रगति सँ आधुनिक स्त्री-पुरुषक जाहि भीड़क सृष्टि भेल अछि, ओकरा धर्म, संस्कृति, सभ्यता आओर परम्परा सँ कोनो प्रयोजन नहि। आधुनिक वैज्ञानिक समृद्धि एहन-ने युग-चेतना केँ जन्म देलक अछि, जे ओ परम्परीण भावुकता केँ निस्सार बुझैत अछि। पूजीवादी एवं सामन्ती शोषणक प्रतिक्रिया, समाजक उच्चवर्गीय सदस्य—धनपति, सामन्त एवं व्यवस्था द्वारा पोषित अन्य उच्चवर्गीय व्यक्ति सभक प्रतियें आक्रोश तिरस्कार एवं विगर्हणीयताक भाव जे उत्पन्न कयलक अछि, ओहि सँ प्राचीन काव्य-विषयक जड़ि सदा-सर्वदाक लेल उखड़ि गेलैक अछि। सौन्दर्य-बोधक प्राचीन मानदण्ड नव साहित्यक लेल पुरान भ' गेलैक अछि। आधुनिक बोध आओर यथार्थ-बोधक आब पृथक् मान्यता थिक। प्राचीन आदर्शवादक लेल ने तँ आब जीवने मे स्थान छै, ने साहित्ये मे। काव्य-शिल्पक परम्परागत उपकरण आइ निरर्थक भ' गेल अछि। नव उपमा, नव प्रतीक, नूतन शैली, नव भाषा, नव अर्थ, नव विषयक तथा नव प्रयोगक आइ सर्वत्र धूम मचल छै। मैथिली नव कविता मे नव-नव उपमान तथा प्रतीक केँ सहजहि देखल जा सकैछ। रामकृष्ण झा 'किसुन'क एक टा उपमान द्रष्टव्य थिक :

जिनगी थिक
टिकट ट्रामक
अपन स्टापेज धरिक
यात्रा क'
ओकर उपभोग क'
चुपचाप
दैत अछि लोक जकरा फेकि।

एतबहि नहि, कविताक नामकरणक क्षेत्र मे सेहो नित्य नव-नव घोषणा सुनबा मे अबैछ। सहजतावादी कविता, नवचेतनावादी कविता, अकविता, समकालीन कविता, आग्नेय कविता—नहि जानि कतबा नाम साहित्य मे अपन जड़ि जमयबाक लेल प्रयत्नशील अछि। प्राचीनता एवं आधुनिकता, परम्परा एवं प्रयोगक खाधि नित्य गहींर भेल जा रहल अछि। भावुकता एवं रसात्मकताक स्थान पर तर्कशीलता एवं बौद्धिकता, आदर्शक स्थान पर यथार्थ, स्पष्टताक स्थान पर अस्पष्टता तथा शब्दक प्राचीन अर्थक स्थान पर नव अर्थ दिस झुकाव आधुनिकताक लक्षण थिक। एहि आधुनिकताक प्रतियें, नव प्रयोगवादिताक प्रतियें यात्रीजीक विचार द्रष्टव्य थिक :

नवतुरिए आबओ आगाँ!!
वैह करत रूढ़िभंजन, आगू मुँहें बढ़त वैह...
हमरालोकनि दिअइ आशीर्वाद निश्छल मोने,
घिचिअइ टा नहि टाड. पाछाँ...
ढेकी नहि कूटी अपनहि अमरत्व टाक... ।

एहि प्रकारें आधुनिक चेतना वलयित व्यक्ति परम्परा केँ मात्र त्याज्य एवं तिरस्करणीये नहि बुझैछ, प्रत्युत ओकर विनाशक औचित्यो केँ सिद्ध करैछ। जीवकान्तक निम्न पंक्ति एही बूढ़ परम्परा पर कुठाराघात करैछ :

खबरदार! औ बूढ़
दुनू हाथ उठाउ
फटाक!!!

नव कवि केँ विश्वास थिकै जे आधुनिकता एवं नवताक लेल परम्पराक खंडन अत्यावश्यक अछि, प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यताक चट्टान सभ केँ फोड़िये क' नव अभिव्यक्तिक स्रोत प्रवहमान भ' सकैछ। कीर्तिनारायण कहैत छथि :

छन्द, लय, तुक अर्थ
कलामान
सभ केँ नोचि-नोचि खा रहल अछि
समय केर गिद्ध...
सौन्दर्य-संस्कृति
धर्म-दर्शन-आदर्श
मान-मूल्य
विद्रोहक एसीड सँ
भ' गेल भस्म।''

कहबाक आवश्यकता नहि जे प्राचीनता एवं अर्वाचीनता, परम्परा एवं नव्यताक

एहि संघर्षक कारण एक-दोसराक पारस्परिक विरोध थिक। आधुनिकताक प्रति जागरूक नव कवि, नव्यताक प्रेमी तथा प्राचीनता एवं परम्पराक विरोध करैछ, तँ प्राचीन सभ्यताक समर्थक कवि, पंडा आलोचक एवं पाठक आधुनिक चेतना-वलयित काव्य केँ उपेक्षणीय, तिरस्करणीय एवं हेय बुझैत छथि। एवं प्रकारें परम्परा एवं प्रयोगक, प्राचीनता एवं नवीनताक ई संघर्ष आधुनिक काव्य-साहित्य मे अद्यपर्यन्त चलि रहल अछि। एहि संघर्षक कहिया अन्त होयत, से समय बताओत।

एतावता ई कहल जा सकैछ जे आधुनिकता नवीन दृष्टिक पर्याय थिक। ओ खण्ड-चेतना नहि, समग्र आओर सम्पूर्ण चेतना थिक, विजन आव द होल (hol नहि whole) थिक आओर तें कोनो व्यक्ति वा काव्य अपन समग्र-सम्पूर्ण एवं एकीकृत व्यक्तित्वे सँ आधुनिक किंवा अनाधुनिक भ' सकैत अछि। मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक प्रचलन एही रूप मे भेल अछि आओर जे कालक्रमे अनहित आवेग सँ अनेक मोड़ लैत आइ शतधा स्वर मे मुखरित भ' रहल अछि।

आधुनिक कविताक अध्ययन एवं विश्लेषणक सौविध्यक लेल हम आधुनिक कविताक विकास-यात्रा केँ मुख्यत: पाँच युग-चरण मे विभक्त करय चाहब।

1. आदर्शवाद (चन्द्रयुग)
2. छायावाद-रहस्यवाद (भुवन-सुमन युग)
3. प्रगतिवाद (यात्री युग)
4. प्रयोगवाद (राजकमल युग)
5. सामयिक कविता

आदर्शवाद

कोनो कविक मूल्यांकन ओकर सम्पूर्ण काव्य कृतियेक आधार पर सम्भव होइछ। एक-दू कविताक आधार पर ओकर सम्पूर्ण काव्य-व्यक्तित्वक मूल्यांकन सर्वथा एकांगी एवं अवैज्ञानिक होइछ। कवीश्वर चन्दा झाक काव्य-कृतिक मूल्यांकन कयला सन्ता एक संग अनेक प्रकारक प्रवृत्तिक समीकरण एवं ओकर सहज आ सरल रूप मे अभिव्यक्तिकरणक दिग्दर्शन ओइछ जे हुनक महान कारयित्री शक्तिक द्योतन करैछ। कवि चन्द्र आधुनिक कविताक मुख-द्वार पर ठाढ़ छथि जतय सँ आधुनिक कविता केँ नव गति एवं त्वरा भेटलै, संगहि उपलब्ध भेलै नवीन युगक जीवन-दृष्टिक दिशा-निर्देश। मैथिलीक प्राचीन काव्य-धारा गतानुगतिकताक शृंखला मे जकड़ल छल, ओहि मे भक्ति आओर शृंगारक स्रोतस्विनी उद्दाम गतियें प्रवहमान छल। युग-द्रष्टा क्रांतिकारी चन्दा झा अपन युगीन समस्या केँ ध्यान मे राखि, सर्वप्रथम अपन पूर्वापरक भक्ति-शृंगारक बन्धन केँ शिथिल क' लोक भाषाक माध्यमे नव युगक

द्वार फोललनि। नव-नव छन्द मे देश-दशा कैँ अभिव्यक्त करब हुनक इष्ट छलनि। युग-सन्धिक कवि रहलो सन्ता ओ नवयुगीन दृष्टिये कैँ प्रमुखता प्रदान कयलनि। यैह कारण जे हुनक भक्ति-काव्यो मे जतय युग-धर्मक यथार्थवादी प्रवृत्तिक संकेत प्राप्त होइछ, ओत्तहि देश-दशाक चित्रण मे तद्युगीन नैतिक पतनक संकेत सेहो प्राप्त होइछ।

सुखी देखैछि दूइ गोट चोर ओ भिखारि।
बहुत खर्च बाढ़ि बन्धु बन्धु बीच मारि।

कवीश्वर चन्दा झाक पश्चात् एहि युगक सर्वश्रेष्ठ कवि कविवर सीताराम झाक आधुनिक काव्य-क्षेत्र मे पदार्पण भेल, जे समाजोपयोगिता कैँ ध्यान मे राखि हास्य-व्यंग्यक माध्यमे ठेठ बोलीक ठाठ मे देश-दशाक यथार्थ चित्र प्रस्तुत कयलनि जाहि मे देश-व्यापी विषमता कैँ अभिव्यक्ति भेटलै :

साधु कैँ झखैत देखल, चोर कैँ फनैत देखल।
गरीब कैँ हँसैत आ धनीक कैँ कनैत देखल।

कविवर सीताराम झाक काव्यक प्रमुख वैशिष्ट्य अछि व्यंग्योक्तिपूर्ण सरल प्रांजल भाषा एवं नव-नूतन छन्दक माध्यमे देश-दशाक यथार्थ चित्रण। एहि युगक तेसर उल्लेखनीय कवि थिकाह श्री भोलालाल दास, जनिक अधिकांश कविता प्राचीन रीतिये पर निर्मित अछि, तथापि हुनक भाव मे युगानुरूपता तथा उद्बोधनात्मकताक संकेत भेटैछ। हुनक 'युवक' कविताक निम्न पंक्ति द्रष्टव्य अछि।

भूमिकम्प छी प्रबल विश्वविप्लवकारी हम।
छी अति प्रखर तरंग रूढ़ि गिरि रजकारी हम।

एकर अतिरिक्त मनबोध एहि युगक महान क्रांतिकारी कवि छलाह जे सर्वप्रथम प्राचीन काव्य-परम्परा कैँ निर्ममतापूर्वक नकारि, नवता एवं साहसिकताक परिचय देलनि। एहि युगक सम्पूर्ण काव्य आदर्शवाद पर आधारित छल जकर पीठिका मे मर्यादामिश्रित पुनरुत्थानक भाव प्रबल छल। आधुनिकताक पृष्ठभूमिक निर्माता तथा युग-चेतनाक प्रयोक्ताक रूप मे एहि युगक साहित्य कैँ विशेष महत्त्वपूर्ण मानल जाइछ।

छायावाद-रहस्यवाद

1930 मे आबि क' आधुनिक मैथिली काव्य-धारा मे एक टा नव मोड़ आयल भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क पदार्पण सँ। भुवनजी अपन कविता कैँ संगीतात्मकता सँ मुक्त क' प्रगीत काव्य (lyrics)क रचना प्रारम्भ कयल। हिनकहि सँ प्रारम्भ भेल नवीन प्रगीत काव्यक परम्परा जाहि सँ अद्यपर्यन्त कतिपय कवि अपना कैँ पूर्णतः

मुक्त नहि क' पौलनि अछि। वस्तुतः भुवनेजी आधुनिक कविताक जनक छलाह। आधुनिकताक प्रणयन हुनकहि सँ प्रारंभ भेल। एहि कालावधिक काव्य मे—भाषा मे लाक्षणिकता, छन्द बिन्यास मे नवीनता एवं आत्माभिव्यक्तिमूलक संवेदनशील अभिव्यजनाक विन्यास होब' लागल। एहि नवीनता दिस सर्वप्रथम भुवनेजी आकृष्ट भेलाह आओर तें अपन काव्य-संग्रह 'अषाढ़' मे लिखलनि—''आइ-काल्हि नव प्रवाह। छन्दक बन्धन उठि गेल...अलंकार भार भेल।...कविता सभ तरहें विविध 'वाद' सँ ग्रस्त।''[13]

एवं प्रकारें भुवनजीक गीत काव्य मे जे लाक्षणिकता, व्यंजनात्मकता एवं नवीन छन्द-विधान दृष्टिगत होइछ, ओहि पर प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपें हिन्दीक छायावादी काव्यक प्रभाव परिलक्षित होइछ। हुनक काव्ययात्राक उत्तरकाल मे प्रवृत्तिगत दृष्टिकोण मे परिवर्त्तन आयल। प्रगतिशील स्वर सेहो हुनका काव्य मे मुखरित होब' लागल। यैह कारण जे प्रो. रमानाथ झा लिखलनि—''हमरा साहित्य मे नवीनता इएह आनल ओ प्रगतिवादक इएह प्रवर्तक थिकाह।''[14] एतबहि नहि, मैथिली साहित्यक इतिहासकार एवं आलोचक डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' कैँ तँ हुनक उद्घोष ''नहि क्षमा करब प्रतिशोध लेब' मे मार्क्सवादी भावना सेहो परिलक्षित भेलनि।[15] हम ई मानैत छी जे ओ मैथिलीक नवीन काव्यधारा कैँ संगीतात्मकता सँ मुक्त क', नवीन गीतकाव्यक सूत्रपात कयलनि, नवीनता कैँ तद्युगीन काव्य मे अनलनि, मुदा रमानाथ बाबूक ई कथन जे ओएह मैथिली मे प्रगतिवादक प्रवर्तक थिकाह, सत्य नहि बुझना जाइछ। प्रगतिशीलता एवं प्रगतिवादिता दू भिन्न वस्तु थिक। परवर्ती रचनाक आधार पर हुनका प्रगतिशील कवि कहल जा सकैछ, प्रगतिवादी कथमपि नहि। कारण ओ व्यक्ति जे राजा-महाराजाक यश-गान (चाहे जाहि स्थिति मे भेल हो) कयने होथि, मिथिलेशक स्वागत मे आँखि बिछौने होथि, ओ कथमपि प्रगतिवादी वा प्रगतिवादक प्रवर्तक नहि भ' सकैछ। प्रथम विदेश-यात्रा सँ घुरला उत्तर मिथिलेशक स्वागत मे लिखल गेल भुवनजीक गीतक निम्न पंक्ति द्रष्टव्य एवं विचारणीय अछि :

आँखि बिछा रखने छी पथ मे
स्वागत श्री मिथिलेश।

एतबहि नहि, छठम जार्जक अभिषेक काल मे कहल गेल हुनक उक्ति तँ चारण कवियो कैँ लज्जित करैछ :

फलू, फुलाउ, पाउ यश दुर्लभ
छी प्रतिनिधि जगदीशक।

हमर कथनक ई अर्थ नहि जे आधुनिक कविताक विकास मे भुवनजीक किछुओ अवदान नहि छनि। ओ निश्चित रूपें अपना युगक पुरोधा कवि छलाह, नवताक

प्रवर्तक एवं आधुनिकताक प्रवक्ता छलाह, मुदा हुनका प्रगतिवादी कहब किंवा प्रगतिवादक प्रवर्तक मानब आर किछु नहि, जातीय-गोत्रीय मैथिली आलोचना-पद्धतिक दारिद्रयक सूचक थिक।

एहि युगक अन्य कविक रूप मे प्रो. ईशनाथ झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप', सुरेन्द्र झा 'सुमन'क नाम विशेष उल्लेखनीय अछि। प्रो. झाक काव्य मे प्राचीनता एवं नवीनता, माधुर्य एवं सरसताक संगम, मधुपजीक कविता मे लोकगीत-काव्यक सरल भाषा-शैली मे चित्रण तथा 'सुमन' जीक काव्य मे प्राचीनता एवं नवीनताक, समन्वय, रमणीयार्थ प्रतिपादन द्वारा चमत्कारपूर्ण उक्तिवैचित्र्य तथा औपनिषदिक भाव-भूमि पर रचित अरविन्दक अन्तश्चेतनावाद सँ पोषित रहस्यात्मकताक उद्घाटन भेल अछि। सुमनजी अपना क्षेत्र मे विकासक उच्चतम शिखर पर अवस्थित छथि। एहि युगक सम्यक् अध्ययन एवं विश्लेषण सँ ई स्पष्ट संकेत प्राप्त होइछ जे एहि युगक काव्य छायावाद-रहस्यवादक विचार-धारा सँ आक्रान्त अछि। सूत्र मे ई कहल जा सकैछ जे एहि युगक कविक सम्मिलित प्रयास सँ आधुनिक कविता-धारा भाव, विषय एवं भाषा-शैली मे विविधता प्राप्त कयलक। स्वानुभूतिपरक रागात्मक अभिव्यक्ति, प्रवृत्तिक माध्यमे मानवीकरण, रहस्यात्मक प्रवृत्ति, संस्कृतनिष्ठ कल्पनाक उड़ान, युग-वैषम्यक चित्रण मे व्यंग्यक प्रयोग, नवीनताक प्रति आग्रहशीलता आदि केँ एहि युगक प्रमुख विशेषता मानल जा सकैछ।

प्रगतिवाद

आधुनिक कविता मे प्रगतिशील स्वरक स्फोट यद्यपि भुवनेजीक समय सँ होब'लागल छल, मुदा से भेल छल मात्र फैशनक रूप मे। मूलतः मैथिली काव्य मे प्रगतिवादक प्रवर्तक एवं उन्नायक श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' थिकाह। जगतक नग्न वास्तविकता 'रोटीक राग' जखन आगि ल' समाजक सम्मुख उपस्थित भेल ओकरा साम्यवादक संज्ञा देल गेलै। युग-युग सँ चल अबैत असन्तोष एवं विद्रोहक भावनाक प्रस्फुटन एही साम्यवादक अन्तर्गत भेल अछि जकर साहित्यिक नाम अछि मार्क्सवाद! प्रगतिवाद द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद (Dilectical materialism) क साहित्यिक रूपान्तर थिक। वस्तुतः वर्ग-वैषम्य, जाति-बैषम्य एवं यथार्थक प्रेक्षा-पट पर प्रगतिवादक चित्र अंकित कयल जाइछ। मैथिलीक आधुनिक कविता मे प्रगतिवादक जन्म सर्वहारा जनवादक उद्घोषणाक रूप मे भेल अछि। यात्रीक कविता मे एक दिस जन-संघर्षक उद्घोष, सामान्य जनक पीड़ा एवं कष्ट तथा ओकर अन्तराल मे स्यूत मुक्तिक प्राबल्य अछि, तँ दोसर दिस एहि अग्नि-शिखा केँ, क्रांतिक एहि ज्वाला केँ प्रज्ज्वलित करबाक लेल स्वयं केँ स्रष्टा रूप मे नियोजित करबाक उद्दाम लालसा सेहो प्राप्त होइछ।

''भुवनजीक पश्चात् यात्री, किरण आदि कवि लोकनि मे सर्वहाराक स्वर, सर्वहाराक भाषा मे पहिल बेर सुनबा मे अबैछ, आ ई मैथिली कविताक एक गोट घटना थिक, एक गोट युगक आविर्भाव, जकरा प्रगतिवाद नाम सँ अभिहित कयल गेल अछि।''[16]

वस्तुतः यात्री सर्वहारा कविताक धार केँ तीव्रता प्रदान क', मजदूर वर्गक संघर्षशील चेतना केँ समृद्ध एवं समुन्नत बनौलनि। पूजीवादक चट्टान सँ टक्कर लैत, मजदूर-वर्गक पक्षधरता करैत, यात्रीक कविता जनवादी स्वर केँ मुखरित एवं भास्वर कयलक अछि। 'भुवन'जीक ''पड़ल अछि बन्धन मे मृगराज''क बन्धन केँ तोड़ि यात्रीजी सामन्तवादी व्यवस्था पर तीव्र प्रहार कयलनि :

ककरो नहि बड़का धोधि हैत

× × × ×

सब करत मौज सब करत राज

सभक राज करबाक कामी यात्रीक कविता 'कविक स्वप्न' मे शोषित-पीड़ित वर्गक पक्षधरते केँ कवि-कर्म मानल गेल अछि। हुनक स्वप्न जनताक स्वप्न थिक, हुनक स्वप्न जन-जीवन, यौवन आओर युगक स्वप्न थिक, संसारक दू-तेहाइ लोकक स्वप्न थिक :

उठह कवि, तों दहक ललकारा कने
गिरिशिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे।

यात्रीजी 1970 मे इन्दौर मे आयोजित लेनिन जन्मशताब्दीक परिसंवाद मे पठित निबन्धक मध्य अपन विचार व्यक्त करैत कहने छथि—''कृषक, भिक्षुक, दीन-बालिका आदिक सहानुभूति मे लिखित कविता तँ हमरा सभक मैथिली साहित्य मे पहिनहुँ भेटैत छल, मुदा शोषणक खिलाफ संघर्षशील अकिंचन श्रेणीक उद्धार 1930 केर बाद बहरायल :

शोणित जे बोकरय जोआयल जोंक
तँ सफल तोहर बर्छीक नोक।''[17]

यात्रीजीक कविता मे जाहि रूपें जनवादी चेतनाक स्वर मुखरित भेल अछि, ओही रूपें प्रियतमाक सिन्दूर-तिलकित भाल, आ नेनाक दन्तुरित मुस्कान सेहो भास्वर भेल अछि। हुनक गार्हस्थ-स्नेह मे युग-यथार्थक स्वर निम्न पंक्ति मे प्रस्फुटित भेल अछि :

'झट आउ गाम
नहि आबी तँ हमरे सप्पत,
जँ होए एको रत्ती सिनेह बेटाक हेतु
जनु अनठबियै

भ' जाउ बिदा चिट्ठी पबैत देरी तुरन्त
से लिखलनि-ए अपनहि हाथें बउआक माय।

एवं प्रकारें आधुनिक मैथिली कविता मे जे प्रगतिवादी स्वर यात्रीक कविता सँ मुखरित भेल, ओ अद्यपर्यन्त सहस्त्रधारा मे जीवित अछि। यात्रीक बाद 'किरण' जीक कविता मे सेहो स्पष्टत: प्रगतिवादी स्वरक अभिव्यंजना भेल अछि। हुनक निम्न पंक्ति मे उक्त भावनाक चरमोत्कर्ष भेटैत अछि :

बलवान मानवक हाथक बल सँ
बैसल छह तों सराइ पर।

एकर अतिरिक्त रामचरितत्र पांडेय 'अणुक'क 'नक्षत्र' काव्य-संग्रह प्रगतिवादी कविताक सुन्दर दृष्टान्त थिक। एहि प्रकारें क्रांति भावना, यथार्थ चित्रण, परम्परागत सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक व्यवस्थाक प्रति अनास्था, घृणा एवं विक्षोभ प्रगतिवादक प्रधान लक्षण थिक। आधुनिक काव्य-धारा मध्य प्रगतिवाद कें एतेक ने लोकप्रियता भेटलैक जे अलंकारप्रिय, कल्पनाविलासी कविलोकनि सेहो अपना कें एहि प्रभाव सँ नहि बचा पौलनि आओर, फैशनक रूप मे भावुकतापूर्ण प्रगतिशील काव्यक सृजन सेहो कयल गेल। एहि प्रक्रिया मे प्रो. ईशनाथ झाक 'पथधूलि', मधुपजीक 'घसल अठन्नी', सुमनजीक 'हलधर' प्रभृत कविताक निर्माण भेल, जकरा कतिपय आलोचक प्रगतिवादक 'मोहर' लगा बेस यश अर्जित कयलनि अछि।

यात्रीजीक पश्चात् आओर राजकमलक पूर्व जे कालावधि अछि, ओहि मध्य कतिपय एहन कवि लोकनिक प्रादुर्भाव भेल जे बराबरि फेन्सक एम्हर-ओम्हर रहैत अयलाह अछि आओर तें हुनका लोकनि कें कोनो वादक अन्तर्गत सुनिश्चित रूपें नहि राखल जा सकैछ। एहि मे आरसी प्रसाद सिंह, उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', व्यास, राघवाचार्य, रमाकर, व्रजकिशोर वर्मा, गोविन्द झा, सुधांशु शेखर चौधरी, दीपक, दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क नाम विशेष उल्लेखनीय अछि।

प्रयोगवाद

मैथिलीक आधुनिक कविता मे प्रयोगवादक प्रवर्त्तक स्व. राजकमल चौधरी छलाह। ओएह 1958 मे 'स्वरगन्धा' कें प्रकाशित क' प्रयोगवादक प्रचलन कयलनि। ''स्व. राजकमल चौधरी मैथिली काव्य-धारा मे प्रयोगवादक प्रथम व्याख्याता तो सशक्त रचयिता छथि। 'वाद'क रूप मे प्रयोगक ध्वजा लय इएह सब सँ पहिने क्रांति करबाक हेतु ठाढ़ भेलाह।''[18] ई निर्भान्त सत्य अछि जे 'स्वरगन्धा'क रचना क' राजकमल समस्त मैथिली काव्य मे एक नव प्रयोग कयलनि। डॉ. श्रीश कें तंत्राथ झा, गोविन्द झा, सुधांशु शेखर चौधरी, गोपालजी झा गोपेश आदिक कविता मे प्रयोगवादक उत्सक

दर्शन होइत छनि। हम ई मानि सकै छी जे शेखरजी तथा गोपेशजीक काव्य मे प्रयोगक उत्स खोजला पर भेटि सकैछ, मुदा से हुनका लोकनिक काव्यक प्रमुख स्वर नहि छनि। सुधांशु शेखर चौधरीक कविता मे पारम्परिक नैतिकता एवं सौंदर्यवादिताक प्राधान्य छनि, तँ गोपेशजीक काव्यक प्रमुख स्वर हास्य-व्यंग्य मिश्रित यथार्थक चित्रण छनि।

'स्वरगन्धाक' भूमिका मे राजकमल प्रयोगवादी कविताक प्रतिमान स्थापित क' ई निर्दिष्ट कयलनि जे भाव-वस्तुक यथावत् चित्रण, रागात्मकताक स्थान पर बौद्धिकताक स्थापन, अस्पष्ट अनुभव खण्डक अस्पष्ट चित्रण, नव अर्थ मे शब्दक प्रयोग तथा नव-नूतन प्रतीकक योजना प्रयोगवादी कविताक लेल अत्यावश्यक अछि। एहि धाराक अन्य कवि मे मायानन्द मिश्र, केदारनाथ लाभ, धीरेन्द्र, रमानन्द रेणु आदिक नाम प्रमुख अछि। एहि मे सब सँ समर्थवान कवि राजकमले छलाह जे निरन्तर भाव आओर शिल्प दुनू स्तर पर नव-नव प्रयोग करैत रहलाह।

राजकमलक 'स्वरगन्धा'क प्रकाशनक दू वर्ष बाद 1960 मे मायानन्द मिश्रक 'अभिव्यंजना' तथा रामकृष्ण झा 'किसुन'क 'आत्मनेपद' प्रकाशित भेल आओर किसुनजी 'नव कविता'क प्रवर्त्तन कयलनि। नव कवितावादक अनुसारे विषय कोनो भ' सकैछ, अभिव्यंजना धरि नवीन होयबाक चाही। एहि काव्य-धारा मे परम्परागत प्रतीक, उपमा आदि कें अशक्त तथा अनावश्यक मानि, नव-नव उपमा, बिम्ब, प्रतीक आदिक खोज होब' लागल। एकर आधार परिचित लोक पक्ष कें बनाओल गेल। यैह कारण जे एहि कविता मे लोकग्राह्य गुण बनल रहल। पश्चात् अपरिचित बिम्ब एवं प्रतीक कें प्रश्रय देला सँ प्राचीन कविताक मानसिकतावला पाठक कें एहि मे सम्प्रेषणीयताक अभाव बुझाय लगलनि। कविता कें 'लेमनचूस' जकाँ चूस वला पाठक-आलोचक कें नव कविता 'कुनैन जकाँ प्रतीत होब' लगलनि। यैह कारण जे किसुनजी कें एहि सम्बन्ध मे लिखय पड़लनि :

नव कविता
किछु गोटय कें
जकर होइ छै
किछु गोटय कें नहि
भावक बोध
अर्थक बोध
बोधगम्यो होइत जे
कहबैत अछि दुर्बोध।

एवं प्रकारें 'नव कविता'क प्रथम संकलन मे सर्वश्री यात्री, राजकमल, किसुन, धीरेन्द्र, मायानन्द, हंसराज, सोमदेव, रमानन्द रेणु, रामदेव झा, मधुकर गंगाधर,

कीर्त्तिनारायण मिश्र, गंगेश गुंजन, जीवकान्त, धूमकेतु, श्रीकान्त मिश्र एवं रामानुग्रह झाक कविता संकलित कयल गेल जे आइयो नव कविक रूप मे परिगणित होइत छथि।

एकर पश्चात् सन् 1966 मे सोमदेवक 'कालध्वनि' सँ 'सहजतावाद' तथा 1967 मे नचिकेताक 'कवयोवदन्ति' सँ 'नव चेतनावाद' एवं कीर्तिनारायण मिश्रक 'सीमान्त' सँ 'अकवितावाद'क जन्म भेल। एतावता 1958 सँ 1967 धरि एक दशकक आभ्यन्तर पाँच गोट 'वाद'क अवतरणा भेल। पुन: 1970 मे उपेन्द्र एवं गंगानाथ गंगेश 'असमाहि हमर हाथ' ल'क' प्रकट भेलाह आओर एही वर्ष नचिकेताक 'अमृतस्य पुत्राः' साज-बाजक संग साहित्यिक 'मार्केट' मे आयल। 1971 मे 'कविता संभवा' ल' क' उपस्थित भेलाह महाप्रकाश। 1971 मे जीवकान्तक 'नाचू हे पृथ्वी' सेहो प्रकाशित भेल जाहि मे एक टा कछमछी, आक्रोश तथा आवेगक संग विद्रोहक स्वर प्रस्फुटित भेल अछि। सन् 1972 में भीमनाथ, विनोद, युगबोध तथा उपेन्द्र दोषीक सम्मिलित प्रयासे 'धूरी'क प्रकाशन भेल। एही वर्ष रेणुजीक 'ओकरे नाम' सेहो प्रकाश मे आयल जकरा सम्बन्ध मे प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक कथन छनि—"मृत्यु-साहित्य पर सभ भाषा मे किछु-ने-किछु साहित्य अछि आर लिखलो जा रहल अछि आ 'ओकरे नाम' ओहि साहित्य शृंखलाक एक टा कड़ी थिक।" 1973 मे 'अग्निपत्र'क प्रकाशन सँ 'आग्नेय कविता'क प्रणयन प्रारम्भ भेल, जाहि मे विद्रोह एवं सशस्त्र क्रांतिक स्वर मुखर भेल। 1972 मे इलारानी सिंह 'विन्दती'क संग सुधी समाजक समक्ष उपस्थित भेलीह। 1973 मे 'मिथिला मिहिर'क 'कविता अंक'क प्रकाशन सँ आधुनिक कविताक एक टा प्रतिमान उपस्थित कयल गेल। 1974 मे हंसराजक 'संधान' तथा 1975 मे मन्त्रेश्वर झाक 'खाधि'क प्रकाशन भेल। एवं प्रकारें 1958 सँ ल' क' 1975 धरिक समय मे आधुनिक कविता मध्य विभिन्न 'वाद'क अवतारणा भेल, तथा विभिन्न गुटक गठन भेल। संगहि विभिन्न काव्य पोथी आओर पत्रिकाक प्रकाशन सँ आधुनिक कविताक आयाम आओर विस्तृत एवं गहींर भेल अछि। एहि विभिन्न 'वाद' एवं गुटक सम्बन्ध मे 'कामरूप'क निम्न व्यंग्योक्ति द्रष्टव्य अछि :

गोलेसी, टङघिची, मिथ्या अहंकार
जे सम्पूर्ण समाज कें पंगु बनौने अछि
अपने टा महान
संसार बूड़ि अछि
यैह थिक वर्त्तमान संस्कृतिक देन।

आर जे किछु होओ, एहि डेढ़ दशकक मध्य आधुनिक कविता मे कतिपय 'वाद'क जन्म भेल जाहि सँ, काव्य-धारा मे विस्तार एवं गहराई (breadth and depth) दुनू आयल अछि। एहि कालावधिक प्रमुख कवि मे स्व. राजकमल चौधरी, किसुन,

मायानन्द, धीरेन्द्र, सोमदेव, हंसराज, गोपेश, रमानन्द रेणु, गंगेश गुंजन, प्रभास कुमार चौधरी, धूमकेतु, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, कीर्त्तिनारायण मिश्र, वीरेन्द्र मल्लिक, जीवकान्त, नचिकेता, उपेन्द्र दोषी, शेफालिका वर्मा, विरंचि, मन्त्रेश्वर झा, उपेन्द्र, गंगेश, महाप्रकाश, सुकान्त, सुभाष, घनचक्र, कुलानन्द मिश्र, मोहन भारद्वाज, भीमनाथ, विनोद, रामलोचन ठाकुर, युगबोध, पूर्णन्दु चौधरी आदिक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि।

सामयिक कविता

समकालीन कविता राजनीतिक, सामाजिक आओर वैचारिक दृष्टियें अलगाव (Alunation), विद्रोह एवं विघटनक कविता थिक। समकालीन कविता समकालीन संकट सँ सम्बद्ध कविता थिक। समकालीन कवि अपन युगक अर्थात् अपन बोखारक जाँच-पड़ताल करैत रहैत अछि, ओकर उपचार खोजैत अछि आ अवरोधक तत्व सभ पर वज्र प्रहार करैत अछि। ओकर युयुत्सा—हिंसा, आक्रोश, विद्रोह तथा क्रांति, युगीन असंगति-अन्तर्विरोधक प्रतिक्रिया तथा ओकरा दूर करबाक सन्दर्भ सँ सम्पृक्त रहैत छै। मुदा समकालीन कवियो मे किछु एहन कवि छथि जे आवेग-आक्रोश सँ रहित भ' बिनोबाइ मुद्रा मे किलोक हिसाब सँ 'वैष्णवी कविता' तथा 'रजनी-सजनी-मार्का गीत-गजल' लिखबा मे संलग्न छथि। ई सभ क्रांति सँ संन्यास आ परिवर्त्तन सँ निराश भ' 'यथा स्थितिवाद'क समर्थन करैत-करैत 'स्नीजोफोबिया'क शिकार भ' गेल छथि। एतहि समकालीन कविताक प्रतिनिधि कविक कविता एक स्तर पर विपक्षक कविता थिक। आइ विपक्ष मे मात्र कविते ठाढ़ अछि। जंगली आगि जकाँ दहकैत, कारखानाक 'फर्नेस' जकाँ लहकैत सुकान्तक कविता द्रष्टव्य अछि :

पातविहीन छाल नोचल हमर कविता चिकरैत अछि/कि सुखैल हड्डीक जंगलक खड़खड़ाहटि हमर कविता मे गुंजैत अछि/कि हमर कलमक नीबक नोक पर नचैत आखर शांति-सुव्यवस्थाक लेल घातक अछि।

समकालीन कविता-धारा मे मुख्यत: दू प्रकारक प्रवृत्ति पाओल जाइछ—(1) आधुनिकता सँ सम्पृक्त नितान्त वैयक्तिक भाव-भूमिक कविता, तथा (2) नव प्रगतिवादी कविता। प्रथम कोटिक कविता मे घोर वैयक्तिकता पाओल जाइछ, तँ दोसर प्रकारक कविता मे सामाजिकताक पक्ष उजागर अछि। प्रथम मे हताश निष्क्रियता तथा जड़ता रहैछ, तँ दोसर मे सुस्पष्ट जन-चेतना तथा विद्रोहात्मकता पाओल जाइछ। प्रथम कोटिक वैयक्तिक भाव-भूमिक कवि मे विरंचि, विनोद, रघुवीर, राकेश, पूर्णेन्दु चौधरी आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। द्वितीय नव प्रगतिवादी कवि मे वीरेन्द्र मल्लिक, सुकान्त सोम, भीमनाथ, महाप्रकाश, सुभाषचन्द्र यादव, घनचक्र, रामलोचन ठाकुर, कुलानन्द मिश्र, मोहन भारद्वाज, युगबोध आदिक नाम उल्लेख्य अछि।

समकालीन कविताक अद्यतन पीढ़ी मे किछु 'नवतूर'क प्रादुर्भाव भेल अछि जाहि मे ज्योतिवर्द्धन, नूतन राकेश, रत्नाकर, कुणाल, अग्निपुष्प, स्व. गन्धराज, राज, शैलेन्द्र आनन्द, नरेन्द्र, विभूति आनन्द प्रमुख छथि। एहि कवि लोकनि मे सम्प्रति बड़ कम व्यक्ति एहन छथि, जिनकर जीवन दृष्टि स्पष्ट भ' पौलनि अछि। तखन हिनका लोकनिक सम्भावनायुक्त प्रतिभा पर कोनो सन्देह नहि कयल जा सकैछ। सम्प्रति समकालीन कविताक पुरोधा कवि लोकनि आपातकालीन स्थिति मे शांत छथि (ओना एखनहु किछु समझौतावादी व्यक्ति आहे-माहे लिखि लैत छथि), तथापि एहि शांतिक ई अर्थ नहि जे ओ सभ मृत भ' गेल छथि। ओ निश्चित रूपें अपन युद्धक तैयारी मे संलग्न छथि। हिनका सभक लेल जान. पाल. सार्त्रक उक्त कथन पूर्णतः चरितार्थ होइछ—

"Words are "loaded pistols". If he speaks, he fires. He may be silent, but since he has chosen to fire, he must do it like a man, by aiming at targets, and not like a child, atrandom by shutting his eyes and firing merely for the pleasure of hearing the shot go off...When one is threatened, the other is too. And it is not enough...to defend them with the pen. A day comes when the pen is forced to stop, and the writer must then take up arms."[19]

निष्कर्ष

एहि प्रकारें अन्त मे ई निश्चित रूपें कहल जा सकैछ जे आधुनिक कविता परम्परा, प्रयोग आओर आधुनिक बोधक कविता थिक। क्रिया-प्रक्रिया, परम्परा-प्रयोग, रचनात्मक प्रवृत्ति एवं विरोधात्मक प्रवृत्ति मे सर्वदा प्रतिद्वन्द्व चलैत रहैछ। यैह विरोध-वृत्ति ओकरा नव गति आ त्वरा प्रदान करैछ। साहित्य मे कोनो प्रवृत्ति स्थायी नहि होइछ। जखन एक प्रवृत्ति पुरान भ' जाइछ, तँ ओहि मे रूढ़ि सभ स्थिर भ' जाइत अछि। कवि-प्रतिभा ओही पूर्व निर्धारित घसल-घसायल रीति सभक लग-पास चक्कर कटैत रहैछ जाहि सँ एकहि प्रकारक तुक, छन्द, वस्तु, प्रतीक, उपमान एवं काव्य-रूप सभक पुनरावृत्ति होयब प्रारम्भ भ' जाइछ। एहि स्थिति सँ क्रांतिक प्रादुर्भाव होइछ। नवीनता, मौलिकता एवं परिवर्त्तनक पिपासा नव काव्यक प्रेरक शक्ति थिक।

स्वस्थ परम्परा विकासमान जीवनक संग परिवर्तित होइत रहैछ तथा नव-नव प्रयोग कें प्रेरणा प्रदान करैत चलैछ। प्रयोगक लक्ष्य सेहो परम्परा बनबा मे अछि। जखन काव्य मे रूढ़ि सभक कारणें अगति आबि जाइछ, तखन नव प्रयोग क्रांतिक उद्घोष सुनबैत अछि तथा नवीन उर्जस्वित परम्परा सभक स्थापना करैत अछि। सम्प्रति

आधुनिक कविता मे जे नव-पुरान पीढ़ीक बीच संघर्ष अछि, ओ एही प्रक्रियाक परिणाम थिक। यैह प्रतिद्वन्द्विता (Contradictions) ओकर जीवन्तताक परिचायक थिकै। तखन पुरान आ नवक संघर्ष तँ शाश्वत छै, एहि दू विरोधी ध्रुवान्त मे कहियो मेल संभव नहि छै। यैह कारण जे लेनिन लिखने छथि :—"The unity (coincidence, identitiy, equal action) of opposites is conditional, temporary, transitory, relative. The struggle of mutually exclusive opposites is absolute, just as development and motion are absolute"[20]

सन्दर्भ

1. इन्साइक्लोपीडिया आव द सोशल साइंसेज, जिल्द 15, पृष्ठ 63।
2. मारिस गिंसबर्ग : द साइकालाजी आव द सोसाइटी, पृ. 109।
3. सिडनी हर्बर्ट : नेशनैलिटी, पृष्ठ 37।
4. इन्साइक्लोपीडिया आव द सोशल साइंसेज, जिल्द 15, पृष्ठ 62।
5. टी.एस. ईलियट : द सिलेक्टेड एसेज।
6. So was it when my life began;
   So it is now I am a man;
   So be it when I shall grow old;
   Who could and with thier days
   To be bound each to each by natural piety.
   —The Rainbow—Wordsworth
7. जान लिविंग्सटन : कन्वेशन एण्ड रिवोल्ट इन पोइट्री, पृ. 10।
8. गिलवर्ट मरे : द क्लैसिकल ट्रैडिशन इन पोइट्री, पृ. 5।
9. टी.एस.इलियट : सेलेक्टेड प्रोज (पेंग्विन), पृ. 23।
10. जे. बिचर : प्राब्लेम्स आव माडर्न एस्थेटिक्स, पृ. 187।
11. लक्ष्मीकांत वर्मा : नयी कविता के प्रतिमान, पृ. 192।
12. माइकेल राबर्ट्स : इन्ट्रोडक्शन टू द फेवर बुक ऑफ माडर्न वर्स।
13. भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' : अषाढ़ (1936)।
14. प्रो. रमानाथ झा : मैथिली साहित्यक इतिहास (डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश') पृ. 29।
15. डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' : मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. 28।
16. प्रो. धीरेन्द्र : सोमदेवक 'कालध्वनि'क भूमिका, पृ. 5।
17. प्रो. शंकर सोम : आधुनिक मैथिली कविता मे निहित नव स्वर, मिथिला दर्शन (मार्च-अप्रैल 1972) पृ. 18।
18. डॉ. दुर्गानाथ झा : मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. 42।
19. जा.पाल.सार्त्र : ह्वाट इज लिटरेचर? पृ. 25 एवं 42।
20. वी. आइ. लेनिन : कलेक्टेड वर्क्स (1958) जिल्द 48 पृ. 358।

मैथिली काव्य मे वैष्णव भावधारा

वेद अपुरुषेय अछि, वैष्णव धर्म वैदिक धर्म थिक। ऋग्वेदक अनेकहु ऋचा[1] मे विष्णु देवताक उल्लेख अछि। विष्णु सर्वव्यापक, विभु, वासुदेव, छथि। ऐश्वर्य लीलाक विग्रहक रूप मे जे विष्णु छथि, माधुर्य लीला मे ओएह श्रीकृष्ण छथि।

भगवान विष्णुक वैभव अपार अछि। आइ धरि ओकर पार केओ नहि पाबि सकल अछि—

'न ते विष्णो जायमानो न जातो देव महिम्नः परमन्तमाप'।[2]

ऋग्वेद मे कालातीत महाविष्णु केँ 'वृहत् शरीर' ओ वामन विष्णु केँ 'युवा कुमार' कहल गेल अछि। हुनक ई महिमा 'अणोरणीयान् महतो महीयान' थिक। तेँ तँ कहल गेल अछि—

'वृहच्छरीरो विमिमान ऋक्वभिर्युवाकुमारः प्रत्येत्याहवम्।[3]

मन्त्रदृष्टा दीर्घतमा सेहो कहलनि अछि—

यः पार्थिवानि विममे रजांसि।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं।।[4]

विष्णु एहि पृथ्वीक लोक सभक निर्माण कयलनि अछि तथा गगन मंडलहु केँ स्वकक्ष मे स्थापित कयलनि अछि। एकहि सत्तात्मक शुद्ध तत्व केँ वेदविद् विप्र-ब्राह्मण गण इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, यम, मातरिश्वा (वायु), दिव्य, सुपर्ण, गुरुत्मान आदि अनेकहु नाम सँ अभिहित करैत छथि—

इन्द्र मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।[5]

'विष्णु' शब्दक भाव प्रकाश कँरैत कहल गेल अछि जे ई सम्पूर्ण विश्व ओहि महान् देवक शक्ति सँ व्याप्त अछि, तेँ ओ विष्णु कहबैत छथि, कारण 'विश्' धातुक अर्थ सभ मे प्रविष्ट, ओत-प्रोत किंवा व्याप्त होएब थिक—

यस्माद्विष्टमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः।
तस्मात् स प्रोच्यते विष्णुर्विशेर्धातो प्रवेशनात्।।[6]

'विष्णु'क अर्थ अछि—जे व्यापक हो 'जुहोत्यादिगणस्थ विष्लृ व्याप्तौ' सँ निष्पन्न होइछ। एकर विग्रह अछि—सर्वम् वेवेष्टि व्याप्नोतीति विष्णुः।' 'विषेः किच्च' एहि पाणिनीय उणादि सूत्र सँ 'विष्' धातु सँ 'णुक्' भेला सन्ता 'विष्णु' सिद्ध होइछ। विष्णुक व्याख्या वैदिक विद्वान् लोकनि अपन-अपन विचारधाराक अनुसार कयलनि अछि। कौषीतकि (विश् अर्थात् प्रवेश करब) जे सभ मे प्रवृष्ट होथि, तकरा विष्णु मानलनि अछि। सायणाचार्य व्याप्त्यर्थक 'विष्' सँ विष्णु सर्वव्यापक छथि, सैह अभिमत व्यक्त कयलनि अछि। ओल्डेन बर्ग विस्तृत उद्यम करबाक अर्थ मे विष्णुक अर्थ बतौलनि अछि। ब्लूमफील्ड सर्वोच्च परम पद पर आरोहण कयनिहारक अर्थ मे (वि + स्नु) केँ स्वीकारलनि अछि। मैकडानेल 'विश्' अर्थात् उद्योगी होयबाक, व्यवसायी होयबाक अर्थ मे (विश् + नु) 'विष्णु' शब्दक व्याख्या कयलनि अछि। स्वामी दयानन्द व्याप्त्यर्थक धातु 'विष्' सँ निष्पन्न 'विष्णु'क अर्थ सर्वव्यापी मानलनि अछि। एवं प्रकारें सभ विद्वान्क मत वस्तुतः एकहि सिद्ध होइछ, कारण व्याप्ति, गतिएक रूप थिक तथा प्रवेश करब, उद्योगी होएब आदि सेहो गतिएक रूप थिक। अतः विष्णुक सर्वव्यापक अर्थहि समीचीन बुझना जाइछ। तेँ तँ कहल गेल अछि—

'सर्वं विष्णुमयं जगत्।'[7]

विष्णु तँ 'पुरुरूप ईयते'—एहि वेदोक्ति केँ चरितार्थ करैत छथि। ओ 'विश्वं विष्णुः' छथि। पुराणोपपुराण तथा साम्प्रदायिक ग्रंथ सभहिक आधार-स्तम्भ वैदिक साहित्य मे विष्णुक महत्त्व सर्वाधिक प्राप्त होइछ—

वेदे रामायणे पुण्ये भारते भरतवर्षभ।
अदौ चान्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते।।[8]

वेदक प्रसिद्ध पुरुषसूक्तक मन्त्र सभ मे एहि 'सहस्रशीर्षा पुरुष' विष्णुएक कथा व्यक्त भेल अछि। यजुर्वेदक पुरुषसूक्त मे 1 सँ 16 ऋचा मे जाहि परमात्म तत्त्वक निरूपण कयल गेल अछि, ओ विष्णु तत्त्वे थिक। ओहि परमात्म तत्त्व केँ ज्ञानेन्द्रिय ओ कर्मेन्द्रिय हजारो अछि—असंख्य अछि। ओ सहस्रशीर्षा छथि, सहस्राक्ष छथि आ सहस्रपातो छथि। यथा—

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

पुरुषसूक्त मे जाहि 'पुरुष'क उल्लेख भेल अछि, ताहि सँ परमपुरुषक बोध होइछ। ओ परमपुरुष आओर केओ नहि, प्रत्युत विष्णुए थिकाए। किन्तु आश्चर्यक

बात अछि जे पाश्चात्य विद्वान् रगोज़िन (Regozin) तथा मैकडानेल (Macdonell) ओहि 'पुरुष' केँ 'दानव' ओ 'मानव' बतौलनि अछि।[10] 'वास्तव मे ई 'पुरुष' स्वयं वासुदेव विष्णु थिकाह। 'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः'[11] —एहि शुक्ल यजुर्वेदक भाष्य मे उवट लिखैत छथि—'यज्ञपुरुषं वासुदेवम्'। वेदक अनेक ऋचा मे 'विष्णु' केँ 'यज्ञ' कहल गेल अछि—''यज्ञो वै विष्णुः।''[12]

वैष्णव भक्त लोकनिक विश्वास अछि जे विष्णुए एकमात्र भगवान् छथि। ओ सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वाश्रय, स्वस्वरूप, अवतारी, भक्तप्रिय तथा करुणामय छथि। जीव आ जगत् हुनका सँ पृथक् होइतहुँ, हुनके ऊपर अबलम्बित रहैछ। ओ जगत्क सृष्टि, स्थिति आ प्रलय केर कारण छथि। ब्रह्मा, विष्णु ओ महेश मे विष्णुए सर्वश्रेष्ठ छथि। तें कोनहु देवताक पूजा करू, हुनकहि अर्चन होइत अछि। तें प्रसिद्ध अछि—

'आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति॥'

सच्चिदानन्दस्वरूप श्रीकृष्णे 'विष्णु' शब्द सँ व्यवहृत होइछ। 'कृष्ण' शब्दक व्याख्या ब्रह्मवैवर्त्तपुराण मे कयल गेल अछि। एतय 'क' ब्रह्मवाचक, 'ऋ' अनन्तवाचक, 'ष' शिववाचक, 'न' धर्मवाचक, 'अ' विष्णुवाचक तथा 'विसर्ग' नर-नारायणक अर्थ-वाचक थिक। एवंविध वेद, वेदान्त, स्मृति, पुराण, संहिता आदि आर्ष एवं धार्मिक ग्रंथ सभ मे ओएह ब्रह्म, परमात्मा, भगवान अदि नाम सँ सम्बोधित कयल गेल छथि। 'ब्रह्मत्वाद् बृहणत्वाद् वा ब्रह्म' 'आप्नोतीत्यात्मा'—एहि व्युत्पत्ति सँ ब्रह्म, विष्णु, परमात्मा शब्द समानार्थके अछि—

'ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते।'

[भागवत 1/2/11]

'परंब्रह्म तु कृष्णोहि सच्चिदानन्दकं बृहत्।'

[श्रुति]

'कृष्णमेनमवेहि त्वमात्मानमखिलात्मनाम्॥

[भागवत, 10/14/55]

एहि वाक्य सभ सँ ई स्पष्ट होइछ जे श्रीकृष्ण भगवानहि परमब्रह्म-पदवाच्य छथि। तें अर्जुन 'गीता' मे श्रीकृष्ण सँ कहै छथि—''परंब्रह्म परंधाम पवित्रं परम् भवान्।''

वेद जगत्कारण रूप मे भगवान विष्णु—नारायणे केर उल्लेख कयने अछि। विष्णुए नारायण थिकाह। आर्षवचन सभहु मे एहि तथ्यक समर्थन प्राप्त होइछ—'एको ह वै नारायण आसीत।'[13] सृष्टिक आरम्भ मे जगत्-कारण नारायणे छलाह।

'दिव्यो देव एको नारायणः।'[14] जगत् केर रचना क' क' ओहि मे क्रीड़ा कयनिहार एकमात्र नारायणे छथि। 'अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत्।'[15] जगत्कारण रूप सँ प्रसिद्ध नारायण सृष्टि-विस्तारक कामना कयलनि। 'अप एव ससर्जादौः तेन नारायणः स्मृतः।'[16] सृष्टिक आरम्भ मे विष्णु जलक रचना क' ओहि मे निवास कयलनि, तें हुनक नाम 'नारायण' पड़ल।

महाभारतक अनुशासन पर्वक एक सय चौबीसम अध्यायक आरंभ मे एक कथा अबैछ, जाहि मे, पुण्डरीक नामक ब्राह्मण द्वारा नारदजी सँ कल्याणकारी साधन कहबाक हेतु पुछला सन्ता नारदजी श्रेयोमार्गक उपदेश एहि प्रकारें देने छथि—''जे चौबीस तत्त्वमय प्रकृति सँ भिन्न, ओकर साक्षीभूत पचीसम तत्त्व 'पुरुष' कहल गेल अछि तथा जे सम्पूर्ण भूतक आत्मा अछि, ओकरे 'नर' कहल जाइछ। नर सँ सम्पूर्ण तत्त्व प्रकट भेल अछि, तें ओकरा 'नार' कहल जाइछ। 'नार'हि भगवानक निवासस्थान अछि, तें ओ 'नारायण' कहबैत छथि।

एवं प्रकारे ई स्पष्ट होइछ जे विष्णुए नारायण, हरि, वासुदेव, गोपाल ओ कृष्ण छथि। वेद समूह, यज्ञ, योग, क्रिया, ज्ञान, दान-व्रत आदि धर्मकार्य सभ वासुदेवपरक थिक। सभक पर्यवसान वासुदेवे मे अछि। तें वैष्णव धर्मक सर्वमान्य ग्रंथ श्रीमद्भागवत्[17] मे कहल गेल अछि—

वासुदेवपरा वेदा वासुदेवपरा मखाः।
वासुदेवपरा योगा वासुदेवपरा क्रिया॥
वासुदेवपरं ज्ञानं वासुदेवपरं तपः।
वासुदेवपरो धर्मो वासुदेवपरा गतिः॥

सुतरां ई स्पष्ट अछि जे कालक्रमे विष्णु, नारायण, वासुदेव, कृष्ण सभक एकीकरण भेल तथा विष्णु क्रमशः गोपाल, कृष्ण, वासुदेव आदि नाम केँ धारण कयलनि जकर स्पष्टीकरण वैष्णव धर्म वा सम्प्रदायक ऐतिहासिक अध्ययन ओ अनुशील कयला सन्तां भ' जाइछ।[18]

वैष्णव धर्म वा सम्प्रदाय

विष्णु सँ सम्बन्ध रखबाक कारणें वैष्णव, 'वैष्णव' कहबैत छथि एवं सभ वर्ण मे वैष्णव श्रेष्ठ कहबैत छथि। तें पद्मपुराणक उत्तर खण्ड मे कहल गेल अछि—

विष्णोरयं यतो ह्यासीत तस्माद्वैष्णव उच्यते।
सर्वेषां चैव वर्णानां वैष्णवः श्रेष्ठ उच्यते॥

वैष्णव धर्म वा वैष्णव सम्प्रदायक प्राचीन नाम भागवत धर्म किंवा पाञ्चरात्र मत थिक। एहि सम्प्रदायक प्रधान उपास्य देव वासुदेव छथि जनिका ज्ञान, शक्ति,

बल, वीर्य, ऐश्वर्य आओर तेज—एहि छओ गुण सँ सम्पन्न होयबाक कारण 'भगवत्' कहल जाइछ आओर भगवत्क उपासक भागवत कहबैछ। एहि सम्प्रदाय केँ 'पाञ्चरात्र, कहेबाक सम्बन्ध मे अनेकहु मत व्यक्त कयल गेल अछि। महाभारतक शान्ति पर्व 19 केर अनुसार चारि वेद आ सांख्य योगक समावेशक कारणें ई नारायणीय महोपनिषद् पाञ्चरात्र, कहबैत अछि। नारदेय पाञ्चरात्रक अनुसार एहि मे ब्रह्म, मुक्ति, भोग, योग आओर संसार—पाँच विषयक 'रात्र' अर्थात् ज्ञान रहैछ, तें ई पाञ्चरात्र थिक। 'ईश्वर संहिता', 'पद्मतन्त्र', 'विष्णुसंहिता', ओ 'परम संहिता' सेहो एकर भिन्न-भिन्न व्याख्या कयने अछि। 'शतपथ ब्राह्मण'[20] केर अनुसार सूत्रक पाँच राति मे एहि धर्मक व्याख्या कयल गेल छल, तें एकर नाम 'पाञ्चरात्र' पड़ल। एहि धर्म केँ 'नारायणीय', 'ऐकान्तिक' ओ 'सात्वत' सेहो कहल जाइछ।

अनुमान अछि जे इ.पू. चारिम शती सँ पहिल शती धरि वासुदेवोपासनाक प्रचलन भ' चुकल छल। एहि कालावधि मे वासुदेवोपासनाक अनेक प्रमाण प्राचीन साहित्य ओ पुरातत्त्व मे उपलब्ध अछि। जैन साहित्य, बौद्ध जातक, वेसनगरक स्तम्भ लेख (200 इ. पू.), नानाघाटक गुहा अभिलेख (इ.पू. पहिल शती) आदि सँ प्रमाणित होइछ जे भागवत धर्मक पहिल नाम वासुदेव धर्म वा वासुदेवोपासना छल। 'भागवत' नामहु कम सँ कम इ.पू. दोसर-तेसर शती मे प्रचलित भ' गेल छल। प्रारम्भ मे ई उपासना मार्ग शूरसेन मे (आधुनिक ब्रजदेश) रहनिहार सात्वत जाति धरि सीमित छल, परञ्च एकर प्रचार कदाचित् सात्वत केर स्थानान्तरणक कारण सँ इ.पू. दोसर-तेसर शताब्दीयहु मे पश्चिम दिशा मे भ' गेल छल तथा किछु विदेशी (यूनानी) लोकहु एहि धर्म केँ मानय लागल छलाह। सात्वत जाति सेहो पशुपालक क्षत्रिय जाति छल, जे दक्षिण मे जा क' पहिने बसि गेल छल, जकर अनेकहु प्रमाण उपलब्ध अछि।

भगवत धर्महु प्रारम्भ मे क्षत्रिय लोकनिक द्वारा चलाओल गेल एक अब्राह्मण उपासना-मार्ग छल। परञ्च कालान्तर मे सम्भवतः अवैदिक आ नास्तिक जैन-बौद्ध मतक प्राबल्य देखि ब्राह्मण लोकनि ओकरा अपनौलनि आओर वैष्णव वा नारायणीय धर्मक रूप मे ओकर विधिवत् संघटन कयलनि। 'महाभारत' शांतिपर्वक नारायणीय उपाख्यान मे एहि नव धर्म केँ वैष्णव यज्ञ कहल गेल अछि आओर यज्ञप्रधान वैदिक कर्मकाण्ड केँ प्रवृत्ति-मार्गक विपरीत निवृत्ति-मार्ग कहल गेल अछि। 'महाभारत' मे वासुदेव केँ वैदिक देवता विष्णु सँ अभिन्न कहल गेल अछि, संगहि कृष्णहुँ केँ द्वितीय वासुदेवक रूप मे विष्णुक अवतार घोषित कयल गेल अछि।

ऋग्वेद मे जे विष्णु सम्बन्धी ऋचासभ प्राप्त होइछ, ताहि मे हुनक अत्यंत भव्य वर्णन कयल गेल अछि। ओ त्रिविक्रम छथि...तीन पाद-प्रेक्षप मे सौंसे संसार केँ नापि

लैत छथि।[21] तें हुनका उरुगाय (विस्तृत गतिवाला) आओर उरुक्रम (विस्तृत पाद-प्रक्षेप वाला) कहल गेल अछि। ऋग्वेद मे विष्णु केँ अजेय गोप...'विष्णुर्गोपा अदाभ्यः'[22] सेहो कहल गेल अछि। हुनक परमपद मे भूरिशृंगा गाय सभक निवास अछि।[23] हुनक ई सर्वोच्च लोक गोलोक कहबैत अछि। यज्ञ-प्रधान ब्राह्मण-काल मे विष्णुक महत्त्व बढ़ि गेल। हुनका स्वयं 'यज्ञ'क संज्ञा द' देल गेल।[24] एवं प्रकारें सर्वाधिक शक्तिशाली वैदिक देवता इन्द्रक अपेक्षा विष्णुक महत्ता ब्राह्मण-काल मे बढ़ि गेल। जे हो, पशु-यज्ञ-विरोधी नवीन धर्मक उपास्य बनबाक लेल विष्णुए सभ सँ उपयुक्त छलाह आओर तें 'महाभारत' मे हुनका वासुदेव सँ अभिन्न कहल गेल अछि तथा वासुदेवोपासक केर—सात्वत धर्म केँ वैष्णव धर्मक नाम सँ प्रसिद्ध कयल गेल।

कृष्ण, मूल वासुदेव वा पर वासुदेव सँ भिन्न छथि, से बात अनेकहु प्रमाण सँ सिद्ध कयल गेल अछि। परञ्च महाभारतक समय धरि आध्यात्म तत्त्वक देवता नारायण, ऐतिहासिक पूज्य पुरुष वासुदेव आओर वैदिक देवता उरुगाय विष्णु सभ एकाकार भ' गेल छलाह आओर कृष्णहि केँ एक मात्र द्वितीय वासुदेव, नारायण, हरि, भगवत् तथा विष्णुक अवतार मानि लेल गेल छल। एहि प्रकारें प्रायः 600 इ.पू. सँ 500 इ. धरि भागवत धर्म केँ प्रथम उत्थान कालहि मे ओकर प्रचारक प्रचुर साधन पौराणिक साहित्यिक रूप मे तैयार भ' गेल छल। रामायण आओर महाभारतहुक वैष्णव परिणति भ' चुकल छल।

परञ्च छठम शताब्दी सँ चौदहम शताब्दीक अंत धरि उत्तर भारत मे भागवतधर्म उन्नति नहि क' सकल। मुदा दक्षिण केर आलवार भक्तक परंपरा नवम शताब्दी धरि अविच्छिन्न रूपें चलैत रहल। दक्षिणहि मे वैष्णव धर्मक चारि आचार्य—रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य तथा विष्णु स्वामी भेलाह जे क्रमशः विशिष्टाद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद तथा शुद्धाद्वैत वादक प्रवर्त्तक मानल जाइत छथि। वैष्णव लोकनि मे प्रधान रूपें एहि चारि गुरुक परम्परा स्वीकार कयल गेल अछि—श्री, ब्रह्मा, रुद्र आओर सनकादि। उपर्युक्त चारि गुरु-परम्परा सँ निर्मित चारि सम्प्रदाय प्रधान मानल जाइछ—

रामानुजं श्रीः स्वीचक्रे मध्वाचार्यं चतुर्मुखः।
श्रीविष्णुस्वामिनं रुद्रो निम्बादित्यं चतुस्सनः॥

श्रीलक्ष्मी जीक कृपा सँ रामानुजाचार्य (1016-1337), ब्रह्माक अनुकम्पा सँ मध्वाचार्य (12म शताब्दी, 100 वर्ष बाद); रुद्रक अनुग्रह सँ विष्णुस्वामी (13म् श.) आओर सनकादि मुनि लोकनिक प्रसाद सँ निम्बार्काचार्य (12म शताब्दी) साधनाक सन्मार्ग देखबैत आचार्यपद पर प्रतिष्ठित भेलाह। ई सभ वस्तुतः एकहि

परम-तत्त्वक उपासना-सुधा-सरिताक मधुर सुधा-तरंग अछि और ई सभ 'सात्वत' सम्प्रदायेक अन्तर्गत अबैछ।

एवंविध दसम सँ तेरहम-चौदहम शती धरि भक्तिक आन्दोलन दक्षिण मे शास्त्रीय रूप धारण क' क' तथा आध्यात्मिक पक्ष मे दृढ़ भ' पुनः उत्तर दिसि आयल आओर चौदहम शताब्दी सँ उनैसम शताब्दी धरि प्रबल वेगक संग देशक विस्तृत भू-भाग मे महाराष्ट्र गुजरात, पंजाब, मध्य प्रदेश, मगध, उत्कल, असम, आओर बंगदेश मे पसरि क' व्यापक लोकधर्म बनि गेल। उत्तर भारत मे एकर सभ सँ नव रूप मे प्रचार कयनिहार मे सर्वाधिक शक्तिशाली स्वामी रामानन्द भेलाह जे 'रमानन्दी सम्प्रदाय'क प्रर्वतक छथि। रामानन्दी वैष्णव, वैरागी वैष्णव कहल जाइत छथि।

चौदहम-पन्द्रहम शती मे कबीर, रैदास आदि निर्गुणोपासक सन्तक भक्ति प्रबल रहल। एकर पश्चात् वल्लभाचार्य (1478-1530)क शुद्धाद्वैत पर आधारित पुष्टि मार्ग, निम्बाचार्य द्वारा प्रतिपादित आ उत्तर भारत मे हुनक शिष्य श्रीनिवासाचार्य, औदुम्बराचार्य, गौरमुखाचार्य आओर लक्षण भट्ट द्वारा प्रचारित 'सनकादि सम्प्रदाय', मध्वाचार्यक ब्रह्म वा 'माध्वसम्प्रदाय' गोसाईं हित हरिवंशक (1503) 'राधावल्लभीय सम्प्रदाय', स्वामी हरिदासक 'हरिदासी' वा 'सखी सम्प्रदाय' तथा चैतन्य महाप्रभुक 'गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय' कृष्ण-भक्ति-आन्दोलक रूप मे वैष्णव धर्म केँ समयक आवश्यकतानुसार नव रूप प्रदान कयलक तथा समग्र लोक-जीवन केँ प्रभावित क' नव आशा, उमंग ओ क्रियात्मक शक्ति सँ अनुप्राणित कयलक। दोसर दिसि गोस्वामी तुलसीदास रामभक्तिक रूप मे प्रेम-भक्ति ओ मर्यादा भक्तिक अपूर्व समन्वय क' भक्ति-धर्म केँ एक नव सामाजिक शक्ति प्रदान कयलनि। एकर अतिरिक्त महाराष्ट्रक निवृत्तिनाथ, ज्ञानदेव, सोपानदेव, मुक्ताबाई, नामदेव, तुकाराम, गुजरातक नरसिह मेहता, असमक श्रीशंकरदेव, राजस्थानक मीराबाई आदि सभ केओ वैष्णवाग्रणी संत भ' चुकलाह अछि। दक्षिण मे श्रीरामानुजाचार्य सँ बहुत पूर्वहि श्रीसठकोप, विष्णुचित्त, भक्तपदरेणु, कुलशेखर ओ देवी आंडाल भ' चुकलाह अछि जे प्रेमोन्मत्तताक परम आदर्श छथि। ई सभ वैष्णवधर्मक परम सुन्दर स्वरूपहिक प्रकाश करैछ।

मैथिली वैष्णव साहित्य

मिथिलाक कर्मकाण्ड, सदाचार तथा उपासना-प्रणाली वेदमूलक रहल अछि। मैथिल यद्यपि पंचदेवापोसक छथि, तथापि विष्णुपूजाक परम्परा एत' बड़ प्राचीन रहल अछि। अंगने-अंगने तुलसी चौरा तथा घर-घर सत्यनारायणक कथा एकर वैशिष्ट्य थिकै। मिथिलाक परमाचार्य विदेहराज जनकक ज्ञानगुरु महर्षि याज्ञवल्क्य अपन संहिता मे विष्णुए केँ मोक्षप्रद सर्वोच्च तत्त्व मानि, हुनक उपासना केँ परम कर्तव्य जनौलनि

अछि। गायत्री मंत्रक व्याख्या करैत गायत्रीक प्रतिपाद्य ओ विष्णु केँ मानलनि अछि।

एगारहम शताब्दी सँ ल'क' पन्दरहम शताब्दी मध्यक मिथिलाक विस्तृत साहित्य तथा अभिलेखक अध्ययन ओ अनुशीलन सँ प्रतीत होइछ जे गुप्त युगीन विष्णु पूजाक पद्धति मिथिलाक लोकजीवन मे प्रचलित छल तथा विष्णुक अवतारवादक संगहि व्यवहारवादक मान्यता मिथिला मे सेहो छलै। मिथिलाक गोविन्ददत्त द्वारा शालिग्रामक पूजाक प्रसंग वर्णन सँ ज्ञात होइछ जे पंचरात्रक विभिन्न प्रणालीक पूजा-पद्धति मिथिला मे प्रचलित छल।

कर्णाटवंशक राजत्वकालक विविध ग्रंथहु मे विष्णु पूजाक वर्णन उपलब्ध अछि। चण्डेश्वरक पूर्वक नरसिंह ठाकुर 'वंशीवट' पर शयन कयनिहार 'नरसिंह'क वर्णन कयलनि अछि जनिका हाथ मे 'मुरली विराजित' छल। एहि तरहक हुनक कल्पनाक स्रोत भागवते अछि। एगारहम शताब्दी मे कृष्ण कथा मे बड़ प्रगति भेल। भोज वर्मनक बेलवा अभिलेख मे श्रीकृष्ण केँ 'महाभारत-सूत्रधार' तथा 'गोपी सह केलिकार' कहल गेल अछि। नान्यदेवक मंत्री श्रीधर विष्णुक मन्दिरक स्थापना कयलनि। चण्डेश्वर अपन ग्रंथ 'पूजा रत्नाकर' मे विष्णु-पूजाक विधि तथा 'कृत्य रत्नाकर' मे विष्णु सँ सम्बद्ध पर्वक उल्लेख कयलनि अछि। गणेश्वरक पुत्र गोविन्ददत्त अपन पोथी 'गोविन्द मानसोल्लास' मे अपना केँ 'हरिकिंकर'क रूप मे उल्लेख कयलनि अछि। गोविन्ददत्तक 'गोविन्द मानसोल्लास' तथा भैरव सिंहक 'विष्णु पूजा कल्पलता', विष्णुपुरीक 'भक्ति रत्नावली' तथा देवनाथ शर्माक 'तन्त्र कौमुदी' मे वैष्णव सम्प्रदायक तथ्यक निरूपण कयल गेल अछि। वाचस्पति मिश्र अपन प्रसिद्ध ग्रंथ 'द्वैत निर्णय'[25] मे विष्णु-उपासना केँ परम कर्त्तव्य कहैत लिखलनि अछि—

'व्रतोपासनादिना ब्राह्मणैर्विष्णुरेवाराध्यः
सर्वधर्मानितिगीतावाक्यात्।'

एवंविध ई स्पष्ट अछि जे मिथिला मे वैष्णव धर्मक परम्परा विद्यमान छल। जयदेव ओ विद्यापति अपन सरस गीतक माध्यम सँ राधा आओर कृष्णक प्रणय-लीला केँ तेहन ने व्यापक बनौलनि जे ताहि युगक मिथिला मे भागवत धर्म सर्वमान्य भेल तथा भागवत मे वर्णित कथा-वस्तुक आधार पर विष्णुपुरी, विद्यापति, रघुपति उपाध्याय आदि संत लोकनि कतिपय स्वतंत्र ग्रंथक रचना कयलनि। मिथिलाक ई वैष्णव धर्म-परम्परा लक्ष्मीनाथ, रघुवर, रोहिणीदत्त, कमलादत्त प्रभृति संत लोकनि तक अक्षुण्ण रहल।

विद्यापति भक्त छलाह वा घोर शृंगारी कवि—ई विवादक विषय रहल अछि। हुनक राधा-कृष्ण सम्बन्धी पद सभ भक्तिपरक थिक वा लौकिक—एक टा विवादास्पद विषय विद्वान लोकनिक मध्य बनल रहल अछि। जार्ज अब्राहम ग्रिसर्यन,[26] डॉ.

जनार्दन मिश्र, कुमार स्वामी, बाबू ब्रजनन्दन सहाय, डॉ. मुनीश्वर झा[27] प्रभृति विद्वान लोकनिक अनुसार 'पदावली'क राधाकृष्ण विषयक पद सभ मे भागवत-प्रेम असंदिग्ध अछि। विद्यापति-पदावली अपन भाव-सौंदर्य एवं शब्द माधुर्य सँ परवर्ती युगक वैष्णव कवि लोकनि केँ अभिभूत क' समस्त पूर्वांचल मे वैष्णव भावधारा केँ प्रवाहित कयलक। संगहि वैष्णव भक्ति-काव्यक एक टा अभिनव भाषाक सृष्टि बंग, असम, उत्कल ओ नेपालक निम्न प्रदेश मे कयलक। ई भाषा, 'ब्रजबुली' अथवा 'ब्रजबोली'क नाम सँ अभिहित कयल जाइछ, जे मैथिलीएक एक टा बांग्ला-प्रभावित रूप थिक। नगेन्द्रनाथ गुप्त[28] स्पष्टतया लिखने छथि—''प्रकृत पक्षे ब्रजबुलि बलिया कोनो बुलि किंवा भाषा नाइ। ब्रजभाषा नामे एक प्रकार हिन्दी आछे, ताहार सहित एइ सकल कवितार कोनो सम्पर्क नाइ। विद्यापति ओ गोविन्ददास बंगाली छिलेन ना, बाङ्ला ताहारा जानितेन ना। ताहारा निजेर देशेर भाषाय कविता रचना करेन, बाङ्गालीरा बाङ्लादेशे ताहा लइया आसेन। ए भाषा विशुद्ध प्राचीन मैथिली भाषा, याहा बाङ्लादेशे विकृत हइया छे, जाहा मिथिलाय अविकृत आकारे पायोया जाय। एइ भाषा बाङ्गाली वैष्णव कविरा अनुकरण करिया छिलेन।'' एवं क्रमे विद्यापति सँ जाहि पद-शैलीक सूत्रपात भेल, ब्रजबुलिक समस्त काव्य ओकरे क्रमागत कड़ी थिक।

एवंक्रमे ई स्पष्ट अछि जे विद्यापतिक प्रभाव बंगालक वैष्णव साहित्य आओर सम्प्रदाय पर तेहन ने पड़ल जे ओ बंगला साहित्यक संग एकाकार भ' गेल। भक्ति रत्नाकर कर्त्ता नरहरि चक्रवर्तीक कथन एहि सन्दर्भ मे समीचीन अछि—

ब्रजेर मधुर लीला—या सुनि दरबे शिला गाइलेन कवि विद्यापति।

विद्यपतिक गीत ओ नाटकक आधार पर बंगाल, उड़ीसा, असम आओर नेपाल मे गीत ओ नाटकक रचना प्रारम्भ भेल, जाहि सँ पूर्वीय भारतीय भाषाक प्रगति मे नवोन्मेष आयल। संगहि राधा आओर कृष्णक प्रेमाख्यानक आधार पर उत्तरी-पूर्वी भारत मे रासक परम्पराक प्रचलन भेल। मिथिला मे रासक परम्परा कृष्ण, राधा आ गोपी लोकनिक प्रणय-लीलाक आधार पर प्रारम्भ भेल। कृष्ण-लीला कीर्त्तन, प्रवचन एवं अभिनयक रूप मे लोकमध्य मान्य भेल जे वैष्णव धर्म केँ ठोस आकृति प्रदान क' भागवत ओ हरिवंश केँ सर्व व्यापकता प्रदान कयलक।

एवंक्रमे उपर्युक्त तथ्यक विश्लेषण सँ ई स्पष्ट होइछ जे महाप्रभु चैतन्य पर विद्यापतिक पूर्ण प्रभाव छलनि तथा गौड़ीय वैष्णवक उद्भव ओ विकास मे हुनक बड़ पैघ अवदान छल। वास्तव मे बंगाल, उड़ीसा ओ असम मे जाहि तीव्रताक संग वैष्णक भक्ति धारा प्रभावित भेल, से त्वरा मिथिला मे नहि आबि सकल, जकरा पाछाँ किछु अपरिहार्य कारण छल जाहि दिस प्रो. राधाकृष्ण चौधरी[29] संकेत कयलनि अछि। तथापि मैथिली साहित्य मे विद्यापति सँ ल'क' कवि चन्दाझा ओ लालदास धरि प्रभूत मात्रा मे वैष्णव भक्ति-साहित्यक रचना भेल अछि जकर विश्लेषण आवश्यक अछि।

विद्यापतिक परवर्ती वैष्णव भक्त कवि

विद्यापतिक पश्चात् मैथिली साहित्य दुइ रूप मे प्रगति कयलक—काव्य आओर किरतनिञा नाटक। साहित्यक एहि दुहू विधा मे वैष्णव भक्तिक भावधारा प्रवहमान परिलक्षित होइछ।

लोचनक 'रागतरंगिणी' मे चन्द्रकलाक एक गोट पद उपलब्ध अछि जिनका प्रसंगक वाक्य 'इति विद्यापति पुत्रवध्वा:'क रूप मे उल्लिखित अछि। डॉ. जयकान्त मिश्र चन्द्रकला केँ विद्यापतिक ज्येष्ठ पुत्र हरपतिक स्त्री माननलि अछि।[30] पं. काञ्चीनाथ झा 'किरण' चन्द्रकला केँ चन्द्रकवि जयदेवक स्त्री कहलनि अछि।[31] 'राग तरंगिणी मे प्राप्त चन्द्रकलाक पदक एक अन्य प्रति डॉ. मिश्रक लग मे सुरक्षित अछि। ई पद प्रीतकरी रागिणी मे अछि जकर सम्बन्ध राधाकृष्ण सँ अछि। एहि पद मे मैथिली ओ संस्कृत शब्दक सम्मिश्रण अछि जे कोनो आश्चर्य बात नहि, कारण ताहि युग मे द्विभाषाक प्रयोगक प्रचलन छल। पद निम्न रूप मे उपलब्ध अछि—

स्निग्ध किंचित कोमलं कुचगण्डमण्डित कुन्तलम्।
अधर विम्बसमान सुन्दरि सरदचन्द्र निभाननम्।
जय कम्बुकंठ विशाल लोचन सरद्युति फलसौरभम्।
बाहु युग्म मृणाल पंकज हार सोभय ते शुभम्।
शोभय सुन्दरि तव वदनं गदगद हास वदति विपुलम्।
उरपीन कठिन विशाल कोमल जात युग्म निरन्तरम्।
श्रीफला कमला विचित्र विधातु निर्मित कुच वरम्।
श्यामाति रेखा त्रिवलित रेखा जघन वार विलम्बिते।
अतिरूप यौवन प्रथम-संभव किं वृथा कथया प्रिये।
तेजह रूप विमोह परिहर शोक चिन्तित चिन्तये।
उपयात मदनव्याधि दुस्सह दहय पावक सेवनम्।
पवन दिसें दिसें दहय पावक युग्मदार जम्वरम्।
श्यामासवन्दिते अति समय गीत सुशोभिते।
आत्मदान समान सुन्दरि धार वर्षति सिंचये।
सिंचह सुन्दिरि मम हृदयम्, अधर सुधामधुपानमिदम्॥
चन्द्रकवि जयदेव मुद्रित मान तेज तोहें राधिके।
वचन मम धर कृष्ण अनुसर किन्तु काम कलाशुभे।
चन्द्रकला हे वचन करसी मानिनि माधव अनुसरसी।।[32]

हरपतिक लिखल 'व्यवहार प्रदीपिका' तथा 'दैवज्ञबान्धव' नामक ज्योतिष ग्रंथ अछि। 'रागतरंगिणी' मे गज सिंहक नामे तीन गोट पद उपलब्ध अछि। डॉ. जयकान्त मिश्रक मतानुसारें ओ विद्यापतिक समकालीन तथा हासिनि देवीक पति छलाह जनिक उल्लेख विद्यापति अपन पद मे कयने छथि। एवंक्रमे दसावधान ठाकुर, यशोधर, मधुसूदन, जीवनाथ, लक्ष्मीनाथ, गोविन्द कतिपय कवि लोकनि विद्यापति सँ प्रेरणा ग्रहण क' हुनक समय मे वा हुनका सँ किछु पाछाँ काव्यक सृजन कयलनि। विद्यापतिक परवर्ती कवि मे हरिदासक नाम बड़ प्रख्यात अछि, जिनका डॉ. मिश्र गोविन्द दासक भ्राता मानलनि अछि। हिनक उपरान्त मिथिलाक वैष्णव साहित्यक इतिहास मे चतुर्भुजक स्थान अछि।

मैथिली मे चतुर्भुज रचित कृष्ण सम्बन्धी पद कंसनारायण पदावली मे संग्रहीत अछि। हुनक पदक एक उदाहरण द्रष्टव्य अछि—

नव तन नव अनुराग। माधव।
नव परिचय रस जाग।
दुहु मन बसु एक काज। माधव।
आँतर भए रहु लाज।
दिन-दिन तसु तनु छीन। माधव।
एकओ ने अपन अधीन।
विनय न एको भाख। माधव।
निअ निअ गौरव राख।
हृदय धरिअ जत गोय। माधव।
नयन बेकत तत होय।
चतुर चमुर्भुज भान। माधव।
प्रेम ने होए पुरान॥

माधवी दासी नामक संतक चर्चा बंगाल एवं उड़ीसाक ब्रजबुलिक क्रम मे आयल अछि, मुदा माधवी नामक एक मैथिल ललना सेहो छलीह जनिकर वैष्णव पद एवंक्रमे अछि—

राधा-माधव विलसहिँ कुँजक माझ
तनु-तनु सरस परस रस पीवइ
कमलिनी मधुकर राज
सचकित नागर कापइ थर-थर
सिथिल होयला सब अंग।
गद गद कंठ रुधा भेले अदरस

कब होयब तुझ संग॥
सो धनि चंद मुख नैन किये हैरवे
सुनवै अमियमय बोल।
इह माझे हिरदै ताप किये मेटब
सोइ करब किये कोल।
अइसन कतहु विलपति माधव
सहचरि दूरहि हँसी।
अपरूप प्रेम विषादित अन्तर
कह ताहि माधवी दासी॥

मैथिली वैष्णव संत साहित्यक रचना मे लक्ष्मीनाथक स्थान बड़ विशिष्ट अछि। यद्यपि मिथिला मे एहि नामक एक टा व्यक्ति भेलाह अछि जे संत आ साहित्यकार दुहू छलाह, परञ्च एहि लक्ष्मीनाथक सम्बन्ध ओइनवार वंश सँ छल। ओ पद-रचना मे अपन नाम कंसनारायण रखैत छलाह। हुनक एक पदक नमूना प्रस्तुत अछि—

माधव ए बेरि दुरहि दुर सेवा।
दिनदिन धैरज धरु यदुनन्दन
हमे तप बरि वरु देवा॥
करइ कुसुम बेकत मधु न रहते
हठ जनु करिअ मुरारि॥
तुअ अह दाप सहए के पारत
हमे कोमल तनु नारि॥
आइति हठ जञो करबह माधव
जञो आइति नहि मोरी
काञि वंदरि उपभोग न आओत
उहै की फूल पओवह तोली॥
एतिखने अमिय बचन उपभोगह
आरति आदि ने देबा।
लक्ष्मीनाथ भन सुन यदुनन्दन
कलियुग निते मोरि सेवा॥

विद्यापतिक पश्चात् जीवन प्रवाहक शाश्वत सौन्दर्यक व्यंजना मे गोविन्ददासक अन्यतम स्थान अछि। ''गोविन्ददास एक एहन कुशल शिल्पी छलाह जनिक काव्य-कसीदा वा भाषाक बेल-बूटाक सजावटिक समता प्राय: अन्य कविक काव्य मे नहि प्राप्त होइछ।''[33]

डॉ. सुकुमार सेनक अनुसार गोविन्ददास नामक गोविन्ददास कविराज, गोविन्ददास चक्रवर्ती तथा गोविन्ददास आचार्य तीन गोट वैष्णव कवि भेलाह।[34] मुदा डॉ. जयकान्त मिश्रक अनुसार गोविन्ददास, रामदासक ज्येष्ठ भ्राता एवं गुरु छलाह। पंजी मे हुनका कृष्णदासक पुत्र कहल गेल अछि।[35] गोविन्ददास, गंगाराम, हरिदास तथा रामदास; कृष्णदास झाक चारि गोट पुत्र रहथिन। ओ चारू भाइ कवि छलाह।

वस्तुतः गोविन्ददासक स्थान मैथिली साहित्यक इतिहास मे विद्यापतिक बाद महत्त्वपूर्ण अछि, जे वस्तुतः विद्यापतिक काव्य-परम्पराक अनुयायी छलाह तथा हुनका प्रति हुनक हृदय मे जे श्रद्धा एवं भक्ति छल, ओकर अभिव्यक्ति ओ निम्न रूप मे कयने छथि—

कविपति विद्यापति मतिमान।
जाक गीत जग चित्त चोरायल
गोविन्द गोरि सरस रस गान।

एकर अतिरिक्त गोविन्ददास कवि कोकिलक प्रति जे भक्तिभावना केँ प्रदर्शित कयलनि अछि, ओकर दिग्दर्शन निम्न पद मे उपलब्ध अछि—

विद्यापति पद युगल सरोरुह निस्यन्दित मकरन्दे।
तसु मझु मानस मातल मधुकर पिबइते करु अनुबन्धे॥

गोविन्ददास 'कृष्णलीला' नामक ग्रंथक रचना कयलनि जाहि मे राधाक विरह-दशाक मार्मिक चित्रण भेल अछि—

आँचर मुख शशि गोय। बेर बेर लोचन रोय।
कारण बिनु क्षणहास। उतपत दीह निशास॥
सुनु सुनु सुन्दर श्याम। प्रेमक इह परिणाम॥
तातल तनु नहि छोट। सतत महितल लोट।
ककरहु किछु नहि कहय। के अस वेदन सहय॥
जगभरि कुलवति वाद। के दय करब संवाद॥
गोविन्ददास आसोआस। जीवय तुअ अभिलास॥

एवंविधि राधा-कृष्णक एकान्त लीलाक मनोरम चित्रांकन मे गोविन्ददास पूर्वराग, अनुराग, मिलन, मान, प्रेमवैचित्र्य आदि विभिन्न स्थितिक क्रमानुगत वर्णन कयलनि अछि। राधाक अद्वितीय रूप-राशि श्रीकृष्णक प्रणय-पिपासु हृदय केँ अनायासे आकृष्ट कयलक—

याँहा याँहा निकसये तनु तनु-ज्योति।
ताँहा ताँहा बिजुरि चमकय होति॥
याँहा याँहा अरुण चरण चल चलइ।

ताँहा ताँहा थल-कमल-दल खलइ॥
देखि सखि को धनि सहचर भेलि।
आमारि जीवन संगे करतहि खेलि॥
याँहा याँहा भाङ्गुर भाङ्गु विलोल।
ताँहा ताँहा उछलइ कालिन्दी-हिलोल॥
याँहा याँहा तरल विलोकन परइ।
ताँहा ताँहा नील उत्पल बन भरइ॥
याँहा याँहा हेरिये मधुरिम हास।
ताँहा ताँहा कुन्द-कुसुम परकाश॥
गोविन्ददास कह मुगुधल कान।
चिनलहुँ राइ चिनइ नाहि जान॥

एवंक्रमे गोविन्ददासक पश्चात् कतिपय कवि अपन कृतिक माध्यम सँ मैथिलीक कलेवर केँ परिपुष्ट कयलनि।

कीर्त्तनियाँ नाटक मे वैष्णव भाव धारा

मिथिला मे विकसित मध्यकालीन नाट्य परम्परा केँ डॉ. जयकान्त मिश्र 'कीर्त्तनियाँ नाटक'क अभिधा सँ अलंकृत कयने छथि। कीर्त्तन वा गीतक प्रधानताक कारणें ई नाटकसभ कीर्त्तनियाँ कहौलक। मिथिला मे कीर्त्तनियाँ नाटकक चौदहम शताब्दी सँ ल' क' उन्नैसम शताब्दी तकक परम्परा पाओल जाइछ। धार्मिक भावना तथा मधुर गीतक कारणें ई नाटक सभ बड़ प्रख्यात भेल। कीर्त्तनियाँ नाटक सभ श्रीकृष्ण ओ शिव सम्बन्धी कथा पर आधारित अछि। अतः कतिपय कृष्ण सम्बन्धी नाटकक चर्चा एत' आवश्यक बुझना जाइछ।

कीर्त्तनियाँ नाट्य परम्परा मे ब्रह्म दत्तक 'रुक्मिणी हरण', कवि रमापतिक 'रुक्मिणी हरण' वा 'रुक्मिणी परिणय, उमापतिक 'पारिजात हरण', विद्यापतिक 'गोरक्ष विजय', गोविन्दक 'नल चरित नाटक', रामदासक 'आनन्द विजय', देवानन्दक 'उषाहरण', लाल कविक 'गौरी स्वयंवर' नन्दीपतिक 'कृष्ण-केलि-माला', गोकुलनन्दक 'मानचरित', शिवदत्तक 'गौरी-परिणय' तथा 'पारिजात हरण', रत्नपाणिक 'उषाहरण', श्रीकृष्ण गणकक 'श्रीकृष्ण-जन्म-रहस्य' आदिक नाम उल्लेख अछि।

उमापतिक 'पारिजात हरण'क रचना हरिवंश पुराणक आधार पर कयल गेल अछि। ''किछु विद्वानक मत छनि जे कीर्त्तनियाँ शैलीक नाटकक पुरष्कर्त्ता उमापति, भगवान कृष्णक मूर्तिक समक्ष कीर्त्तनक रूप मे एहि नाटकक गीत सभ केँ गबैत छलाह आ तदनुकूल, अभिनय करैत छलाह। अतः अपन धार्मिकता, गीतात्मकता एवं गीत

शैलीक कारणें एकरा कीर्त्तनियाँ नाटक कहल गेल आ एहि शैली पर लिखल गेल नाटक सभ केँ सेहो उक्त नाम सँ अभिहित कयल गेल।''[36]

'आनन्द विजय' नाटिकाक रचनाकार रामदास छथि जाहि मे कृष्ण एवं राधाक प्रणय लीलाक वर्णन अछि। एहि नाटिकाक एक पदक उदाहरण द्रष्टव्य अछि :

माधव विरहें वियोगिनि भेस।
देल वृषभानु दुलहि परिवेश।
मानस आकुल विकल शरीर।
मुख रुचि मलिन नयन ढरि नीर॥
थीर चेत नहि दीघ निसास।
आधि अधीनि आलिजन पास।
बिनु पुछलहुँ देअ उत्तर शयानि।
पुछलहुँ न कहए समुचित वानि।
भनय 'राम' रस बुझ अनुरूप।
कमलावति पति सुन्दर भूप॥

'रुक्मिणीपरिणय'क कर्त्ता रमापति उपाध्यायक पिताक नाम कृष्णपति झा छलनि तथा हुनक विवाह महाराज नरपति ठाकुरक पुत्र ठाकुर सिंहक पुत्री सँ भेलनि। ई नाटक छौ अंक मे विभाजित अछि तथा कथावस्तुक आधार हरिवंश अछि। नाटक मे मिथिलाक आचारक समावेश भेल अछि। एहि नाटक मे नारद केँ कलहवर्द्धक नाम सँ घटक रूप मे प्रस्तुत कयल गेल अछि—

हम अति घटक नृपति सबे जान।
सभ तहँ अधिक हमर अभिमान॥
घटना करिअ हमहि सबे ठाम।
फाअ एकओ ने होअ परिणाम॥
जकरा कथा रहिअ हमे ठाढ़।
तकरा हरि सँ विग्रह बाढ़॥
साखा मूल कुलिन अकुलीन।
सबक विवेचन हमर अधीन।
नृप शिशुपाल अपन हित जोहि।
कुमारक निकट पठाओल मोहि।
सुमति रमापति कौतुक गाव।
सिंह नरेन्द्र भूप बुझु भाव॥

अठारहम शताब्दीक वैष्णव कवि मे नन्दीपतिक स्थान बड़ विशिष्ट अछि।

हुनक पिताक नाम कृष्णपति छल। ओ मिथिलाक राजा माधव सिंहक समकालीन छलाह तथा 'श्रीकृष्ण केलिमाला' नामक एक गोट नाटकक रचना कयलनि जकर गीतक एक उदाहरण प्रस्तुत अछि—

माधव एहन दिवस भेल मोरा।
अपन करमफल हम उपभोगब, ताहि दोस कोन तोरा।
जाहि नगर चानन नहि चीन्हथि, अड़ड़ आदर कै रोपे॥
बिनु गुन बुझलें जनिक अनादर, उचित न ता पर कोपे॥
सगुन पुरुष निरगुन नलिन जौं, जीवन जड़ के देला।
जौं करमी फुल सबहु सराहिए, तौं कि कमलगुन गेला॥
थल गुन आन ठाम परगासल तें कि तनिक अभेला।
गिरि दरि ताहि तिमिर रहु तापर, रवि महिमा दिन भेला।
जनिक सरस मन ताहि कहिए गुन, पसु सिसु अबुध न बूझे।
नन्दीपति भन तें देखु दरपन, आन्हर काँ की सूझे॥

नन्दीपतिक अतिरिक्त अठारहम शताब्दीक वैष्णव साहित्यक सृजन मे खण्डवला कुलोद्भव महाराज प्रताप सिंहक नाम सेहो उल्लेखनीय अछि जे मोदनारायणक नाम सँ रचना करैत छलाह। हुनक रचल ग्रंथ 'राधागोविन्द संगीत सार' उपलब्ध अछि जाहि मे राधा आओर कृष्णक प्रणय लीलाक वर्णन कयल गेल अछि। उदाहरण द्रष्टव्य अछि—

जमुना तीर कदम तर रे, एक अचरज देखी।
तड़ित जलद जनु अवतरु हे, एक रूप विसेखी॥
राधा रूप मगनि भेलि हे, कर धै हरि आनी।
कतेक जतन कटु भाखिअ हे, नहि बोलथि सयानी॥
अनुपम लोचन खञ्जन हे, बाँकहु हरि हेरी।
बदन बसन अभिनत कै हे, मुसुकलि एक बेरी॥
कामकला गुन आगरि हे, बैसलि मुख फेरी।
रङ्क समान फिरथि हरि हे, जनि रतनक ढेरी॥
थिर नहि रहत मुगुध मन हे, जौबन जग साले।
आलिंगन रस पसरल हे, नवतरु पचमाने।
मोदनरायन मन दए हे, सेआ मे रस जाने॥

अठारहम शताब्दीक वैष्णव साहित्यक सृजन मे श्रीकान्त गणकक 'कृष्णजन्म रहस्य' तथा मनबोधक ''हरिवंश'' नितान्त महत्त्वपूर्ण अछि।

मनबोधक जन्मस्थान डॉ. ग्रियर्सन जमसम मानैत छथि तथा हुनका अनुसारे

हुनक मृत्यु सन 1788 इ. मे भेलनि।[37] प्रसिद्ध अछि जे मनबोध सम्पूर्ण हरिवंश कें मैथिली मे रूपान्तर कयलनि तथा हुनक राधाकृष्णक किछु गीत उपलब्ध अछि। मनबोध रचित हरिवंशक एक उदाहरण द्रष्टव्य अछि—

कमलासन सुत सिवक इयार। स्त्री भगवानक बहुत पियार॥
कलह विसारद नारद मूनि। ऐलाह सकल सुकाजक सूनि॥
छीर समुद्र तीर जे भेल। से सभ विहुँसि विहुँसि टुसि गेल॥
देबकि काँ जे आठम बाल। से हैत कंस तोहर जिब काल॥
सुमिरह कंस अकासक बानि। से दिन तोहर तुलायल आनि॥
ई सुनि कंस खड्ग लै ठाढ़। सिब सिब देबकि जिव परु गाढ़॥
अति निरबन्स कंस एह भाख। कटकगर तरु अङ्गना केओ राख॥
करजोरि बिनति करथि बसुदेव। जिबए दिअओ बरु बालक लेब॥
अपना जिब सँ तनय परान। से जग के थिक जे नहि जान॥
जदि संसए होअ जनमक काल। बान्हि धरिअ बरु बन्दी साल॥

मैथिलीक वैष्णव साहित्य मे रतिपति भगतक 'मैथिली गीतगोविन्द'क सेहो महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। एहि ग्रंथक पाण्डुलिपि हलधर सिंह दास द्वारा लिखल बिहार रिसर्च सोसाइटीक पुस्तकालय मे सुरक्षित अछि। एकर अतिरिक्त लक्ष्मीनाथ परमहंसक नाम अबैछ, जनिक जन्म सन् 1788 इ. मे सहरसा जिलाक परसरमा गाम मे भेल छल। हुनक रचल अनेक गीत उपलब्ध अछि। एतद् अतिरिक्त श्री रामगीतावली, श्रीकृष्णगीतावली, श्रीकृष्णरत्नावली, रामरत्नावली, गुरुचौबीसा, योग रत्नावली आदि हुनक प्रमुख ग्रंथ अछि। हुनक मैथिली पदक एक गोट नमूना प्रस्तुत अछि—

लखि साओन केर आओन।
वृन्दावन तरुवर सभ फूलल, लागए कुंज सोहावन॥
गुञ्जए अलि घन ननन-ननन, हनहन मत्त मधुर रस पाओन॥
चलय पवन सन-ननन-ननन-सुमनक वास लोभाओन॥
झननन झननन झिल्ली झनकए, दादुर दरद बढ़ाओन॥
पिहुआ पिअ पिअ पिअ पिअ पिअ कहि कोकिल कल कुहुकाओन॥
गोपी गोप संग लए मोहन, रास रचल मनभाओन।
तन-नन-ननन मुरली हेरए, सुनि मेघबा झरि लाओन।
झम्प झम्प झुकि झुकारे नारे नारे, झलकत गहन रिझाओन।
'लक्ष्मीपति' नाचए यदुनन्दन प्रेम प्रवाह वहाओन॥

मिथिलाक प्रख्यात संतशिरोमणि रघुवर गोसाईं, जनिकर जन्मभूमि दरभंगा जिलाक तरौनी ग्राम थिक, लक्ष्मीनाथ परमहंसहिक शिष्य छलाह। तरौनीक मध्यकालीन

संत विष्णुपुरी जाहि वैष्णव सिद्धान्तक प्रचार समस्त उत्तर पूर्वांचल मे कयलनि, ओहि सिद्धांत कें संत शिरोमणि रघुवर गोसाईं, कविवर चन्दा झा, महाकवि लालदास प्रभृत संत अक्षुण्ण राखि वैष्णव साहित्यक सृजन सँ वैष्णव भक्ति भावधारा कें मिथिला मे सुरक्षित रखलनि आओर मैथिली साहित्य कें समृद्ध बनौलनि।

संदर्भ

1. विष्णोंनु कं वीर्याणि प्र वोचे यः पार्थिवानि विममे रजांसि।
   यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः॥
   'यस्योरुषु विक्रमणेठवधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥'
   (ऋक. 1/154/2)
2. ऋग्वेद 7/99/2
3. ऋग्वेद 1/155/6
4. ऋग्वेद 1/154/1
5. ऋग्वेद 1/164/46
6. विष्णु पुराण 3/1/45
7. जले विष्णुः स्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके।
   ज्वालमालाकुले विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत्॥
   (विष्णुपञ्जरस्तोत्र 23)
   पुनश्चः ऊँईशा वास्यमिदङ् सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
   तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥
   (ईशावास्योपनिषद् 1/1)
8. श्रीहरिवंश 3/132/45
9. ऋग्वेद 10/90
10. "The Purusha-hymn describes the act of creation in the guise of a huge sacrifice performed by the gods, in which the central figure and victim is a primeval giant, a being named purusha, one of the names for man."—Regogin, 'Vedic India' p. 280
    "Macdonell observes similarly, "In the well-known hymn of man (Purusha Sukta), the gods are still the agents, but the material out of which the world is made consists of the body of a primeval giant Purusha (man), who being thousand-headed and thousand, footed, exents even beyond the earth, as he covers it. The fundamental idea of the world being created from the body of a giant is, indeed, very ancient, being met with in several primitive mythologis".—Macdonell, History of Sanskrit Literature, pp. 132-133.
11. ऋग्वेद 10/90/16
12. कृष्ण यजुर्वेद 3/5/2

13. महोपनिषद् 1/1
14. सुबालोपनिषद 6/1
15. नारायणोपनिषद् 1/1
16. मनुस्मृति 1/8/10
17. श्रीमद्भागवत 1/2/28-29
18. "In the Puranin times...these streams of religious thoughts, namely OM flowing from Vishnu the Vedic god, at its source, another from Narayana, the cosmic and philosophic god and the third from Vasudeva, the historical god mingled together decidedly, and they formed the later Vaishnavism, "— R.G Bhandarkar; Vaishnavism, Saivism and minor religious system p. 100
19. महाभारत शांतिपर्व; 339/11-12
20. शतपथ ब्राह्मण; 12/6/1
21. ऋग्वेद; 1/1/54
22. ऋग्वेद; 1/22/18
23. ऋग्वेद; 1/154/56
24. कृष्णयजुर्वेद; 3/5/2
25. वाचस्पतिमिश्र; द्वैतनिर्णय; पृ. 45
26. जे.ए. ग्रियर्सन; मैथिली क्रिष्टोमैथी; पृ. 36
27. डॉ. मुनीश्वर झा; तापसकवि विद्यापति; पृ. 142
28. नगेन्द्रनाथ गुप्त; वैष्णव महाजन पदावली; खण्ड 2, भूमिका; पृ. 2
29. राधाकृष्ण चौधरी; ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर, पृ. 96
30. डॉ. जयकान्त मिश्र; हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर; वोल्यूम-1; पृ. 200
31. राधाकृष्ण चौधरी; ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर, पृ. 81
32. डॉ. जयकान्त मिश्र; हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर; पृ. 199
33. नरेन्द्र नाथ दास; विद्यापति काव्यालोक; पृ. 156
34. डॉ. सुकुमार सेन; हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुली लिटरेचर; पृ. 105-139
35. डॉ. जयकान्त मिश्र; हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर; पृ. 234-239
36. डॉ. बजरंग वर्मा (सम्पा.); नवपारिजात मंगल; पृ. 42
37. जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल; वोल्यूम-51; खण्ड 1; पृ. 129

'सुभद्रा-हरण' मे बिम्ब-विधान

बाह्य-जगतक सौन्दर्यक उपयोग तँ न्यूनाधिक मात्रा मे प्रायः सभ लोक क' सकैत अछि, मुदा जीवनक ओहि बाह्य सौन्दर्य कैँ अन्तसक माधुर्य सँ परिपुष्ट क' ओकरा आर अधिक सुन्दर बनयबाक क्षमता मात्र कलाकारहि मे होइछ। ओ वस्तु अथवा भाव-जगतक सूक्ष्मतम अंशसभ कैँ प्रभाव व्यंजक बनयबाक हेतु गोचर रूपक विधान करैछ। ओकर परिणाम चित्र हो किंवा मूर्ति, संगीत हो किंवा कविता। तात्पर्य इँ जे कलाकारक हृदगत भाव इन्द्रियग्राह्य प्रत्यक्षीकरण द्वारा प्राणवंत भ' पबैत अछि। विभिन्न कला मे साहित्य आ ताहू मे काव्य, भावाव्यक्तिक सभ सँ सशक्त रूप मानल गेल अछि। कारण ई जे कवि, जटिल सँ जटिल भाव कैँ शब्द सदृश मूर्ति माध्यम मे बान्हि क', सहृदय सामाजिक केर मानस मे अलौकिक आनन्दक विधान करबा मे समर्थ होइछ। वाल्टर रैले एहि रसनिष्पत्तिक मूल 'शब्द'क मान्यता कैँ प्रतिपादित कयलनि अछि। ओ एहि शब्दक तीन गुण निर्धारित कयलनि अछि—नाद, अर्थ तथा चित्र; जकरा क्रमशः वर्ण-संगीत, अर्थ गौरव आ मूर्ति-विधायिनी शक्ति सँ चिर संपृक्त मानल गेल अछि। शब्दक यैह चित्रमयी शक्ति, काव्य मे बिम्ब (image)क सृष्टि कयने अछि।

काव्य बिंब : शब्दक व्युत्पत्ति, अर्थ एवं परिभाषा

आधुनिक भारतीय काव्य मे 'बिम्ब' (image) शब्द पश्चिमक देन थिक। बिम्बक पर्यायवाची इमेज (image) शब्दक व्युत्पत्ति लेटिनक 'इमेगो' (imago) अथवा 'इमेजिनम' (imaginum) सँ भेल, जे 'इमिटरी' (imitary) वा 'इमिटेट' (imitate) सँ सम्बद्ध अछि। 'इमिटेट' (imitate) के अनुकृति, तद्रूपता, सादृश्य-ग्रहण आदिक नायक मानल गेल अछि। आक्सफोर्ड शब्दकोश मे 'इमेज' (image) शब्दक अर्थ एहि प्रकारें देल गेल अछि—

(1) कोनो वस्तु अथवा व्यक्तिक बाह्य रूपक कृत्रिम अनुरूप अथवा कोनो बाह्य वस्तु वा व्यक्तिक चित्रण, प्रतिच्छाया, प्रतिमा, चित्र आदि। (2) कोनो वस्तुक

चक्षुष प्रतिमूर्ति। (3) कोनो वस्तुक मानसिक प्रतिमूर्ति। (4) प्रति-कृति, प्रतीक, प्रति बिम्ब। (5) चाक्षुष वा आलंकारिक चित्रण।[1]

विश्वकोषक अनुसार बिम्ब ओ चेतन स्मरण शक्ति थिक जे मूल उद्दीपनक अनुपस्थिति मे पूर्वानुभूतिक पूर्ण वा आंशिक प्रतिरूप प्रस्तुत करैछ।[2] तदनुरूपे हिंदी साहित्य कोश मे 'बिम्ब' शब्द केँ प्रस्तुत परिवेश, संवेदना आ प्रत्यक्षक अतिरिक्त व्यक्तिक मानस मे घटित अतीतक किंवा अस्तित्वहीन वा अघटित तत्व सभक असंख्य मानस-प्रतिमा सभक पर्याय मानल गेल अछि।[3]

जेना कि पूर्व मे कहि आयल छी जे काव्य बिम्ब पाश्चात्य काव्य-शास्त्रक देन थिक, अतः एकर काव्यगत व्याख्याक लेल कतिपय पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक, आलोचक तथा कविलोकनिक अभिमत जानि लेब अप्रासंगिक नहि होयत।

सौन्दर्य शास्त्री चार्ल्स बोदुइनक दृष्टि मे 'इमेज' शब्द ओहि मानसिक उद्बोधनक निर्देश करैछ जे तथ्यात्मक अनुभूतिक साम्य सँ निःसृस होइछ अथवा ओ कोनो प्रतीक वा काव्यात्मक तुलनाक निर्देश करैछ।[4] प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक युंग बिम्बक परिधि मे मानसक ओहि सक्रिय सर्जनात्मक कार्य सभ केँ समेटि लैछ जे अचेतनक अव्यवस्थित सामग्री केँ चित्रात्मक अभिव्यक्ति मे परिवर्तित क' लैछ।[5]

पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र मे काव्य-बिम्बक विशद विवेचन भेल अछि। अनेकहु बेर बिम्बक सम्बन्ध मे एहन उद्गार प्रकट भेल अछि जाहि सँ बिम्बक लक्षण वा स्वरूप-निर्धारण तँ नहि होइछ, मुदा बिम्बविषयक अर्थवाद अवश्य प्रगट होइछ। ब्लैक एकरहि विश्वास योग्य मानैत लिखलनि अछि—"प्रत्येक वस्तु जाहि पर विश्वास करब सम्भव हो—सत्यक बिम्ब थिक।"[6]

आलोचक वर्ग मे सी.डे. लेविस 'इमेज' केँ शब्दसभ मे विन्यस्त मानैत छथि जे हमर कल्पना द्वारा वास्तविकताक प्रतिरूप कें अत्यधिक सुस्पष्टता प्रदान करैछ।[7], पाश्चात्य साहित्यक वर्ड्सवर्थ[8], शैली[9], कोलरिज[10], ब्रेडले[11] आदि रोमानी कवि लोकनि बिम्बक सोझे व्याख्या नहि क', ओकर आन्तरिक शक्ति कल्पना पर विशेष जोर देलनि अछि।

हिन्दीक आलोचक वर्ग मे आ. रामचन्द्र शुक्लक मत उल्लेखनीय अछि। हुनका अनुसारे 'काव्य मे अर्थग्रहण मात्र सँ काज नहि चलैछ, बिम्ब ग्रहण अपेक्षित होइए। बिम्बग्रहण ओतहि भ' सकैछ, जत' कवि अपन सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा वस्तुसभक अंग-प्रत्यंग, वर्ण, आकृति तथा ओकर लग-पासक परिस्थितिक परस्पर संश्लिष्ट विवरण दैछ।'[12] पं. रामदहिन मिश्र सेहो बिम्ब केँ भाषाक चित्रधर्म मानैत छथि, जाहि सँ कोनो वस्तु वा घटनाक अनुकरण द्वारा वक्तव्य विषय केँ प्राञ्जल रूपें प्रकाशित कयल जाइछ।[13] डॉ. नगेन्द्रक दृष्टि मे बिम्ब एक प्रकारक चित्र थिक जे कोनो पदार्थक संग विभिन्न इन्द्रियक सन्निकर्ष सँ प्रमाताक चित्त मे उद्बुद्ध भ' जाइछ।[14] डॉ. गोविन्द

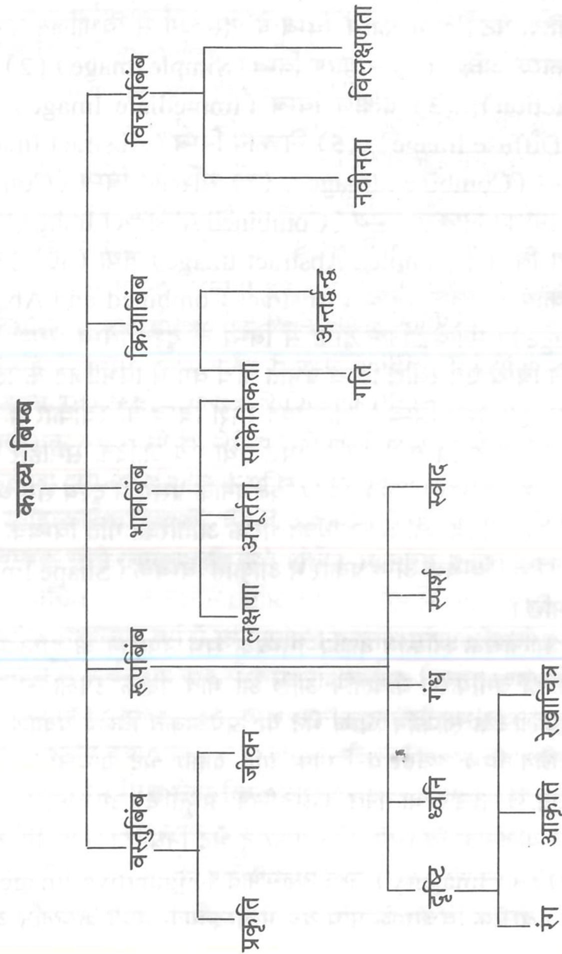
त्रिगुणायत मूर्त्त-विधान केँ कल्पनाक आवश्यक व्यापार मानैत छथि।[15] एही प्रकारें डॉ. बच्चन सिंह[16], राममूर्ति त्रिपाठी[17] प्रभृति आलोचकहुँ बिम्ब केँ शब्दक चित्रमयी शक्तिक परिणाम मानैत छथि।

काव्य बिम्बक वर्गीकरण

पाश्चात्य एवं पौर्वात्य आलोचक लोकनि काव्य-बिम्ब केँ अनेक वर्ग मे विभाजित कयलनि अछि। पाश्चात्य साहित्यकार लोकनि, काव्य-बिम्बक विशद विवेचन कयलो सन्ता एकर सुनिश्चित भेदक निर्धारण अद्यावधि नहि क' सकलाह अछि। प्रकारान्तर सँ ऐन्द्रिय भेदक संकेत अवश्य देल गेल अछि। स्केल्टन महोदय अपन पुस्तक 'दि पोएटिक पेटर्न'[18] मे काव्य-बिम्ब केँ दस वर्ग मे विभाजित कयलनि अछि जे निम्न प्रकारक अछि : (1) साधारण बिम्ब (Simple Image) (2) अमूर्त बिम्ब (Abstraction), (3) तत्क्षण बिम्ब (Immediate Image), (4) अस्पष्ट बिम्ब (Diffuse Image), (5) निष्काय बिम्ब (Abstract Image), (6) मिश्रित बिम्ब (Combined Image), (7) संश्लिष्ट बिम्ब (Complex Image), (8) मिश्रित निष्काय बिम्ब (Combined Abstract Image), (9) संश्लिष्ट निष्काय बिम्ब (Complex Abstract Image) तथा (10) निष्काय मिश्रित एवं निष्काय संश्लिष्ट बिम्ब (Abstract Combined and Abstract Complex Image)। मनोवैज्ञानिक दृष्टि सँ बिम्ब केँ दृश्य बिम्ब, स्पर्श बिम्ब, घ्राण बिम्ब, ध्वनि बिम्ब एवं स्वाद्य बिम्ब प्रभृति पाँच वर्ग मे विभाजित कयल गेल अछि। आइ.ए.रिचर्ड्स दृश्य बिम्बक अतिरिक्त स्पर्श बिम्ब केँ स्वीकार कयलनि अछि।[19] जार्ज हवैले दृश्य बिम्ब मे ध्वनि, स्पर्श तथा गंध आदिक समाहार कयल अछि।[20] वाल्टर पेटर सेहो वर्ड्सवर्थक बिम्ब विवेचनाक प्रसंग मे दृश्य संग ध्वनिक संकेत देलनि अछि।[21] सी.डे. लेविस उपर्युक्त भेदक अतिरिक्त गति विम्बक संकेत देलनि अछि।[22] काव्य-बिम्बक अन्य प्रकार मे आकृति बिम्बक (Shape Image) नाम उल्लेख्य अछि।

पाश्चात्य आलोचक लोकनि काव्य-बिम्बक सभ उपादान केँ दृष्टि मे नहि राखि ओकर एकांगी वर्गीकरण कयलनि अछि आ भाव पक्षक उपेक्षा क' देलनि अछि। पौर्वात्य आलोचक लोकनि बिम्ब भेद पर अपेक्षाकृत विशेष प्रकाश देलनि अछि। पं. रामदहिन मिश्र सर्वप्रथम चित्रक एहि प्रकार भेद कयलनि अछि—शब्दचित्र, रेखाचित्र, वस्तुचित्र, भावचित्र, संकेतचित्र, अमूर्तचित्र आ गतिचित्र।[23] डॉ. बच्चन सिंह चित्र योजनाक विवेचन करैत एकर दू भेद निर्धारित कयलनि अछि : लक्षित बिम्ब (Direct Imagery) तथा उपलक्षित (Figurative Imager)।[24] डॉ. नगेन्द्र काव्य-बिम्बक विचार केँ पाँच वर्ग मे बान्हवाक चेष्टा कयलनि अछि :

प्रथम वर्ग—चाक्षुष, ध्वनि, गंध, स्पर्श, रस; द्वितीय वर्ग—लक्षित तथा उपलक्षित; तृतीय वर्ग—सरल आ संश्लिष्ट; चतुर्थ वर्ग—खंडित आ समाकलित; पंचम वर्ग—वस्तु परक आ स्वच्छन्द। सम्पूर्ण अध्यधनक आधार पर हमरा विचार सँ काव्य बिम्ब केँ निम्न पाँच वर्ग मे विभाजित कयल जा सकैछ : (1) वस्तुबिम्ब, (2) रूपबिम्ब; (3) भावबिम्ब; (4) क्रियाबिम्ब; (5) विचार बिम्ब। सुविधाक लेल काव्य-बिम्बक वर्गीकरण हम अपन सुविचारित एवं स्व-निर्मित तालिका प्रस्तुत क' रहल छी जे निम्न प्रकारक अछि—



उपर्युक्त काव्य-बिम्बक वर्गीकरणक आधार पर आब हम 'सुभद्राहरण' मे काव्य बिम्बक अति संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत करबाक प्रयास क' रहल छी। आशा जे मैथिलीक सुधी समालोचक लोकनि हमर एहि धृष्टता केँ क्षमा करताह।

'सुभद्राहरण' मे बिम्ब-योजना

प्रत्येक कविक अभिव्यक्ति ओकर व्यक्तित्वक प्रकाशन होइछ आ मुख्यत: ओकर उपमा, रूपक, अप्रस्तुत योजना आदि ओकर अन्तर्तम केँ सोझे प्रकाशित क' ओकर रुचि, झुकाव आदिक संकेत करैछ। ई उपमासभ—ओकर आचार-विचार, संस्कार-सिद्धान्त आदिए टा केँ नहि प्रकट करैछ, प्रत्युत ओकर मनोविश्लेषण (Psycho-analysis) केँ सेहो प्रस्तुत करैछ। जाहि परिस्थिति मे कविक आविर्भाव भेल, जाहि संस्कार मे ओ पालित-पोषित भेलाह, जाहि समाज मे रहि ओ पैघ भेलाह, ओही सभक प्रकटीकरण हुनक बिम्बक माध्यम सँ भ' जाहछ आ एहि सँ इतर हम हुनक मनौवैज्ञानिक अध्ययनहुँ बिम्बक माध्यम सँ क' सकै छी। हुनक रुचि, झुकाव, संवेदना, हुनक आकर्षणक केन्द्र स्थल, हुनक हृदय पर पड़ल अमिट प्रभाव, हुनक हृदय मे उत्पन्न मनोमूर्ति, भाव आदि केँ मात्र हुनक बिम्बहि द्वारा जानल जा सकैछ।

साहित्य सर्जना मे बिम्ब-विधानक स्वरूप विशेषत: कवि वा लेखकक व्यक्तित्व पर निर्भर करैछ। रचनाक शैलीए टा सँ व्यक्तिक विषय मे अनुमान नहि कयल जा सकैछ, ओकर बिंब विधानहुँ सँ से काज कएल जा सकैछ। वाल्मीकि, कालिदास आ अश्वघोषक बिम्ब-विधान उत्कृष्ट होइतहु विशेष प्रकारक अछि। कबीर, सूर आ तुलसीक रचना मे सेहो ओएह बात भेटैछ। प्रसाद, पंत, निराला आ महादेवीक बिम्ब-विधान हुनक व्यक्तित्वेक अनुसार अपन ढंगक अछि।[25]

मुन्शी रघुनन्दन दासक बिम्ब-विधान सेहो हुनक काव्यहिक भाँति विशिष्ट प्रकारक अछि। हुनक सिद्धान्त, हुनक भाव एवं विचार, हुनक आस्था, हुनक संस्कार, हुनक रुचि—सभ हुनक बिम्ब सँ मुखरित भेल अछि। मैथिलीक आलोचक लोकनि हुनक काव्यक अन्य पक्षक तँ प्रशंसा कयलनि अछि, मुदा बिम्ब-योजना दिस किनकहु ध्यान नहि गेलनि अछि। हुनक बिम्ब-योजना मे रंग, वर्ण, गंध, रूप आदिक अति सुन्दर प्रयोग भेल अछि। संस्कृतक महाकवि वाण सदृश ओ शब्दक माध्यम सँ चित्र गढ़बा मे निष्णात छलाह। अलंकार, रस, भाव आदि काव्य-समृद्धिक तँ एत' कोनो अन्ते नहि बुझना जाइछ। अंग्रेजीक कवि ब्राउनिंगे जकाँ हुनक चित्र-ग्राहिणी शक्ति विलक्षण अछि।

'सुभद्राहरण' मे बहुतो ठाम एहन उक्तिसभ उपलब्ध होइछ जे मुनशीजीक मूर्तिमय (चित्रमय) वा बिम्बमय वर्णनक सार्थकताक साक्ष्य थिक। चित्राङ्गदाक जाहि

रूप सौन्दर्य पर पार्थ मोहित भेलाह, तकर वर्णन संक्षिप्त होइतहुँ बिम्बात्मक भ' उठल अछि :

तंह नारि मे मणिवर अंगूठी नृप-सुता चित्राङ्गदा
हो केने सहजहिं वश्य जौं ओ नयन गोचर हो कदा
जौं कहु निशा-मुख चढ़थि सौधहि नृपतिजा दुत देखिकै
शशि पूर्णिमा उगु मानु पुर जन मनहि अजगुत लेखिकै (1028)

कविक भाव, विचार, हुनक रुचि, संवेदना आदि सभ हुनक बिम्ब सभक अध्ययन सँ स्पष्ट भ' जाइछ। हुनक बिम्ब सभक संख्या बहुत अछि, कारण हुनक अभिव्यक्ति प्रणालीक प्रमुख माध्यम बिम्बे थिक। अनेकहु बिम्ब प्रकृति सँ, मानव जीवन सँ अप्रस्तुत रूप मे ग्रहण कयल गेल अछि। एकर अतिरिक्त प्रस्तुत वर्णन, मानवीकरण तथा मुहावरा ओ लोकोक्तिक माध्यमहुँ सँ अनेकानेक बिम्ब केँ मूर्तिमान कयल गेल अछि। अतः वर्गीकरणक आधार पर ओकर सभक विश्लेषण अपेक्षित अछि।

(1) वस्तु बिम्ब

'सुभद्राहरण' में प्रयुक्त बिम्ब सभक अध्ययन सर्वप्रथम ओहि बिम्ब सभ मे गृहीत विषयक आधार पर कयल जा सकैछ, अर्थात् जीवन आ जगतक कोन-कोन क्षेत्र सँ कतबा बिम्ब प्रस्तुत कयल गेल अछि, कोन दिस कविक रुचि विशेष रहल अछि आ ताहू मे ओ वस्तु केँ कतबा दृष्टिकोण सँ देखलनि अछि। कोन प्रकारें, कोन व्यापार हुनका सर्वाधिक आकृष्ट कयलक अछि आ ओ बिम्ब कोन रूप मे हुनक जीवन आ व्यक्तित्वक प्रकाश थिक। उपर्युक्त वस्तु सभ केँ हम दू वर्ग मे विभाजित क' सकै छी—(क) प्रकृति आ (ख) जीवन।

(क) प्रकृति—'सुभद्रा-हरण' मे प्रकृति सँ गृहीत बिम्बक संख्या अनेक अछि। ई बिम्ब, कविक जीवन मे प्रकृतिक स्थान, ओ महत्त्व आ ओकरा प्रतिए प्रेमक द्योतक थिक। एक दिस मनुष्यक सुख-दुःख, आराम-तकलीफ आदिक अभिव्यक्ति प्रकृतिक माध्यम सँ क' मानवीकरण (Presonification) कयल गेल अछि। ओतहि दोसर दिस प्रकृतिक शुद्ध रूप ओ मात्र प्राकृतिक रूप मे सेहो ओकर वर्णन कयल गेल अछि। सुविधाक लेल प्रकृति सँ गृहीत बिम्ब केँ हम जलीय, आकाशीय, वनस्थलीय, खनिज, समय आ ऋतु, जीव-जन्तु आदि वर्ग मे विभाजित क' सकै छी।

(2) जलीय बिम्ब

'सुभद्राहरण' मे जलीय बिम्बक संख्या अनगिनत अछि। एहि मे एक दिस समुद्र कवि केँ आकृष्ट कयने छथि, तँ दोसर दिस सर-सरिता। समुद्रक अथाह जल राशिक

अतिरिक्त समुद्रक विनाशकारी तरंगहु कवि केँ आकृष्ट कयलक अछि। 'पंच सरवर' मे जे ग्राहक संग अर्जुनक युद्ध भेल, ताहि काल सरोवरक जल तहिना उछल' लागल छल, जेना समुद्र-मंथनक समय दृश्य उपस्थित भेल छल। एहिठाम दृश्य-बिम्बक छटा दर्शनीय अछि :

युद्ध जल मे भेल बहुतो काल जैं
उदधि-मन्थन रूप उछाल तें (126, 8)

नदीक उपमा विशेष सुंदर नहि भ' पाओल अछि, कारण ओहि मे गंगा, कौशिकी, कमला आदि नदीक उल्लेख विशेषतः वर्णनक क्रम मे भेल अछि, किंवा रंग-वर्णनक सादृश्य देखयबाक लेल कयल गेल अछि यथा—

कमला तरंगिनि रूप कमला रक्षिणि छथि जाहि कै
कहु कोन कष्ट कदापि व्यापै जगत मे जन ताहि कै (98, 8)

नदी-वर्णन मे जत' गुण-साम्य आयल अछि ओत' बिम्ब सुन्दर भ' पाओल अछि। नदीक मात्र तरंगायितता आ उन्मत्त लहरि सभक स्वरूपहि पर कविक दृष्टि कन्द्रित भ' गेल अछि। गुण साम्यक आधार पर 'संगम'क बिम्ब अद्‌भुत अछि :

''अरुण डोरहिं मोतिक हार जे
मिलल भारति जाह्नवि धार से
तँह रुमावलि संगम भानुजा
रसिक हेतु प्रयाग सुकामदा'' (170, 11)

एकर अतिरिक्त कवि पंक, जल स्रोतहुक बिम्ब प्रस्तुत कयलनि अछि जे ध्वनि-बिम्ब केँ रूपायित करैछ (137, 10)।

आकाशीय बिम्ब

प्रकृति सँ गृहीत बिम्बसभ मे आकाशीय बिम्बहुँक संख्या अत्यधिक अछि। आकाशक उपकरण—सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, मेघ, बिजली, वर्षा, बसात—सभ कवि केँ प्रिय रहल अछि। सूर्यक बिम्ब कवि केँ विशेष प्रिय रहल अछि। एहि मे ओकर तेज, प्रकाश ओ भव्यता तँ अयबे कयल अछि, सूर्योदय, सूर्यास्त तथा अन्य व्यापारहुँ सँ कवि प्रभावित भेलाह अछि। सूर्यास्तक बिम्ब वर्ण साम्यक आधार पर प्रस्तुत कयल गेल अछि जे अतीव सुन्दर अछि :

अभिसारक अभिलाषे सन्ध्या पहिरे साड़ी लाल
आभूषण माणिक माँगक जे ज्योति जाग रह भाल (84, 7)

चन्द्रमा सेहो कविक बिम्बक प्रिय विषय रहल अछि। चन्द्रमाक बिम्ब कवि-

दृष्टिक व्यापकता केँ प्रकट करैछ। चन्द्रक उज्ज्वल रूप आ सौन्दर्यक धर्म केँ ग्रहण-ग्रस्त, कलंक रहित, कलंकयुत, चन्द्रमण्डक मध्य आ तरेगनक मध्य पूर्णिमाक चन्द्र आदि कतोक रूप मे चन्द्र-बिम्ब प्रस्तुत कयल गेल अछि। संध्याकालीन गगनक छत मे महान दीपक रूप मे चन्द्रमाक टांगल रहबाक कल्पना, चन्द्र ज्योत्स्ना केँ आकाश मे जालक रूप मे पसरल होयबाक कल्पना, कपूर, चानी आ दूधक वर्ण सँ इजोरियाक बिम्बण अत्भुत भेल अछि :

साँझ दीपित गगनक छत मे शशि-प्रभ दीपक वार
चकमक चहु दिश शीतल सुखकर ज्योतिक जाल पसार
× × ×
की शशि स्रवित सुधारस पसरल की करपूरमय भेल
की महि मढ़ल तबक चानी को दूधहिं धोअल गेल'' (86, 7)

कतहु मेघ गुण साम्यक आधार पर रूप-बिम्ब प्रस्तुत कयल गेल अछि (72, 6), तँ कतहुँ बिजलीक गतिमयता, चंचलता आदिक आधार पर, गति बिम्ब प्रस्तुत अछि (72, 6 : 74, 6)। आकाश गंगा आ नक्षत्रहु कविक तीक्ष्ण दृष्टि सँ नहि बाँचि पाओल अछि :

गगनहि नखत ज्योति नहि थिक ई बूझिअ कै अनुमान
नभ गंगा मे देव दारिका दीपावलि कर दान (85, 7)

(3) वनस्थलीय बिम्ब

वनस्थलीय बिम्ब कविक सूक्ष्म प्रकृति-निरीक्षणक परिचायक थिक। एहि मे फूल, पात, वृक्ष, लता आदिक विभिन्न व्यापार आ विभिन्न अवस्थाक चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि। कमलक उपमा सुभद्राक विभिन्न अंग सँ द'क' अद्भुत रूप-बिम्ब प्रस्तुत कयल गेल अछि :

कमल कर पद कमल दृग युग कमल कलिका उरज राजै
कमल सौं सरसे वदन छवि कांति कमलहुं दिव्य भ्राजै
ठाढ़ि तट पर वदन पोछथि रूप अनुपम पार्थ पेखल
कमल वन सौं अपर कमल प्रगटु ई निज मनहि पेखल'' (140, 10)

पुष्प सँ सम्बन्धित बिम्ब सभ मे कवि पुष्प सभहिक नामावलिए प्रस्तुत कयलनि अछि, ओही गुण, वर्ण आदि दिस हुनक दृष्टि नहि जा सकल अछि। एहि पुष्प सभ मे पलास, चम्पा, तगर, जवा, सेबन्ती, पाटल, केसरि, करबीर, वकुल, किंशुक, कदम्ब, कर्णिकार, नागकेसर, मौलश्री, बेली, बेला, भालश्री, पाड़री, नेबारी आदिक नाम प्रमुख अछि। एक उदाहरण द्रष्टव्य अछि :

कतहु, तगर, पलास, चम्पा, जपा सेबन्तो विराजै
कतहुं पाटल पटल पुष्पित सुरभि शोभा-सीम भाजै
कतहु केसरि कुन्द कुरुषक कुसुम कुब्जक पुंज-पुंजै
कतहु करबीरक कतारे केतकी कचनार कुंजै (138, 16)

(4) पर्वतीय बिम्ब

पर्वत, शिखर, कन्दरा, घाटी, पत्थर आदि दिस कविक ध्यान नहि गेल अछि। संभवत: पार्वत्य-प्रदेशक जानकारी हुनका कम छलनि। पर्वतीय बिम्ब सभ मे ओ विशेषत: पहाड़हिक बिम्बणा कयलनि अछि। पर्वतराज हिमालयक वैभव पर मुग्ध भ' कविक वाणी बिम्बक आकार ग्रहण क' लेलक अछि :

हिमगिरिक वैभव देखि अर्जुन मुग्ध अतिशय भै गेला
रहि ठाढि एक टक निरखि शोभा से परम विस्मित भेला
युग युग लसित की तुंग ब्याजहि भारतक कीरति पटी
की शैलराट विराट की हिमजूट शोभित घुर्ज्जटी (16, 8)

पर्वत-गुहा सँ नि:सृस सिंह-गर्जना द्वारा कवि ध्वनि-बिम्बक अद्भुत चमत्कार उत्पन्न कयलनि अछि। एहन सन भासित होइछ मानू ई सिंह-गर्जना नहि अछि, ई तँ गिरिवर हिमालय, विंध्य पर्वत सँ बतकही क' रहलाह अछि—

केहरि कतहु गरजे गुहा मे गुञ्ज दश दिश भरै
प्रतिशब्द ततछन मध्य अद्भुत सबहुं काँ जे सुनिपड़ै
करु तर्क जन जन विविध विधि सौं पार्थ कहु थीके सही
गिरिवर हिमालय कै रहल छथि विन्ध्य गिरि सौं बतकही (97, 8)

(5) खनीज बिम्ब

मुंशी जी के विभिन्न खनिज वस्तुक प्रतिए विशेष आग्रह रहलनि गछि। सोना, रतन, मोती, माणिक्य आदिक रूप-बिम्ब, लक्षित बिम्ब (direct-imagery) केँ प्रस्तुत कयल गेल अछि। अर्जुन आ सुभद्राक जोड़ी केँ मणि-कांचन-संयोग कहल गेल अछि—

वीर अर्जुन वर सुभद्रा जौं अँह सहज पावी
योग मणि-काञ्चन करब मे कहु किअेक विलम्ब लावी (145, 10)

सकल गुण आगरि कन्याक योग्य वर तहिना आवश्यक अछि जेना शुद्ध सोनाक औंठी मे अनुपम मणिक संयोग। गुण साम्यक आधार पर रूप बिम्ब प्रस्तुत कयल गेल अछि—

सकल गुण आगरि उजागरि योग्य वर कैं देमक चाही
मणि अनुपम शुद्ध स्वर्णक अंगुरीयक जड़क चाही (149, 10)

मोतीक उल्लेख ओकर निर्मलताक लेल भेल अछि। लाल डोरी मे गांथल मोतीक हारक सदृश्य भारती (सरस्वती) आ गंगाक मिलन सँ क', रंगबिम्बक योजना कयल गेल अछि :

अरुण डोरहि मोतिक हार जे
मिलल भारति जह्नवि धार से

(6) समय आ मौसम

एहि सन्दर्भ मे कविक 'षडत्रृतुवर्णन' अतीव स्वाभाविक, रमणीय आ चित्ताकर्षक अछि। ओना तँ छओ ऋतुक वर्णन परम्परानुसार कयल गेल अछि मुदा ताहू मे वसन्त, वर्षा, शरद, फागुन आदि कवि कैं विशेष आकृष्ट कयलक अछि। होरीक वर्णन मे डम्फक स्वर, अबीरक रंग तथा पिचकारी सँ बहराइत रंगीन जलक माध्यम सँ ध्वनिबिम्ब (Sound imagery) तथा रंगबिम्ब प्रत्यक्ष भ' उठल अछि :

डंफ रव करताले गीत अश्लील गावै
मन मतल मतंगे ले अबीरो उड़ावै
भरि-भरि पिचकारी रंग दै-दै भिजावै
जन धनिक-गरीबो भेद पर्वे मेटावै (79, 6)

हेमन्तक वर्णन मे थर-थर कँपैत शरीरक माध्यम सँ कवि लक्षित बिम्ब (direct imagery) कैं प्रस्तुत करबा मे पूर्ण सफल भेलाह अछि :

तन थर-थर कापै पंथ जैवो ने भावै
वपु सकुचित जंघा बीच मे माथ लावै
श्रवण सुनब शोरे हीम शीत प्रभावे
निरधनक युवा हा! वृद्ध रूपें लखावे (79, 6)

(7) जीव-जन्तु

पशु-पक्षी तथा ओकर विभिन्न व्यापारक प्रयोग अप्रस्तुत रूप मे भेल अछि। पशु वर्ग मे हाथी, सिंह, घोड़ा, मृग, मृगशावक, गाय, गैंड़ा; पक्षी वर्ग मे कोयल, खंजन, चकोर, चकवा, कपोत, क्रौंच आदि तथा जन्तु वर्ग मे साँप, माछ, भ्रमर, सीप आदिक बिम्ब यत्र-तत्र उपलब्ध होइछ। सिंह आ विलाड़िक माध्यम सँ संश्लिष्ट बिम्ब (Complex image)क योजना दर्शनीय अछि।

कहल सूतल सिंहहिंक जनु नोचल अछि गात
यत्न सौं पोसल बिलाड़क थीक ई उत्पात (180, 11)

एवंविधि समग्र रूप मे प्रकृति सँ गृहीत ई सभ बिम्ब कविक अध्ययनक विशालता, 'अन्तर्दृष्टिक तीक्ष्णता आ निरीक्षण-सूक्ष्मता कैं व्यक्त करैछ। प्रकृतिक विभिन्न क्षेत्र आ विभिन्न उपकरण हुनक हृदयक व्यापकता आ उदारताक परिचायक थिक। एहि मे जाति धर्म सभहिक साम्य देखाओल गेल अछि। ओ परम्परागत सेहो अछि आ कविक आत्म दृष्टिए नवीन सेहो। एहि प्रकारे 'सुभद्राहरण' मे जे बिम्ब योजना प्रस्तुत कयल गेल अछि, से कविकअप्रतिम काव्य कौशलक परिचायक थिक। संगहि ई विशेष अध्ययन आ अनुसन्धानक अपेक्षा रखैछ।

सन्दर्भ

1. (i) an artificial imitation or representation of the external form of any object, esp. of a person, alikeness, portait, picture; (ii) An optical appearance; (iii) A mental representation of something; (iv) A counterpart copy, symbol; (v) A vivid or graphic description.
   —Oxford Dictionary, p. 985.
2. Images are conscious memories which reproduce a previous perception in whole or in part, in the absence of the original stimulus to the perception.
   —Encyclopaedia Britanica, vol. XII, p. 103.
3. हिन्दी साहित्य कोश, पृ. 514
4. The word 'image' is sometimes used to denote any kind of evocation arsing in the mind and rescmbling a preception of reality! ...Some time it is used to devote a symbol, a Poetical comparision.
   —Charles Boudoin, Sychonanalysis & Aesthetics, p. 28
5. The active creative work of the psyche commutes the chaos of unconscious contents into pictorialised manifestations.
   —Dr. Jacoby—The Psychology of C.G. Jung. p. 56
6. Everything possible to be believed is an image of truth.
   —Blake; the poetic Image, C. Day Lewis.
7. It is a picture made out of words...if conveys to our imagination more than the accurate reflection of an external reality.
   —C. Day Lewis; The Poetic image, p. 18
8. ...the faculty by which the poet conceives and produces images.
   —Wordsworth, English Literary Essays, p. 16
9. Poetry, in a general sense, may be defined to be expression of imagination.
   —Shelly—A Defence of Poetry, p. 161

10. ...magical power. This power reveals itself in the idea with the image, etc.
—Coleridge—Biographia Literaria, p. 174
11. Poetry...springs from the creative impulse of a vague imaginative mass pressing for development and definition.
—Bradley—Oxford Lectures on poetry, p. 23
12. आ. रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि, पृ. 145, 147
13. पं. रामदहिन मिश्र—काव्य में अप्रस्तुत योजना, पृ. 145
14. डॉ. नगेन्द्र—हिन्दी ध्वन्यालोक, पृ. 45
15. डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत—शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, पृ. 88
16. डॉ. बच्चन सिंह—रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, पृ. 383
17. राममूर्ति त्रिपाठी—लक्षणा और उसका प्रकार, पृ. 567
18. The Poetic Pattern; Robin Skelton, p. 90-91
19. I.A. Richards : principles of Literary Criticism, p. 152
20. George Whalley : Poetic Process, p. 155
21. Walter pater : Appriciations, p. 45
22. C. Day Lewis : The poetic Image, p. 45
23. पं. रामदहिन मिश्र—काव्य में अप्रस्तुत योजना, पृ. 48-49
24. डॉ. बच्चन सिंह—रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, पृ. 384
25. हिन्दी साहित्य कोष, पृ. 514

रामकाव्यक परम्परा आ मैथिली रामायण

रामायण मात्र रामक कथा नहि थिक, ओ रामक अयन थिक, मात्र रामहि टाक नहि, अपितु रामा (सीता)क सेहो। दुहुक समन्वित अयने रामायण थिक। राम ओ रामा मे रमणीयता अछि, तँ अयन मे गतिशीलता। तें, रामायणक रमणीयता गतिशील अछि। ओ रमणीय आ करुणाकलित दुनू अछि। राम प्रेमक प्रतीक छथि तँ सीता करुणाक मूर्ति। मानव-जीवनक एही दू महामूल्य केँ आधार बना क' वाल्मीकि अपन रामायणक रचना कएने छथि जाहि मे पृथ्वी आ आकाश, गन्ध आ माधुर्य तथा सत्य आ सौन्दर्यक मंजुल समन्वय कथा केँ अयनक गौरव प्रदान करैत अछि। जीयब आ आनो केँ जीअए देब (Live and let others live), इएह रामायणीय संस्कृतिक मूलमन्त्र थिक आ एही मे रामायणक लोकप्रियता अनुस्यूत अछि।

राम आ सीता, एही दू आलोक-पुंजक आभा सँ प्रतिभासित कृति थिक, रामायण। समता, ममता आ समरसता पर आधृत जीवनक मार्मिक चित्रण आर्षकविक अनर्घ सृष्टिक बीज थिक। रामायण मे ज्ञानक प्रकाश, धर्म केँ आलोक-प्रदान करैछ एवं विविधि रामायण ज्ञान-पीठ थिक; कर्म आ भक्तिक मन्दाकिनी थिक। कखनहुँ ओ शब्दक रूप मे व्यक्त होइछ, तँ कखनहु विचारक रूप मे। कखनहु संज्ञा बनि क' सन्देशक सार सुनबैत अछि, कखनहु प्रज्ञा बनि क' पण्डित केँ प्रबुद्ध बनबैत अछि तँ कखनहुँ विद्या बनि क' विज्ञ केँ विद्वान् बनबैत अछि। कखनहुँ कर्मक भावना जागृत करैत अछि आ कखनहुँ धर्मक रहस्य खोलैत अछि, मुक्तिक मार्ग देखबैत अछि, भक्तिक गीत सुनबैत अछि। सुतरां रामायण ज्ञान-संसारक सर्वस्व थिक, समस्त साधनाक सार थिक।

रामायण मात्र कथा नहि थिक, ओ अयन थिक। अयन मे मात्र कथे नहि होइछ, मात्र घटने नहि होइछ, मात्र चरित्र-चित्रणे नहि होइछ, मात्र चमत्कार, रस, अलंकार, ध्वनि, गुण इत्यादिए नहि होइछ, उक्त सभ किछु रहि सकैछ, किन्तु एतद्रिक्त आओरो बहुत किछु बात होइछ जे 'अयन'क विस्तृत परिधि मे ग्रंथित रहैछ। वस्तुतः 'अयन' गतिशीलताक द्योतक थिक आ ई अयन समान होएबाक कारणें रमणीयताक सेहो

सूचक थिक। 'राम' शब्द मे जे रमणीयता अछि आ 'अयन' शब्द मे जे गतिशीलता अछि—तकरहि मणि-कांचन-संयोग रामायण थिक। तें यथार्थे कहल गेल अछि :

नास्ति गंगासमं तीर्थं नास्ति मातृसमो गुरुः।
नास्ति विष्णुसमो देवः नास्ति रामायणात् परम्॥[1]

रामक शाब्दिक अर्थ अछि, जाहि मे सभ देवता रमण करथि अर्थात् परब्रह्म, परमशक्ति। गीता मे श्रीकृष्णक उक्ति छनि—'रामः शस्त्र भृतामहम्'—शस्त्रधारी लोकनि मे हम राम थिकहुँ। श्रीकृष्णक ई उक्ति वस्तुतः राम केँ परोत्पर परमात्मा पुरुषोत्तम रूपहि केँ व्यंजित करैछ। ओ गीताक 'अविभक्त' विभक्तेषु छथि, आत्मा राम छथि। राम घट-घट व्यापक आ 'सोइ सच्चिदानन्द धन रामा' छथि। किन्तु गीता मे नयनाभिराम रामक ओहि स्वरूप केँ विभूतियोग मे समाविष्ट कएल गेल अछि जे 'धर्मवेदं च निष्ठितः' सँ प्रतिष्ठित छथि आ तें शस्त्राधारी छथि, कारण सम्पूर्ण संसारक संरक्षण करब, मर्यादाक पालन करब, हुनक अभिप्रेत छनि। एही हेतु हुनक अवतारहु भेल छल : 'विप्र धेनु सुर सन्त हित लिन्ह मनुज अवतारा'।

शस्त्रिता रामक अपन वैशिष्ट्य थिकनि, जे अनुपम आ अनन्य अछि। महर्षि विश्वामित्र, ब्रह्मर्षि वसिष्ठ ओ महामुनि अगस्त्य दिव्य अस्त्र प्रदान क' हुनक शस्त्रधारिता केँ अपूर्व बनौने छलाह। महर्षि वाल्मीकि 'सत्यः सत्यपराक्रमः' आ 'द्विशर नाभिसंधत्ते' कहि हुनक अतुलनीय पराक्रम ओ अमोघ शस्त्रिताक उल्लेख कएने छथि। वस्तुतः राम धनुर्वेदविद लोकनि मे सर्वश्रेष्ठ छलाह। महारथी सभ मे सेहो शीर्षस्थ छलाह। ओ आक्रमण आ भक्तरक्षण मे दुर्धर्ष आ अग्रगण्य छलाह। ओ परोत्कर्षकामी आ सहिष्णु छलाह। ओ 'वज्रादपि कठोर' छलाह तँ 'कुसुमादपि मृदु' सेहो छलाह। हुनक अनुपमशक्ति शील आ सौन्दर्य सँ सम्पुटित छल। विश्व साहित्यक कोनहु नायक मे सम्भवतः एतबा गुणक समायोजन नहि भेल अछि, कोनहुँ व्यक्ति विशेष मे एतबा वैशिष्ट्यक विनियोजन नहि पाओल जाइछ। तें ओ विश्व साहित्य मे स्पृहणीय छथि, वरेण्य छथि।

भारत मे रामकाव्य

वैदिक साहित्य मे राम भावनाक स्वरूप विधान उपलब्ध अछि, किन्तु ओतए रामक अवतारी स्वरूपक उल्लेख नहि अछि। ओतए रामक वर्णन एक असुरक रूप मे कएल गेल अछि।[2]

ब्राह्मण मे जाहि रामक वर्णन कएल गेल अछि, ओ श्यापर्ण कुलक ब्राह्मण छलाह। हुनका जनमेजयक समकालीन सेहो कहल गेल अछि। शतपथ ब्राह्मण मे सेहो रामक उल्लेख अछि। एतए रामक परिचय औपतास्विनक पुत्रक रूप मे देल

गेल अछि। शतपथ ब्राह्मण मे वर्णित राम याज्ञवल्क्यक समकालीन मानल गेलाह अछि। जेमनीय उपनिषद ब्राह्मणक अनुसार राम शंग शास्यायनि आत्रेयक शिष्य मानल गेलाह अछि।

वैदिक साहित्यक पश्चात् सम्भवतः षष्ठ शताब्दी ई. पू. मे ईक्ष्वाकु वंशक सूत्र द्वारा[3] (वाल्मीकि रामायण, 1/5/3) ऐतिहासिक घटनाक आधार पर राम कथा विषयक गाथा सभक रचना प्रारम्भ भ' गेल छल, जे कोशल प्रदेशहि धरि सीमित नहि रहि, सम्पूर्ण उत्तर भारत मे पसरए लागल। ओहि समय मे आदिकवि वाल्मीकिए एहि आख्यान काव्यक आधार पर एक विस्तृत प्रबन्ध काव्यक रचना कएल जाहि मे रामक निर्वासन सँ ल' क' अयोध्या मे हुनक प्रत्यागमन धरिक कथावस्तुक वर्णन छल। आदिकाव्य मानव काव्य अछि, ओहि मे राम एक आदर्श मानव ओ वीर क्षत्रियक रूप मे प्रस्तुत कएल गेल छलाह।

एवंविधि वाल्मीकि रामायण प्राचीनतम उपलब्ध रामकाव्य थिक। भारतीय साहित्य मे रामकथाक एक सुनिश्चित ओ सुनियोजित पृष्ठभूमि आदिकवि द्वारा प्रस्ताविक कएल गेल अछि। रामायणक रचना कहिया भेल, एकर निर्धारण सम्भव नहि भ' सकल अछि। विद्वान लोकनिक ई धारणा छनि जे एकर प्रणयन एगारम शताब्दी ई.पू. मे भेल छल। परन्तु उपलब्ध तथ्य सँ ई निष्कर्ष बहराइछ जे रामायणक रचना महाभारत सँ पूर्व मे भेल अछि। महाभारत मे रामायणक पात्र सभ तँ भेटैत अछि, मुदा रामायण मे महाभारतक पात्र सभक चर्चा कोनहुँ रूप मे नहि भेल अछि।

पौराणिक ग्रन्थ सभ मे रामकथाक स्वरूप विभिन्न अवतारक रूप मे परिगृहीत अछि। एहि मे राम मर्यादा पुरुषोत्तम सँ अधिक ईश्वरत्व-गुण-सम्पन्न दिव्यादिदिव्य नायकक रूप मे परिगणित भेल छथि। एवंविधि पौराणिक काल मे आबि क' रामाराधनाक परम्पराक सूत्रपात भेल अछि। परवर्ती काल मे रामकथा मे परिवर्तित स्वरूप ओ अभिनव विषयक सन्निवेश भेल, परन्तु रामक लोकसंग्रही रूप सर्वत्र अक्षुण्ण रहल।

बौद्ध साहित्य मे सेहो रामकाव्यक विकास यात्रा परिलक्षित होइछ। बौद्ध लोकनि ईसवी सनक कएक शताब्दी पूर्वहि राम केँ जातक साहित्यक अन्तर्गत परिगणित क' लेने छलाह। एहि सन्दर्भक महत्त्वपूर्ण कृति थिक दशरथ जातक जाहि मे गौतम बुद्ध केँ रामक रूप मे चित्रित कएल गेल अछि। अनामक जातकम् मे सेहो रामकथाक वर्णन अछि।

जैन साहित्य मे रामकथाक लोकप्रियता कएक शताब्दी धरि अक्षुण्ण रहल। एहि साहित्य मे रामकथा सँ सम्बन्धित प्रथम रचना थिक प्राकृत मे स्वयंभूक 'पउम चरिउ' (3 शताब्दी ई.)। मुदा ध्यातव्य जे जैन साहित्य मे उपलब्ध रामकथा वैदिक

सनातन परम्पराक रामकथा सँ सर्वथा भिन्न अछि, तदर्थ एतय मात्र ओकर नामोल्लेख कएल गेल अछि।

रामकथाक अग्रिम सूत्र भक्ति सम्प्रदायक उद्भव ओ विकास सँ सम्बद्ध अछि। कर्मकाण्ड, ब्राह्मणधर्म, बौद्धधर्म ओ जैनधर्मक प्रतिक्रियाक कारणें भक्ति मार्ग केँ व्यापक जन-समर्थन भेटलै ओ भगवानक विविध अवतारक पूजन-अर्चन-परम्पराक सूत्रपात भेल। एही क्रम मे रामभक्ति-धाराक विकास भेल। अनेको रामायण लिखाएल।

अद्भुत रामायणक कथा शाक्त सम्प्रदाय सँ प्रभावित अछि। एहि मे विशेष रूपें सीताक अद्भुत चरित्रक वर्णन कएल गेल अछि। सहस्रमुख रावण सँ युद्ध मे श्रीरामचन्द्रक मूर्च्छा तथा भगवती सीता द्वारा सहस्रमुख रावणक वध, एहि ग्रन्थक प्रमुख कथा थिक। शक्तिक महत्ताक प्रतिपादन अद्भुत रामायणक वैशिष्ट्य अछि।

आनन्द रामायणक प्रतिपाद्य सेहो रामभक्ति अछि। मुदा, एहि मे अनेक मौलिक उद्भावना परिलक्षित होइछ। विभिन्न रामायण-मध्य आनन्द रामायण केँ महनीय स्थान उपलब्ध अछि। योगवासिष्ट मे वसिष्ठ-रामचन्द्रक संवाद वर्णित अछि जाहि मे गुरु वसिष्ठ द्वारा राम केँ मोक्ष-प्राप्तिक साधन बाताओल गेल अछि। वाल्मिकीय योगवासिष्ठ एक विशाल ग्रन्थ अछि। एकरा योगवासिष्ठ रामायण, आर्ष रामायण, वासिष्ठ रामायण, ज्ञान वासिष्ठ ओ वासिष्ठ नाम सँ सेहो अभिहित कएल जाइछ।

एहि प्रकारें विभिन्न रामायणक रचनाक परम्परा रहल अछि जाहि मे रामायणक कथा केँ आधार रूप मे परिगृहीत क' ओहि मे साम्प्रदायिक वैशिष्ट्यक पुट द' प्रस्तुत कएल गेल अछि।

परवर्ती काल मे संस्कृत आ प्राकृत भाषाक विभिन्न ललित साहित्यक आधार रामकथा रहल अछि। एहि ग्रन्थ सभक कथानक मे परम्परा प्राप्त कथानक-स्वरूपहिक संरक्षण प्राप्त होइछ। मुदा एहि मे भक्ति आ अवतारक अनुचेतनाक स्थान पर शृंगार भावनाक स्वरूप-संस्थापन केँ प्रश्रय देल गेल अछि। कालिदास कृत रघुवंश मे रघुकुलक विभिन्न राजाक वृत्तान्त-वर्णन-क्रम मे रामोपाख्यानक सेहो वर्णन आएल अछि। महाराष्ट्र प्राकृत मे रचित रावण वध अथवा सेतुबन्ध मे राक्षसिनी-राक्षस सभक सम्भोग-वर्णन केँ विशिष्टता प्रदान कएल गेल अछि। कुमारदास कृत जानकीकरण मे दशरथ आ हुनक पत्नी लोकनिक बिहार, जल-क्रीड़ा इत्यादिक वर्णन, राम आ सीताक पूर्वराग ओ सम्भोगक वर्णन कएल गेल अछि। एही प्रकारें क्षेमेन्द्र रचित रामायणमंजरी तथा दशावतार मे रामावतारक नवीन स्वरूपक वर्णन अछि। एवं विधि एहि सभ ग्रन्थक रचना रामकाव्य केँ उपजीव्य बना क' कएल गेल अछि।

एतद्रिक्त संस्कृत साहित्य मे राम-चरित्रक आधार पर अनेक नाटकोक रचना भेल अछि। एहि प्रकारक नाटक मे भास कृत 'प्रतिभा' आ 'अभिषेक', महाकवि

भवभूतिकृत 'उत्तर रामचरित', 'महावीर चरित' एवं 'बालरामायण', जयदेव कृत 'प्रसन्न राघव', मुरारि कृत 'अनर्घ रावण' इत्यादि उल्लेखनीय कृति थिक।

महाकाव्य ओ नाटकक अतिरिक्त संस्कृत साहित्यक विभिन्न विधा मे सेहो अनेकानेक एहन रचना उपलब्ध होइत अछि जाहि मे रामचरितक उल्लेख अल्पाधिक मात्रा मे पाओल जाइछ। एहि कोटिक किछु प्रमुख रचना सभ थिक, दिगम्बर जैन धनञ्जय कृत राघवपाण्डवीय, कविराज माधव भट्ट कृत राघवपाण्डवीय, हरदत्त सूरिकृत राघवनैषधीय, चिदम्बर कृत यादवराघवीय, कृष्णामोहन कृत रामलीलामृत, आन्ध्रप्रदेश निवासी वेंकटेश कृत चित्रबन्धरामायण, हंससन्देश वा हंसदूत, भ्रमरदूत; वासुदेव कृत भ्रमर सन्देश, कपिदूत, कोकिल सन्देश, कृष्णचन्द्र तर्कालंकार कृत चन्द्रदूत, रामगीतगोविन्द, गीताराघव, जानकीगीता, संगीत रघुनन्दन, क्षेमेन्द्र कृत वृहत्कथा मंजरी, सोमदेव कृत कथासरित्सागर, विदर्भराज भोज कृत चम्पू रामायण, उत्तर रामायण चम्पू इत्यादि[3]।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा परिवार तथा द्रविड़ भाषा परिवार मे सेहो रामकाव्य रचनाक अविच्छिन्न परम्परा अछि। द्रविड़ भाषा परिवार मे कवि कम्ब कृत तमिलरामायण अत्यन्त प्रसिद्ध अछि। द्रविड़ परिवारक समृद्ध ओ लालित्यपूर्ण भाषा तेलुगु मे श्रीराम कथा एक प्रतिनिधि साहित्य थिक, जाहि मे छोट-पैघ प्रायः तीन-चारि सए रचना उपलब्ध अछि। 'रंगनाथ रामायण' तेलुगु भाषाक एक अत्यंत लोकप्रिय रामायण थिक जकर रचना श्री गोनबुद्धराज देशज छन्द मे कएने छथि। एहि रामायण मे एक स्थल पर रावण केँ भगवान श्रीराम द्वारा मृत्यु प्राप्त करबाक लेल उताहुल देखाओल गेल अछि।

मलयालम भाषा मे सेहो अनेक रामायण लिखल गेल अछि जाहि मे रामचरितम, कण्णश रामायण तथा अध्यात्म रामायणक नाम उल्लेखनीय अछि। एहू मे अध्यात्म रामायण मलयालम भाषाक सर्वाधिक लोकप्रिय रामायण अछि आ ई अध्यात्म रामायणक अनुवाद थिक।

कन्नड़ भाषा मे रचित रामायण अछि—तोखे रामायण, मैराण कालम इत्यादि। एहि मे तोखे रामायण अत्यन्त लोकप्रिय अछि जकर रचनाकार छथि महाकवि वत्तलेश्वर। रामायणक रचना करबाक कारणें वत्तलेश्वर केँ कुमार वाल्मीकि कहल जाइछ।

आर्य भाषा परिवारक भाषा मे सेहो रामकाव्य अत्यन्त लोकप्रिय रहल अछि एवं प्रभूत मात्रा मे रामायणक रचना भेल अछि। कश्मीरी भाषा मे 'रामावतार चरित' नामक रामायणक रचना भेल अछि, जकर कृतिकार छथि प्रकाशराम। डॉ. ग्रियर्सन हिनका दिवाकर प्रकाश भट्ट नाम सँ अभिहित कएने छथि। रामावतार चरित केँ प्रकाश

रामायणक अभिधान सँ सेहो अलंकृत कएल जाइछ। ई रामायण सर्वप्रथम फारसी लिपि मे सन् 1910 ई. मे प्रकाशित भेल छल। वाल्मीकि रामायण सँ प्रभावित भेलो सन्ता एहि मे अनेक परिवर्तन-परिवर्द्धन कएल गेल अछि।[4]

असमिया साहित्य मे रामकथाक सर्वप्रमुख रचना अछि, 'माधव कन्दली रामायण'। तीन गोट लब्धप्रतिष्ठ कवि द्वारा एकर रचना भेल अछि-माधव कन्दली, शंकरदेव ओ माधवदेव। उक्त ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण ओ बांग्लाक कृत्तिवास रामायण सँ प्रभावित अछि। एतद्रिक्त असमिया साहित्य मे जीवस्तु रामायण, महिरावणवध, पातालखण्ड रामायण, रामविजय नाटक, गणक चरित, श्रीरामचन्द्र अश्वमेध, कथारामायण, अद्भुत रामायण इत्यादि उल्लेख्य अछि। एतद्रिक्त अनन्त कन्दलीकृत रामायण (चौदहम शताब्दी), दुर्गावरकृत गीति रामायण (सत्रहम श.), रघुनाथ महन्त कृत गद्य-कथा रामायण (सत्रह श.), अद्भुत रामायण (सत्रहम श.), भवदेव कृत अश्वमेधयज्ञ आदिक उल्लेख अछि। नाटक मे शंकरदेव कृत राम विजयानाटक अत्यन्त प्रसिद्ध अछि। वस्तुत: रामविजय रामभक्ति प्रसार हेतु असमक वैष्णव पराम्परा मे लिखित रामकाव्य थिक। शंकरदेवक लक्ष्य काव्यक रचना नहि, भक्तिक उपदेश छलनि।[5] नाटक मे अनेक नवीन घटनाक उल्लेख भेल अछि। सीता स्वयंवरक प्रसंग मे सीताक रूप-लावण्य देखि राजा लोकनिक कामार्त्त भाव प्रदर्शनक उपरान्त सीताक सखी लोकनि राजासभक दुर्गंजन करैत छथि।

बांग्ला साहित्य मे कृतिवासी रामायण सर्वाधिक लोकप्रिय रहल अछि। ई ग्रन्थ कएक शताब्दी सँ जनसामान्य केँ आध्यात्मिक तृप्ति ओ नैतिक शक्ति प्रदान करैत आबि रहल अछि। उक्त रामायण पर वाल्मीकि रामायण ओ शाक्त सम्प्रदायक प्रचुर प्रभाव परिलक्षित होइछ। डॉ. सुकुमार सेन एहि रामायणक लोकप्रियता ओ परिवर्तनशीलता पर पूर्ण प्रकाश द' मुक्तकण्ठ सँ एकर श्लाघा कएने छथि[6]। एवंविधि कृत्तिवास रामयणक अतिरिक्त बांग्ला मे नित्यानन्द आचार्य (अद्भुताचार्य) कृत आश्चर्य रामायण, चन्द्रावती कृत अंगद शयबार, रघुनन्दन गोस्वामी कृत राम रसायनक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि। आधुनिक बांग्ला साहित्यक विविध विधा मे सेहो रामक आख्यान केँ उपजीव्य रूप मे ग्रहण कएल जाइत रहल अछि।

उड़िया भाषा मे सेहो अनेक रामकाव्यक रचना भेल अछि। एहि मे बलरामदास कृत रामायण (16म शताब्दी) सर्वप्रमुख अछि। ई जगन्नमोहन रामायण, बलरामदास रामयण ओ दांडि रामायणक नाम सँ विख्यात अछि। एतद्रिक्त उड़िया भाषाक आदि कवि शरलादास कृत 'विलंका रामायण' (15म शताब्दी) सेहो एक विलक्षण ग्रंथ थिक।

हिन्दी साहित्य मे तुलसीदास कृत रामचरितमानस सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ

अछि। रामभक्तिक प्रचार-प्रसार मे एहि रामायणक महान अवदान रहल अछि। डॉ. ग्रियर्सनक कथन छनि जे ईसाई जनसमाज मे बाइबिलक जतबा प्रचार छै, ताहि सँ बेसी हिन्दू जगत् मे रामचरितमानसक प्रचार आ आदर छै। डॉ. कामिल बुल्लकेक कहब छनि जे बाइबिल केँ छोड़ि, संसार मे सब सँ अधिक पाठक रामचरितमानसेक छै। अन्यो विधा मे रामकथा पर आधारित साहित्यक निर्माण हिन्दी मे भेल अछि।

मराठीक प्राचीनतम तथा सब सँ लोकप्रिय रामायण एकनाथ कृत भावार्थ रामायण (16म शताब्दी) थिक। एकर कथातत्व वाल्मीकि रामायण पर, भक्तितत्व अध्यात्म रामायण पर तथा नवीन सामग्री आनन्द रामायण पर आधृत अछि। गुजराती साहित्य मे सेहो रामकथा पर आधारित रामकाव्य उपलब्ध अछि जाहि मे भालण कृत रामविवाह, रामबाल चरित, सीता स्वयंवर आदिक नाम उल्लेख्य अछि। आधुनिक गुजराती साहित्य मे उन्नैसम शताब्दीक गिरधरदास कृत रामायण सर्वश्रेष्ठ ओ लोकप्रिय मानल जाइछ।

नेपाली भाषा साहित्यक मध्य रघुनाथ भट्ट द्वारा कएल गेल अध्यात्म रामायणक अनुवाद केँ विशेष महत्त्व प्राप्त छै। नेपाली साहित्य मे श्रीभानुभक्त आचार्य कृत रामायण अपन मौलिकता, भाषाक सौष्ठव तथा साहित्यिक महत्त्वक कारणें सर्वाधिक लोकप्रिय रहल अछि।

एवं विधि राम काव्यक मन्दाकिनी, वैदिक गंगोत्री सँ प्रवाहित होइत संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश ओ विभिन्न भारतीय साहित्य केँ अभिसिंचित करैत अद्यपर्यन्त विशाल जन-मानस केँ नव जीवन प्रदान क' रहल अछि, जे एकर सुदीर्घ ओ सुदृढ़ परम्पराक परिचायक अछि।

भारत सँ बाहर रामकथा ओ रामकाव्य

महर्षि वाल्मीकि मानल अछि जे जाधरि धरती पर नदी ओ पहाड़ रहत, ताधरि एहि लोक मे रामकथाक प्रचार होइत रहत। इएह कारण अछि जे कालक्रमें रामकथा मात्र भारते धरि नहि, अपितु विदेशहु मे परिव्याप्त भ' गेल अछि। किन्तु, एहि पसार मे स्थानीय संस्कृति ओ लोकाचारक प्रभाव ओहि कथा सभ पर पड़ैत गेल।

भारत सँ बाहर राम कथाक प्रसार सर्वप्रथम बौद्ध लोकनि द्वारा भेल छल। अनामकं जातकम् तथा दशरथ कथानकम्क क्रमश: तेसर आ पाँचम शताब्दी ई. मे चीनी भाषा मे अनुवाद भेल छल। परवर्ती प्राचीन विदेशी रामकाव्य तिब्बती रामायण थिक, जकर रचना सम्भवत: आठम् शताब्दी ई. मे भेल छल। पूर्व तुर्किस्तानक खोतानी रामायण नबम शताब्दीक थिक। तिब्बती रामायण ओ खोतानी रामायण मे पर्याप्त सादृश्य अछि तथा एहि पर वृहत्कथा ओ गुणभद्र कृत उत्तरपुराणक प्रभाव अछि।

हिन्देशिया तथा हिन्दचीन मे वाल्मीकि रामायण प्राचीन कालहि सँ ज्ञात रहल अछि तथा ओहि समयक कोनो साहित्य सुरक्षित नहि रहि सकल अछि। बहुशः रामायण उपलब्धो अछि तँ ओकर कवि अज्ञात छथि। हिन्देशिया मे अधुना रामकथाक दू गोट रूप प्राप्त अछि। एक जावाक रामायण (दसम श. ई.) जे ककविनक रूप धारण कएने अछि आ जकर आधार भट्टिकाव्य अछि तथा दोसर हिकायत सेरीराम, जकरा आधार पर अद्यपर्यन्त, रामकाव्यक सृष्टि तथा रामनाटक सभक अभिनय होइत रहल अछि।[7]

हिन्दचीन, श्याम तथा ब्रह्मदेश मे प्रचलित रामकथा मुख्यतः *सेरीराम* पर आधृत अछि। कम्बोडियाक रामकेति (16म श. ई.) तथा श्यामक रामकिबेन (16म श.) मे अत्यधिक समानता अछि तथा दुहू मे वाल्मीकि रामायण एवं सेरीरामक समन्वय करबाक प्रयास कएल गेल अछि। ब्रह्मदेशक रामकाव्य आन देशक अपेक्षा अर्वाचीन अछि। यू तो कृत राम गायन (रामयग्रान) 1800 ई.क रचना थिक जकरा ब्रह्मदेश (वर्मा)क सभ सँ महत्त्वपूर्ण रामकाव्य मानल जाइछ।

रूस मे सेहो सुदूर उत्तरक विस्तृत भू-भाग साइबेरिया धरि रामकथाक विस्तार भेल अछि। तिब्बती आ खोतानी भाषा मे लिखित रामकथाक रूस मे विशेष प्रचार-प्रसार भेल, जकर कालावधि तेसर सँ नवम शताब्दी मानल जाइत अछि। साइबेरियाक बुर्यात प्रदेश मे, जतुक्का भू-भाग बर्फ सँ आच्छारित रहैछ, बारहम ओ तेरहम शताब्दी मे मंगोल भाषा मे लिखित एक पुस्तक मे रामायणक सारांश प्रचलित भेल। तत्पश्चात् मंगोल आ तुर्कक प्रभावें रामकथा वोल्गा नदी-क्षेत्र मे पहुँचल, जतुक्का हाल्मिक नामक प्रजाति मे ई कथा लोककथाक रूप मे प्रचलित भेल। तत्पश्चात श्रीरामक प्रति अगाध प्रेम रूसी जनमानस केँ आत्मविभोर करए लागल।

मैथिली मे रामकथा ओ रामकाव्य

शक्ति-पीठक रूप मे समादृत सीताक जन्मभूमि मिथिलाक लोक मानस मे राम-सीता उपासना केँ जे महत्त्व भेटबाक चाहिऐक, से नहि भेटि सकलैक। कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर सँ ल'क' कवीश्वर चन्दा झा धरिक काल-खण्ड प्रायः मौन अछि। एहि मौनक वैज्ञानिक ओ इतिहास सम्मत उत्तर अद्यावधि उपलब्ध नहि भ' सकल अछि। जे किछु उत्तर प्राप्त अछि, ओ अनुमान आश्रित अछि। सीता आ राम केँ पारलौकिक परमगतिक अधिष्ठाता मानितहुँ एहिठामक लोक विवाह पंचमी दिन अपन कन्याक विवाह नहि करए चाहैछ। मिथिलाक कन्या सीतासन सोहाग पएबाक मनःस्थिति नहि बना पबैछ। सोहाग-भागक बेर 'गौरी सँ माँगब अहिबात हे'—सएह मैथिल लोक-जीवनक सत्य थिक। हमरा बुझने सीता ओ राम सनक दुःखद

जीवन व्यतीत करबाक भय तथा सीता परित्यागक दुर्घटना, एहि यक्ष-प्रश्नक मूल मे अनुस्यूत रहल अछि। तथापि विद्यापति ओ गोविन्ददासक किछु पद तथा एहि ठामक किछु संस्कार गीत मे रामकथाक प्रचार-प्रसार होइत रहल अछि। मैथिली लोकगीत मे, एतुक्का संस्कार गीत मे, सीता केँ आदर्श कन्या ओ पुतोहुक रूप मे उल्लेख भेल अछि। मिथिलाक लोकजीवन रामकथा सँ सम्पृक्त रहलो सन्ता, एहिठामक शिष्ट साहित्य मे विशिष्ट स्थान नहि प्राप्त भ' सकल छै। मैथिली मे रामायणक रचना उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरण मे कवीश्वर चन्दा झा द्वारा मिथिला भाषा रामायण (1886 ई.) मे भेल जकरा मैथिलीक प्रथम रामायण होएबाक गौरव प्राप्त छै। मैथिली मे लिखित द्वितीय रामायण थिक कविवर लालदास कृत रमेश्वर चरित मिथिला रामायण, जकर रचना सन् 1910 ई. मे भेल अछि।

उपरि उद्धृत दुहू रामायणक पश्चात् मैथिली साहित्यक आधुनिक काल मे आबि क' रामकथा पर आधृत विभिन्न विधा मे रचनाक प्रणयन प्रारम्भ भेल। कोनो राम कथाश्रित काव्य थिक तँ कोनो मे सीताक चरित्रक प्रधानता अछि। ओहि कृति सभ मे प्रमुख अछि रामविजय (तेजनाथ झा), रामसुयश सागर (विश्वनाथ झा 'विषपायी'), बाल रामायण (भुवनेश्वर प्रसाद), अम्ब चरित (कविवर सीताराम झा), सीतायन (वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'), वैदेही वनवास (छेदी झा 'द्विजवर'), सीता चरितामृत (हीरालाल झा 'हेम'), सीता (रवीन्द्रनाथ ठाकुर), सीता परिणय (जनार्दन झा), सीता रामायण (कृष्णनन्दन सिंह), हरबाहक बेटी (फजलुर रहमान हाशमी), सीताचरित (नृत्यवती देवी), सीतायन (आदिकाण्ड, जयकान्त झा 'श्रुतधर'), सीताशील (खड्गवल्लभ दास), व्यथा (रमाकान्त झा), रावण वध (जीवनाथ झा) आ मैथिली गीत रामायण (सुधा कर्ण), हनुमान चरित (कालीकांत झा), वसिष्ठ भुशुण्डी संवाद (जयनारायण यादव), श्रीरामकथा (उषा चौधरानी), वीरबालक (मुंशी रघुनन्दन दास) आदि अछि। एतद्रिक्त रामकथा पर आधारित अनूदित काव्यग्रन्थ मे पण्डित गौरीशंकर झा द्वारा माइकेल मधुसूदन दत्तक 'मेघनाद वधक' मैथिली में अनुवाद तथा अच्युतानन्द दत्त द्वारा कएल गेल रघुवंशक मैथिली रूपान्तर सेहो भेल अछि। तुलसीकृत रामचरितमानसक शब्दशः मैथिली रूपान्तर रामलोचन शरण द्वारा प्रस्तुत कएल गेल अछि।

एतावता सीताचरिताश्रित काव्य ओ रामकथाश्रित काव्यक उपरान्त किछु नाटकहुक रचना भेल अछि जकर आधार रामकथा रहल अछि। एहि प्रकारक नाटक सभ मे कविवर जीवन झा कृत मैथिली सट्टक, सूर्यनारायण झा कृत जानकी नाटक, पण्डित आनन्द झा कृत सीतास्वयम्वर नाटक, ठाकुर प्रसाद झा कृत सीता परिणय नाटक, अम्बिका कुमार दास कृत सती सुलोचना नाटक तथा मुंशी रघुनन्दन दास कृत दूतांगद

व्यायोगक नाम उल्लेख्य अछि। अनूदित राम कथाश्रित नाटक मे मुंशी रघुनन्दन दास द्वारा उत्तर रामचरितक मैथिली अनुवाद तथा चतुर्भुज कृत हिन्दी नाटक रावण वधक लक्ष्मीकान्त सजल द्वारा मैथिली अनुवादक नामोल्लेख अपेक्षित अछि।

मिथिला भाषा रामायणक प्रेरणा-स्रोत

मिथिला भाषा रामायणक आधार स्रोत थिक अध्यात्म रामायण। काण्ड संख्या, नामकरण (केवल युद्धकाण्ड केँ कवीश्वर लंका काण्ड कहने छथि।) ओ प्रत्येक काण्ड मे सर्गक संख्या मे (किंचित अन्तरक संग) समता देखल जा सकैछ। सुन्दरकाण्ड मे अध्यात्म रामायणक पाँचम सर्गक वर्ण्य विषय केँ चारिम अध्याय मे तथा युद्धकाण्ड मे नवम सर्गक वर्ण्य विषय केँ कवीश्वर लंकाकाण्डक आठम अध्याय मे समाहित क' देने छथि। मिथिला भाषा रामायण मे सर्ग केँ अध्याय कहल गेल अछि। कवीश्वरक रामायण मे कुल 62 गोट अध्याय अछि जाहि मे बालकाण्ड मे 6, अयोध्याकाण्ड मे 9, अरण्यकाण्ड मे 10, किष्किन्धाकाण्ड मे 9, सुन्दरकाण्ड मे 4, लंकाकाण्ड मे 16 तथा उत्तरकाण्ड मे 8 गोट अध्याय निवेशित अछि। बालकाण्ड मे अध्यात्म रामायणक छठम ओ सातम सर्गक कथा मिथिलाभाषा रामायणक छठम अध्याय मे निवेशित अछि। सुन्दरकाण्ड मे अध्यात्म रामायणक चारिम ओ पाँचम सर्गक कथा मिथिलाभाषा रामायण मे सन्निविष्ट अछि। उत्तरकाण्ड मे अध्यात्म रामायणक पाँचम ओ छठम सर्गक कथा केँ मिथिला भाषा रामायणक पाँचमे अध्याय मे सन्निविष्ट कएल गेल अछि। एहि प्रकारें दूहू रामायणक सर्ग ओ अध्याय मे तीन संख्याक अन्तर अछि। परन्तु कथा वस्तुक समानता सर्ग-सर्ग ओ अध्याय-अध्याय मे विवेचित अछि।

एतदरिक्त अध्यात्म रामायण ओ मिथिला भाषा रामायण मे बहुश: एहन स्थल सभ अछि जाह मे साम्य परिलक्षित होइछ। उदाहरण स्वरूप शांतापति ऋष्यशृंग द्वारा दशरथक पुत्रेष्टियज्ञक समायोजन, अहिल्योद्धारप्रकरण, मिथिला वर्णन, रामक दार्शनिक एवं भक्तिपरक चित्रण, रावणक श्रीरामकथा, मारल जएबाक अभीप्सा-ज्ञापन इत्यादि प्रसंग केँ लेल जा सकैछ। अध्यात्म रामायण मे मिथिला वर्णनक अभाव अछि। ओतए विश्वामित्रक रामसहित विदेह नगर मे प्रविष्ठ करबाक संकेत मात्र भेटैछ, किन्तु मिथिला भषा रामायण मे कवीश्वर द्वारा मिथिलाक गौरव गरिमाक विशद वर्णन कएल गेल अछि।

अध्यात्म रामायण मे श्रीराम सर्वत्र वेदान्त-सम्मत ब्रह्मरूप मे प्रतिष्ठित भेल छथि। एहि रामायणक अरण्यकाण्डक प्रारम्भहि मे राम स्वयं केँ ब्रह्म, लक्ष्मण केँ जीव ओ सीता केँ मायाक रूप मे प्रस्थापित कएलनि अछि :

अग्रे यास्याम्यहं पश्चात्त्वमन्वेहि धनुर्धर:।
आवयोर्मध्यगा सीता मायेवात्म परात्मनो:॥[8]

अध्यात्म रामायण मे अरण्यकाण्डक वर्ण्य-वस्तु दस सर्ग मे नियोजित अछि जकरा यथावत् कवीश्वर अपन रामायण मे दस अध्याय मे तँ विभाजित करबे कएलनि अछि, उपरि उद्धृत श्लोक केँ सेहो यथावत् प्रस्तुत क' देलनि अछि :

आगाँ हम पाछाँ अहाँ, सीता माझहि ठाम।
ब्रह्म जीव माया जेहनि, चलु दण्डक वन नाम॥[9]

मिथिला भाषा रामायण मे एहन अनेकहु प्रसंग ओ स्थल अछि जाहि पर अध्यात्म रामायणक स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होइछ। अध्यात्म रामायण मे बालकाण्डक दोसर सर्ग मे पार्वतीक उक्ति मिथिलाभाषा रामायण मे यथावत अनुकृति अछि।[10] एतद्रिक्त आनहु अनेक प्रसंग अछि जकर मिथिला भाषा रामायण मे भावानुवाद अछि। दुहू रामायणक पर्यवेक्षण कएला सन्ता ई स्पष्ट भ' जाइछ जे कवीश्वरक रामायणक मूल उपजीव्य अध्यात्म रामायणे अछि। इएह कारण जे आचार्य रमानाथ झा कहने छथि—''कवीश्वर अपन रामायणक रचना अध्यात्म रामायणक आधार पर कएल ओ से मूल सँ ततेक अधिक मिलैत अछि जे एकरा अध्यात्म रामायणक अनुवादो कही तँ दोष नहि।[11] एतावता मिथिला भाषा रामायणक आधार-स्रोत अध्यात्म रामायण अछि से तँ निर्विवाद अछि, किन्तु मिथिला भाषा रामायण केँ ओकर अनुवाद मात्र कहि देब संगत नहि बुझना जाइछ। गोस्वामी तुलसीदास जेना रामचरितमानसक प्रारम्भहि मे नाना पुराण निगमागमसम्मतं कहि अपन आधार-क्षेत्रक व्याप्ति दिस संकेत द' चुकल छथि, ताहि रूपक कवि द्वारा देल गेल कोनो साक्ष्य उपलब्ध नहि अछि, तथापि हुनक व्यापक आधार-स्रोत केँ अस्वीकार नहि कएल जा सकैछ। हमरा विचारें जे स्थान हिन्दी मे रामचरितमानस केँ छै, मैथिली मे सएह स्थान मिथिला भाषा रामायण केँ प्राप्त अछि। की विषय-वस्तु, की प्रस्तुति, की भाषा, की शैली, की कवि-कल्पना, की मौलिक उद्भावना—सभ क्षेत्र मे अद्वितीय, अप्रतिम!

ओहिना वाल्मीकि रामायण सँ प्रभावित होएब कवीश्वरक लेल स्वाभाविके। कवीश्वर चन्दा झा कोनो सामान्य लोक नहि छलाह। हिनका मे विपुल प्रतिभा ओ विशाल दृष्टि छलनि। ओ अपना युगक अधीत विद्वान ओ अनुसंधित्व छलाह। हुनक दृष्टि आस्फालन विभिन्न भाषाक क्षितिज केँ स्पर्श कएने छल। हुनका मिथिलाक राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक ओ साहित्यिक परिवेशक पूर्ण अभिज्ञान छलनि। इएह कारण जे नवयुग प्रवर्तक चन्दा झाक सन्दर्भ मे विश्वविश्रुत भाषातत्वविद् जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपन उद्गार व्यक्त कएने छथि : Pandit Chandra (Chanda)

Jha whom I know to be one of the most learned man in that part of India.[12]

तात्पर्य ई जे गहन अध्ययन ओ गम्भीर चिन्तन मननक पश्चाते कवीश्वर अपन रामायणक प्रणयन प्रारम्भ कएलनि, जाहिक्रम मे ओ वाल्मीकि सँ प्रारम्भ क' विभिन्न पुराण ओ तत्पश्चात् संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा लोकभाषा-साहित्य केँ अपन रामायणक उपजीव्य बनौलनि, ओ प्रभाव सभ कोन प्रकारक अछि, तकर किछु दृष्टान्त द्रष्टव्य थिक। वसिष्ठमुनि दशरथ केँ पुत्रेष्टियज्ञ करबाक हेतु ऋष्यशृंग ओ शांता केँ आमंत्रित करबाक परामर्श दैत छथिन। एकर स्रोत वाल्मीकि रामायण थिक। अध्यात्म रामायण ओ रामचरितमानस मे ई कथा इति संक्षिप्त अछि। किन्तु वाल्मीकि रामायण सँ प्रभावित भ' कवीश्वर एहि प्रसंगक अत्यन्त विस्तृत वर्णन कएलनि अछि। अत: स्पष्ट अछि जे मिथिला भाषा रामायणक उक्त कथा-प्रसंग वाल्मीकि रामायणे पर आधृत थिक। वाल्मीकि रामयणक सुग्रीव द्वारा कुम्भकर्णक नाक-कान काटल जएबाक प्रसंग, मेघनादक युद्ध मे राम लक्ष्मणक नागपाश मे बद्ध भेला उत्तर सीता विलापक प्रसंग, किष्किंधकाण्ड मे रामक विरह दशाक प्रसंग मे कवीश्वर पर वाल्मीकि रामायणक स्पष्ट प्रभाव अछि। वाल्मीकि रामयण मे रामक विरह-दशाक क्रम मे वर्षा ऋतु ओ शरद ऋतुक उद्दीपकताक चित्रण भेल अछि :

निद्रा शनैः केशवमभ्युपैति द्रुतं नदी सागरमभ्युपैति।
हृष्टा बलाका धनमभ्युपैति कान्ता सकामा प्रियमभ्युपैति॥[13]

कवीश्वरक वर्णन तुलनीय अछि :

निद्रा केशव तन लपटाथि। सरित सकल सुखसागर जाथि॥
विशद बलाका गगन समाथि। विरहीजन मनमन अकुलाथि॥[14]

यद्यपि अध्यात्म रामायण मे सेहो विरह-वर्णनक चित्रण अछि, किन्तु कवीश्वरक वर्णन ओहि सँ भिन्न अछि। स्पष्ट अछि जे कवीश्वर एतए वाल्मीकि रामायणक अनुसरण कएने छथि।

तदवत् वनगमनक प्रसंग मे कवीश्वर अपन रामायण मे सीता, राम आ लक्ष्मण केँ बाट मे गंगा पार करबा काल नाओ पर चढ़ि सीता केँ गंगा सँ प्रार्थना करैत देखौलनि अछि, जकर सादृश्यता आनन्द रामायण मे उपलब्ध प्रसंग सँ तुलनीय अछि। कवीश्वरक रामायण मे सीताक निन्दा एक धोबिन द्वारा भेल अछि, जे आनन्द रामायण मे सेहो अछि, मुदा वाल्मीकि रामायण तथा अध्यात्म रामायण मे एकर चर्च नहि भेल अछि। एतद्रिक्त मिथिला भाषा रामायणक बालकाण्ड मे एक आओर प्रसंग आएल अछि, जतए रामकथाक अनन्तताक सन्दर्भ मे शिवजी पार्वती सँ कहैत छथिन :

कति बेरि राम लेल अवतार, कति बेरि हरलनि अवनी भार।
ओ रामायण अछि शतकोटि, ब्रह्म लोक महिमा बड़ि गोटि॥[15]

एहि प्रसंग मे आनन्द रामायणक उक्ति ध्यातत्व अछि :

चरित रघुनाथस्य शत कोटि प्रविस्तरम्।
एकैकमक्षर पुंसा महापातकनाशनम्॥[16]

अत: स्पष्ट अछि जे कवीश्वरक उपर्युक्त अंशक प्रभाव-स्रोत आनन्द रामायणे अछि।

महाभारत मे रामकथाक वर्णन यद्यपि अत्यन्त संक्षिप्त रूप मे भेल अछि, मुदा कवीश्वरक रामायण मे अनेक स्थल पर महाभारतक प्रभाव सेहो लक्षित होइछ। रावण ओ मारीचक प्रसंग मे दुहू ग्रन्थक वर्णन मे साम्य परीक्ष्य अछि। एतद्रिक्त रावणक सन्दर्भ मे कवीश्वरक रामायणक निम्न प्रसंग तँ महाभारत सँ यथावत् गृहीत बुझना जाइछ :

दशमुख नग्न सकल परिवार। तेल लगाओल भरल विकार॥
गोबर डाबर मध्य नहाथि। खर पर चढ़ल याम्य दिशजाथि॥[17]

महाभारत मे ई श्लोक एहि प्रकारें अंङ्कित अछि :

तैलाभिषिक्तो विकचो मज्जन पङ्के दशाननः।
असकृत् खरयुक्ते तुरथे नृत्यन्निवस्थितः॥[18]

एतद्रिक्त मिथिला भाषा रामायण पर महाकवि कालिदास कृत रघुवंश महाकाव्यहुक प्रभाव कतिपय स्थल पर परिलक्षित होइछ। कवीश्वरक रामायण मे सेतुबन्ध निर्माणक समय रामक क्रोध एहि रूपें व्यक्त भेल अछिः।

कहल प्रभु जलनिधि महाजड़, कयल अति अपमान।
खनल हमरे पूर्व्व पुरुष, अहित हमरे मान॥[19]

उपर्युक्त कथन पर रघुवंश महाकाव्यक स्पष्ट प्रभाव द्रष्टव्य अछि :

गुरोर्थियक्षोः कपिलेन मेध्ये रसातलं संक्रमिते तुरंगे।
तदर्थमुर्वीमवदायद्भिः पूर्वैः किलायं परिवर्धिऽतेनः॥[20]

रघुवंशक अतिरिक्त मिथिलाभाषा रामायण पर प्रसन्न राघव तथा हनुमन्नाटकक प्रभाव सेहो यत्किंचित परिलक्षित होइछ। अयोध्या सँ वनगमनक हेतु प्रस्थान कएलाक पश्चात् मार्ग मे सीताक कष्टक वर्णन, अंगद द्वारा रावण केँ काँख त'र दबएबाक वर्णन आदि प्रसंग मे मिथिला भाषा रामायण पर हनुमान्नाटकक स्पष्ट प्रभाव लक्षित होइछ। वनगमनक हेतु अयोध्या सँ प्रस्थान कएलाक पश्चात् मार्ग मे सीताक कष्टक वर्णन कवीश्वर एहि प्रकारें कएलनि अछि :

सिरिस कुसुम सन तन सुकुमारि। पुरि परिसर मे जनक दुलारि।
चलि नहि सकथि कहथि से घूरि। दंडक वन प्रिय अछि कतदूरि॥[21]

ई प्रसंग हनुमन्नाटक[22] सँ गृहीत अछि। रामचरितमानसक प्रभाव तँ भारतीय

भाषाक विभिन्न साहित्य पर पड़बे कएल, ओकर व्यापक प्रभाव सम्पूर्ण मिथिलांचल पर सेहो पड़ल। शान्तापति ऋष्यशृंगक दशरथक ओतए पुत्रेष्टियज्ञ करब पुराण एवं विभिन्न साहित्यिक एक प्रचलित प्रकरण अछि। एहि प्रसंग रामचरितमानस मे संक्षिप्त उल्लेख कएल गेल अछि, यथा :

सृंगी रिषिहि वसिष्ट बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा॥
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू करलीन्हें॥[23]

कवीश्वर चन्दा झा एहि प्रसंगक विस्तृत वर्णन अपन रामायण मे कएलनि अछि। एत' राजा कें पुत्र-प्राप्तिक मंत्रणा दैत वसिष्ठ कहैत छथि जे मित्र-जमाता शांता पति द्वारा कयल गेल यज्ञ सँ पुत्र-प्राप्ति सम्भव अछि। अतः हुनका बजाएब आवश्यक :

शान्ता-स्वामी मित्र जमाय। आनू तनिका अपनहि जाय।
काम-यज्ञ करू विधिसौं भूप। हमरा सब मिलि कर्म्म अनूप॥[24]

एतद्रिक्त दुहू रामायण मे अनेक स्थल पर सादृश्यता परिलक्षित होइछ। उदाहरणस्वरूप मिथिलाक शोभा-वर्णन, पुष्प-वाटिका मे राम-सीताक साक्षात्कार ओ दुहूक हृदय मे पूर्वरागक उदय, धनुषयज्ञक आयोजन, अंगद-रावण-संवाद, सीताहरण ओ सीता-विलाप आदि कें लेल जा सकैछ। रामचरितमानसक सीता, माइक आज्ञा सँ गिरिजा पूजनक हेतु सखी लोकनिक संग पुष्प-वाटिका मे जाइत छथि। तुलसीदास एहि प्रसंग कें निम्न रूपें उद्घाटित कएल अछि—

तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई॥[25]

कवीश्वर उपर्युक्त वर्णन सँ कतबा प्रभावित छथि, तकर प्रकटीकरण निम्न पंक्ति मे भेल अछि—

गिरिजा देवी पूजि मनाउ। माय कहल जानकि अहँ जाउ॥[26]

इएह ओ स्थल अछि जतए राम-सीता एक-दोसराक सौन्दर्य सुषमाक प्रति आकर्षित होइत छथि तथा दुहूक हृदय मे पूर्वरागक लक्ष्य होइत अछि। एहि प्रसंग कें तुलसीदास परम्परागत रूढ़ि कें अधिक महत्त्व दए सीताक वाम अंग फड़कबाक उल्लेख कएलनि अछि :

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥[27]

तुलसीदासक उपर्युक्त कथन सँ कवीश्वर चन्दा झा एतबा अधिक प्रभावित भेल छथि जे यथावत् ओकर अनुकृति अपन रामायण मे उतारि देलनि अछि :

गौरि पूजि पद कयल प्रणाम। फरकल बेरि-बेरि अङ्ग बाम॥[28]

एतबहि नहि, सीता-हरणक परिणामस्वरूप सीता-विलापक प्रसंग मे दुहू

कविक उक्ति तुलनीय अछि। तुलसीदासक मानस मे सीताक कथन द्रष्टव्य अछि:

हा लछिमन तुम्हास नहि दोसा। सोफल पायउँ कीन्हेउँ रोसा।
विविध विलाप करत वैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही॥

कवीश्वर उपर्युक्त प्रसंगक उल्लेख अपन रामायण मे एहि प्रकरें कएलनि अछि जे ओहि पर रामचरितमानसक अतिशय प्रभाव परिलक्षित होइछ। जानकीक पश्चाताप निम्न शब्द मे भेल अछि—हा लक्षण कछु अहँक न दोष। भल कहइत हम कयलहुँ रोष॥

एतद्रिक्त पुष्प-वाटिका मे राम ओ सीताक परस्पर साक्षात्कार भेला उत्तर दुहूक हृदय कें पूर्वरागक उदय होइछ। एहि सन्दर्भ मे दुहू रामायण मे विशद वर्णन कएल गेल अछि। अध्यात्म रामायण तथा वाल्मीकि रामायण मे एकर अभाव अछि। स्पष्ट अछि जे कवीश्वरक एहि वर्णनक आधार-स्रोत मानसहि रहल अछि। कवीश्वरक रामायण मे जे धनुषयज्ञक आयोजनक वर्णन अछि ताहू पर मानसक प्रभाव परिलक्षित होइछ, कारण अध्यात्म रामायण ओ वाल्मीकि रामायण मे एकर अभाव अछि। कवीश्वरक रामायण मे वर्णित अंगद-रावण-संवाद, सुरसा द्वारा हनुमानक परीक्षा, जनकपुरक शोभा-वर्णन, धनुष-भंगक प्रसंग, अहल्योद्धार, शबरी प्रसंग आदि अनेक स्थल पर मानसक स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होइछ।

एतावता ई स्पष्ट अछि जे रामकथा कें ल 'क' जतबा ग्रन्थक प्रणयन भेल अछि, ओतबा आओर कोनो कथानक कें ल 'क' नहि। सुतरां ई निर्णीत अछि जे मिथिलाभाषा रामायणक मूल आधार अध्यात्म रामायणहि अछि। एतद्रिक्त एहि पर वाल्मीकि रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण, ब्रह्माण्ड पुराण, भागवतपुराण, रघुवंश, प्रसन्नराघव, हनुमन्नाटक, रामचरितमानस, कृत्तिवास रामायण आदि ग्रन्थक स्पष्ट प्रभाव पड़ल अछि।

मिथिला भाषा रामायणक काव्य-सौष्टव

कवीश्वर चन्दा विरचित मिथिला भाषा रामायण ओ महान एवं गम्भीर रचना थिक जे हिनका अक्षय कीर्ति ओ लोकप्रियता सँ अभिमण्डित कएने अछि। उक्त गौरव-ग्रन्थ मे गम्भीर दार्शनिक चिन्तन ओ काव्य-तत्त्वक अपूर्व मणि-कांचन-संयोग भेल अछि। लोकतत्वक सन्निवेश सँ लोकमंगलक जे गवाक्ष उन्मुक्त भेल अछि, से कविक लोकप्रियताक मेरुदण्ड थिक। रामकथाक विभिन्न प्रसंग मे जे कविक मौलिक उद्भावना ओ कतिपय अभिनव कथा-संघटनाक सृष्टि भेल अछि, ओ अन्य रामायण मे अप्राप्य अछि। भाषाक प्राञ्जलता, शैलीक क्षिप्रता, पिंगल-विधानक अप्रतिमता ओ विभिन्न राग-रागिनीक मंजुलता मिथिला भाषा रामायणक अपन विशेषता थिक।

पूर्ववर्ती अनेक रामायण उपजीव्य रहलो सन्ता एहि मे अनेक एहन नवीन बिन्दुक उपस्थापन भेल अछि जे एकर मौलिकता केँ अद्यापि अक्षुण्ण बनौने अछि। उदाहरणस्वरूप वन-गमनक समय सेवकगणक प्रति हिनका लोकनिक स्नेह-प्रदर्शन, गंगा पार करबा काल सीता द्वारा गंगा केँ छागर ओ सुरा चढ़यबाक कबुला, सुग्रीव द्वारा सीताक पट आभूषण देखाओल गेला पर सभक विह्वलता, राम-रावणक युद्ध मध्य देवता लोकनि द्वारा महाकालीक स्तुति, रावणक मृत्यूपरान्त क्रन्दन करैत स्त्रीगण केँ विभीषण द्वारा सान्त्वना तथा मन्दोदरी केँ राम द्वारा लव-कुश केँ शिक्षा देबाक प्रसंग मे संगीत-शास्त्रक तत्त्व-विवेचन इत्यादि एहन स्थलसभ अछि जे कोनहुँ आधार ग्रन्थ मे नहि भेटैछ। इएह ओ आधार बिन्दु अछि जे कवीश्वरक मौलिक उद्भावना केँ उद्घाटित करैत अछि, अनुवादक आरोप सँ बचबैत अछि तथा कवि केँ अशेष यशक भागी बनबैत अछि।

एतद्रिक्त मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक प्रसंग अबितहिं कवीश्वरक नैसर्गिक काव्य प्रतिभा मुखरित भ' उठैत अछि तथा ओहि कालावधि मे ओ जे वर्णन करैत छथि से अनन्य भ' उठैत अछि। इएह कारण अछि जे जनकपुरक शोभा-वर्णन मे मातृभूमिक प्रति कविक निश्छल प्रेम शतधा स्वर मे मुखरित भ' उठल अछि : 'की दिव्यभूमि मिथिला हम आबि गेलौं।'

यद्यपि कवीश्वरक रामायण मे सर्वत्र रामेक श्रेष्ठता स्थापित अछि, तथापि सीताक गुण गरिमा केँ विशेष महत्त्व प्रदान कएल गेल अछि जे परम्परा पोषण, मर्यादा रक्षण ओ सीताक प्रति आपकताक आधिक्यक परिचायक थिक। मिथिला भाषा रामायणक राम साक्षात परब्रह्म परमेश्वर छथि। सीता हुनक भार्या छथिन, प्रकृति छथिन, शक्ति छथिन। ओ एहि अपन माया लीला द्वारा सृष्टि एवं प्रलय करैत छथि। हुनक अक्षय शक्तिक दृष्टान्त शिव धनुष केँ खण्डित करबा काल देखना जाइछ : 'प्रभु कर परस धनुष टुटि गेल। शब्द प्रचण्ड भुवन भरि भेल'।

एतावता मिथिला भाषा रामायण मे अनेक एहन स्थल अछि जे एकर वैशिष्ट्य केँ उद्घाटित करैछ, अनेक एहन आकर्षण केन्द्र अछि जे एकर काव्य सौष्ठव केँ व्यंजित करबा मे समर्थ अछि। एहि मे रावण अंगद संवाद तँ ततेक ने रोचक अछि जे हुनक वैदुष्य ओ काव्य कौशलक प्रतिमान बनि गेल अछि। इएह कारण जे रावणक औधत्यपूर्ण आत्मश्लाघा सुनि, अंगदक कथन मैथिल मे कहबी बनि गेल अछि— 'कयल रघुनंदन सौं वैर ककर ककर नहि धरबह पैर।'

एतद्रिक्त मिथिला भाषा रामायण मे युद्ध वर्णन विशद रूप मे कएल गेल अछि। एहि मे खरदूषण वध, कुम्भकर्ण वध, मेघनाद वध तथा राम रावणक संग्रामक क्रम मे जे युद्ध कौशल, अस्त्र शस्त्रक प्रयोग ओ विभिन्न आयुधक टंकार-झंकार श्रुतिगोचर होइछ, ओ अपूर्व अछि। लक्ष्मण-मेघनाद युद्धक क्रम मे जे ओजगुण सम्पन्न शब्दक

प्रहार भेल अछि, ओ द्रष्टव्य अछि। लक्ष्मण ललकि मेघनाद सँ कहैत छथि—'वाण ओ कृपाण सौं काँकड़ि जकाँ फट्टबैं॥'

कवीश्वर मानव-हृदयक महान पारखी छलाह। हिनक रामायण मे मानव-हृदयक विभिन्न मनोदशा सभक जतबा गहन ओ सूक्ष्म चित्रण भेल अछि, ततबा अन्यत्र दुर्लभ अछि। संयोग ओ विप्रलम्भ शृंगारक वर्णन सहज, स्वभाविक तथा मर्यादित अछि। प्रेमी हृदयक जतबा सुन्दर अनुभूति एहि वर्णन मे उपलब्ध होइछ से अन्यत्र नहि। वनवासक हेतु प्रस्थान कएलाक पश्चात् मार्ग मे सीताक कष्टक वर्णन मे जतए सीताक सुकुमारताक उद्घाटन भेल अछि, ओतहि घूरि क' कहबा मे जे भंगिमा ओ अर्थ व्यंजना अछि, से अपूर्व अछि :

सिरिस सुमन सन तन सुकुमारि। पुरि परिसर मे जनक दुलारि।
चलि नहि सकथि कहथि घूरि। दंडक वन प्रिय अछि कत दूरि॥[29]

संयोग वर्णन मे जाहि दक्षता, कौशल ओ निपुणताक प्रदर्शन कवीश्वर द्वारा कएल गेल अछि, ताहू सँ अधिक भावमयता ओ तल्लीनता हुनक वियोग-वर्णन मे देखना जाइछ। प्रवास विप्रलम्भ मे हृदयक समस्त करुणाक अभिव्यंजना भेल अछि। नायिका सीताक दशा अवलोकनीय अछि :

मलिन वसन एक-वेणी अति दुख, निराहार दुबराइलि।
राम राम रट सकरुण धुनि क', शुद्ध समाधि समाइलि॥[30]

कवीश्वर मे जतबा सहृदयता ओ संवेदनशीलता छनि, ततबहि चातुर्य ओ वाग्विदग्धता। हुनक कथन-चातुर्य, वर्णन-चमत्कार, वचन-वक्रता ओ बात कहबाक कौशल अप्रतिम अछि। की छन्द, की अलंकार ओ की रसपरिपाक, सर्वत्र कवीश्वरक अद्वितीयता श्लाघ्य अछि। हुनक रामायण रूप चित्रक भण्डार थिक। पात्र लोकनिक क्रियाचित्र, भावचित्र तथा वस्तु सभक संश्लिष्ट चित्रक प्रदर्शनी सर्वतोभावेन प्रशंसनीय अछि। क्रियाबिम्ब ओ रूपबिम्बक एक दृष्टान्त अवलोकनीय अछि :

चलि नहि सकथि थगित भेल देह। बाढ़ल ततय परस्पर नेह।
सीता रामचन्द्र-मुख हेरि। अनिमिष-आँखि निमिष नहि फेरि॥
प्रेम-विवश बिसरल मन शोच। लोचन त्यागल पल संकोच॥[31]

कवीश्वरक भाषा प्राञ्जल, सजीव, स्वाभाविक, सरल, स्पष्ट ओ प्रसाद गुणसम्पन्न अछि, संगहि लौकिक कहबी सँ पुष्ट अछि। भाषाक स्वाभाविक प्रवाह, संगीतक माधुर्य, भावानुभूतिक तीव्रताक समन्वय सँ कवीश्वरक रामायणक काव्यसौष्ठव चरमोत्कर्ष पर अछि। भाषाक सहजता द्रष्टव्य अछि :

नाना रत्न विभूषित काय। सीता शोभा कहल न जाय॥
रानी-सहित जनक महराज। बैसला कन्यादानक काज॥[32]

छन्द-योजनाक क्षेत्र मे कवीश्वर चन्दाझाक वर्चस्व सर्वमान्य अछि। विभिन्न छन्द दासानुदास बनि हुनका पाछाँ-पाछाँ क'ल जोड़ने चलैत देखना जाइछ। कवीश्वरक रामायण मे चौहतरि गोट छन्दक प्रयोग तँ भेले अछि, तद्रिक्त उन्नैस गोट राग नामक छन्द ओ पैंतालिस गोट रागक नामयुक्त छन्दक प्रयोग सेहो भेल अछि। एहि क्षेत्र मे ओ तुलसीदासहु कैँ पछाड़ि छोड़लनि अछि। प्रो. रमानाथ झाक शब्द मे मैथिली छन्दक एहन महापण्डित एमहर दोसर नहि भेल।[33]

एतद्रिक्त कवीश्वरक रामायण मे शृंगार, वीर, शांत, करुण, रौद्र, हास्य, भयानक, अद्भुत ओ वीभत्स—एहि नओ रसक वर्णन समान रूपें भेल अछि जे कविक काव्यांग-चातुर्यक द्योतन करैछ। एहि महान काव्य ग्रन्थक अंगी रस भक्ति थिक जे यत्र तत्र सर्वत्र व्याप्त अछि। शृंगार रसक वर्णन मे मर्यादाक रक्षण, हास्य रसक वर्णन मे स्मित हासक अभिव्यंजन ओ वीररसक चित्रण मे शब्द-विस्फोटक अनुगुंजन कविक स्पृहणीय व्यक्तित्व ओ महनीय कृतित्वक परिचायक थिक। हास्य रसक एक दृष्टान्त द्रष्टव्य अछि :

दशमुख नग्न सकल परिवार। तेल लगाओल भरल विकार॥
गोबर डाबर मध्य नहाथि। खर पर चढ़ल याम्य दिश जाथि॥

तहिना कवीश्वरक रामायण मे आदि सँ अन्त धरि भारतीय एवं मिथिलाक शास्त्रीय संगीत-परम्परा विन्यस्त अछि जे एकर अपन वैशिष्ट्य थिक। 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभुः' उक्ति कैँ अक्षरशः चरितार्थ कएनिहार महामनीषी चन्दा झाक रामायण वस्तुतः विविध वैशिष्ट्यक खानि थिक, मैथिली साहित्यक मुकुट-मणि थिक ओ कवीश्वरक कीर्ति स्तंभक विजय पताका एवं मैथिली काव्यक जयघोष थिक।

मिथिला भाषा रामायण ओ रमेश्वचरित मिथिला रामायण

कवीश्वर चन्दा झा ओ कविवर लालदास आधुनिक मैथिली साहित्यक दुइ गोट महान प्रज्ञा पुरुष। एक टा गंगा तँ दोसर सिन्धु। दुहू अमर कृतिकार, दुहू महान रामायणकार। एक मिथिला भाषा रामायणक प्रणेता, दोसर रमेश्वर चरित मिथिला रामायणक रचयिता। मैथिलीक दुहू शीर्ष पुरुष मे वैचारिक भिन्नता रहलो सन्ता, दुहू मे मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक प्रति अगाध प्रेम; ज्येष्ठ-कनिष्ठ भेलो सन्ता दुहू मे मर्यादाक स्थापना ओ दुराचारक अन्त केर भाव प्रमुख। दुहुकैँ रामायणक अंगीरस भक्ति ओ प्रमुख छन्द चौपाई। एवं विधि समकालीन होइतहुँ दुहू महापुरुष मे साम्य वैषम्यक अनेक बिन्दु परिलक्षित होइछ जकर अनुशीलन-परीक्षण अपेक्षित, दुहूक तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित। दुहूक प्रशस्ति मे आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क निम्न पंक्ति द्रष्टव्य अछि :

कतबहु कवि खद्योतगण चमकथु भाषाकाश।
किन्तु चन्द्र विनु कतहु कहुँ होइछ दिशा प्रकाश?

तथा

रमारहित रामक अयन नहि अशक्ति पुरुषत्व।
लालदास रचि 'रमेश्वर-चरित' बुझाओल तत्त्व॥

एवंविधि दुहू रामायणकर्त्ताक सम्यक मनन अनुशीलन कएला उत्तर ई स्पष्ट भ'जाइछ जे दुहू सारस्वत-वरदान-विभूषित ओ राजाश्रित छलाह। कवीश्वर चन्द्राझाक आविर्भाव सन् 1830 ई. मे भेल छलनि, तँ कविवर लालदासक सन् 1856 ई. मे। कवीश्वरक निवास स्थान पिण्डारूछ छलनि, तँ कविवरक जन्मस्थान खड़ौआ। एक केर आश्रयदाता छलथिन दरभंगा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह तँ दोसरक रमेश्वर सिंह। एक संस्कृत, हिन्दी ओ मैथिली भाषाक गम्भीर विद्वान् तँ दोसर फारसी, अरबी ओ संस्कृत भाषाक वेत्ता महान। एक प्राच्यविद्या, पुरातत्व ओ प्राचीन मैथिली साहित्यक अन्यतम विशेषज्ञ ओ अन्वेषक छलाह तँ दोसर, प्राक्वाङमयक महान ज्ञाता, पौराणिक वाङमयक उद्गाता ओ शाक्तदर्शनक प्रस्तोता छलाह। दुहू मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक महान् प्रचारक ओ प्रवक्ता छलाह।

कविवर लालदास कृत रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक प्रेरणा स्रोत अछि वाल्मीकि रामायण। ई हुनक सर्वाधिक चर्चित वृहत प्रबन्धकाव्य थिक। कविवर लालदासक रामायण मे वाल्मीकि रामायणक अनुरूपें सात गोट काण्ड यथावत देलाक उत्तर एक टा नव आठम कांड 'पुष्करकाण्ड' जोड़ि देल गेल अछि जे अद्भुत रामायणक आधार पर अछि। एहि पुष्करकाण्डक कारणें उक्त रामायणक महत्ता द्विगुणित भ' गेल अछि। वस्तुतः पुष्करकाण्ड एहि रामायणक उत्कर्ष थिक।

कवीश्वरक रामायण मे सर्वत्र रामक श्रेष्ठताक वर्णन अछि, सीता कैँ कतहु राम सँ श्रेष्ठ नहि देखाओल गेल अछि। रावण द्वारा अपहृत आ प्रताड़ित सीताक मार्मिक वेदना द्रष्टव्य अछि :

चोर दशानन त्रास देखाबय, अनुचित कह वाचाल।
दनुज-वधू कह मारब-काटब, चाटब शोणित लाल॥[34]

कवीवर लालदास रामक अपेक्षा सीता कैँ अधिक महत्त्व प्रदान कएलनि अछि। एहि मे रामचरितक गान नहि क', रमा (लक्ष्मी-सीता) क ईश्वर (पति-राम) अर्थात् रमेश्वरक चरितक गान कएल गेल अछि :

जे जगदीशा ब्रह्म विरूपा अभिलाषा सुख रूपा।
निष्फल तत्त्वक आश्रयकारिणी सीता सैह अनूपा॥[35]

एवं विधि वैष्णव धर्माश्रित रामकथा मे सीताक माध्यम सँ शाक्त भावनाक

सन्निवेश रमेश्वर चरित मिथिला रामायणक सभ सँ पैघ विशेषता थिक। दुहू गौरव-ग्रन्थ मे राम कैँ परब्रह्मक रूप मे चित्रित कएल गेल अछि। लालदासक राम सेहो परब्रह्मक रूप थिकाह, विष्णुक अवतार थिकाह, मुदा राम जे कोनो कार्य करैत छथि, से शक्तिस्वरूपा सीतेक प्रेरणा सँ, कारण हुनक सीता मूल प्रकृति, त्रिगुणात्मिका परमाशक्ति, सृष्टिकर्त्ता ओ जगदम्बा थिकीह।

वर्णन-चमत्कार कवीश्वर चन्दाझा ओ कविवर लालदास दुहूक रामायण मे अनुरूपहि देखल जाइछ, मुदा ऋतु-वर्णनक क्रम मे दुहू एक दोसरा सँ भिन्न बूझि पड़ैत छथि। कवीश्वर अपन रामायण मे ऋतु वर्णन प्रसंगात कएलनि अछि, ओतहि कविवर वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त ओ शिशिर—छओ ऋतुक विशद वर्णन कएलनि अछि जे काव्य परम्पराक सर्वथा अनुकूल अछि। कवीश्वरक रामायण मे जतए ऋतु वर्णनक एक प्रकारें अभाव देखना जाइछ, ओतहि एहि प्रसंग मे कविवरक काव्य चमत्कार चरमोंत्कर्ष पर देखना जाइछ। वसन्त ऋतुक रूप सौष्ठव कैँ कविवर, कवि प्रौढ़ौक्तिक अनुरूप, परम्परति ओ विशद चित्र अंकित कएलनि अछि जे दर्शनीय अछि :

मंजुल वंजुल कुसुम सिरीश। पाटलि पटल फुलल सभ दीश॥
गुल्म लता तरु नाना रंग। सकल फुलायल मदन उमंग॥

दुहू रामायण मे युद्धक वर्णन विशद रूप मे कएल गेल अछि।

मिथिला-वर्णनक क्रम मे कवीश्वरक उक्ति—'की दिव्य भूमि मिथिला हम आबि गेलौं'—सर्वविदित अछि, मुदा जे पुष्कलता ओ सूक्ष्मता, विशदता ओ प्रतिबद्धता लालदासक वर्णन मे अछि तकर कवीश्वर मे अभाव अछि। कविवर लालदास द्वारा कएल गेल नगरक लोक ओ परिवेशक वर्णन सर्वतोभावेण प्रशंस्य ओ स्तुत्य अछि।

कवीश्वर चन्दा झाक रामायणक उत्तरकाण्ड मे राज्याभिषेकोपरान्त राम पुन: सीता कैँ वन मे निर्वासित करैत छथि। रमेश्वरचरित मिथिला रामायण मे एहि घटनाक उल्लेख नहि अछि, किन्तु सीताक एहि निर्वासनोपरान्तक घटना कैँ, हिनक करुणाकलित विलाप कैँ कवीश्वर अपन रामायण मे जाहि जीवन्तताक संग चित्रित कएलनि अछि, ओ अत्यन्त हृदयग्राही आ संवेद्य अछि। विशेषत: पति द्वारा निर्वासित भ' नैहर चलि जएबाक प्रसंग मे; सीता लोक लाज आ पिताक प्रतिष्ठाक रक्षार्थ नैहर नहि जएबाक निर्णय करैत छथि।

नैहर जौं मिथिला चलि जायब, कहत बाप की माय रे।
पुरुष-परशमणि-कर हम सोपल, अयली कि नाम हँसाय रे॥[36]

एतावता सूत्ररूप मे जँ कहल जाए तँ दुहू रामायणक रचना-क्रम, स्वरूप ओ वर्णन-विन्यास मे बेश भिन्नता लक्षित होइछ। कवीश्वरक रामायण मे भारतीय एवं

मिथिलाक शास्त्रीय संगीत परम्पराक निर्वाह सर्वत्र कएल गेल अछि, मुदा लालदासक रामायण मे संगीत तत्त्वक विरलता अछि। तहिना कवीश्वर चन्दाझाक रामायण मे वनक विन्यस्त वर्णनक जतए अभाव अछि ओतए कविवर लालदासक रामायण मे वनशोभाक विविध प्रसंगे उदात्त चित्रसभक भण्डार अछि। पिंगल-शास्त्र मे कवीश्वरक बहुज्ञता, प्रवीणता ओ अप्रतिमता सर्वमान्य अछि। एहि क्षेत्र मे ओ तुलसीदासहुँ कैँ, कान कटैत लक्षित होइत छथि। जतए कविवर लालदासक रामायण मे मात्र बारह गोट छन्दक प्रयोग भेल अछि, ओतए कवीश्वर चन्दाझाक रामायण मे शताधिक छन्दक प्रयोग भेल अछि। मैथिल संस्कृति, आचार-विचार, विधि-व्यवहारक वर्णन क्रम मे कवीश्वर ओ कविवरक दृष्टिकोण समानहि बुझना जाइछ, मुदा कतहु-कतहु लालदास चन्दा झा सँ एहि क्षेत्र मे आगाँ बढ़ल छथि। अलंकार प्रयोगक क्षेत्र मे ओना दुहू कवि अपन अलंकारप्रियताक परिचय देने छथि, मुदा एहि दिशा मे कवीश्वर ततबा उन्मुख नहि देखना जाइत छथि जतबा लालदास। पारम्परिक अलंकार प्रयोगक प्रति जे आग्रह ओ उन्मुखता लालदास मे देखना जाइछ, तकर चन्दा झा मे अभाव अछि। उपमाक प्रयोग मे जतए कवीश्वर चन्दा झा कार्पण्य देखौने छथि, ओतए कविवर लालदास उपमाक झड़ी लगा देने छथि। शृंगार-वर्णनहुँक क्षेत्र मे कविवर लालदास आगाँ देखना जाइत छथि, तथापि समग्रता मे कवीश्वर चन्द झा महत्तर छथि। मैथिलीक प्रथम रामायणकारक अभिधान कवीश्वर कैँ छनि, मैथिलीक प्रथम रामायण होएबाक गौरव मिथिला भाषा रामायणे कैँ प्राप्त छैक।

सन्दर्भ

1. स्कन्द पुराण, उत्तरकाण्ड
2. रामकथा—डॉ. कामिल बुल्के, पृ. 51
3. कवीश्वर चन्दा झा ओ हुनक मिथिला भाषा रामायण, —डॉ. अमरनाथ झा, पृ. 31
4. रामकथा : डॉ. कामिल बुल्के, पृ. 227
5. रामविजय : सं. डॉ. रामदेव झा, पृ. 15
6. बंगला साहित्यक इतिहास : डॉ. सुकुमार सेन, अनुवाद ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म
7. हिन्दी साहित्यकोश, भाग-1, सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा
8. अध्यात्म रामायण, अरण्यकाण्ड, पृ. 100
9. मिथिला भाषा रामायण, अरण्यकाण्ड, पृ. 132
10. अध्यात्म रामायण, बालकाण्ड, पृ. 13
11. प्रबन्ध संग्रह, रमानाथ झा, पृ. 205
12. वैदेही, चन्दा झा स्मृति अंक, (1964), पृ. 128
13. वाल्मीकि रामायण, खण्ड-2 किष्किन्धाकाण्ड, पृ. 969

14. मिथिला भाषा रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, पृ. 182
15. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 8
16. आनन्द रामायण, 2/17/8
17. मिथिला भाषा रामायण, सुंदरकाण्ड, पृ. 212
18. महाभारत, वनपर्व, पृ. 280/65
19. मिथिला भाषा रामायण, लंकाकाण्ड
20. RAGHUVANSAM : 13 /3, Works of Kalidas, p. 240
21. मिथिला भाषा रामायण, अयोध्याकाण्ड, पृ. 96
22. हनुमन्नाटकम्-चौखम्भा, वाराणसी, 3/12 (दामोदर मिश्र)
23. रामचरितमानस, बालकाण्ड, पृ. 153
24. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 14
25. रामचरितमानस, बालकाण्ड, पृ. 182
26. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 34
27. रामचरितमानस, बालकाण्ड, पृ. 188
28. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 40
29. मिथिला भाषा रामायण, अयोध्याकाण्ड, पृ. 96
30. मिथिला भाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ. 38
31. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 38-39
32. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 50
33. गद्य-संकलन-सम्पादक : डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, पृ. 68
34. मिथिला भाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ. 214
35. रमेश्वर चरित मिथिला रामायण, पुष्कलकाण्ड, पृ. 435
36. मिथिला भाषा रामायण, उत्तरकाण्ड, पृ. 394

मिथिलाभाषा रामायणक प्रेरणा स्रोत : अध्यात्मरामायण ओ रामचरितमानस

मैथिलीक प्रथम रामायण कवीश्वर चन्दा झा कृत 'मिथिलाभाषा रामायण' थिक जकर रचना सन् 1886 ई. मे तथा जकर प्रथम संस्करणक प्रकाशन उन्नैसम शताब्दीक प्रारम्भ मे भेल अछि। अद्यपर्यन्त एहि ग्रंथक कएक गोट संस्करण प्रकाशित भ' चुकल अछि, जाहि मे राजप्रेस दरभंगा सँ राजपंडित बलदेव मिश्र ओ प्रो. रमानाथ झाक संयुक्त सम्पादन मे प्रकाशित संस्करण (सन् 1955 ई.) सर्वतोभावेण वरेण्य अछि।

मिथिला ओ मैथिलीक प्रज्ञा-पुरुष चन्दा झा कृत 'मिथिला भाषा रामायण'क आधार स्रोत थिक महामुनि वेदव्यास कृत 'अध्यात्म रामायण'। काण्ड-संख्या, नामकरण ओ प्रत्येक काण्ड मे सर्गक संख्या मे समता देखल जा सकैछ। सुन्दर काण्ड मे अध्यात्म रामायणक पाँचम सर्गक वर्ण्य-विषय केँ चारिम अध्याय मे तथा युद्धकाण्ड मे नवम सर्गक वर्ण्य-विषय केँ कवीश्वर लंका काण्डक आठम अध्याय मे समाहित क' देने छथि। मिथिला भाषा रामायण मे सर्ग केँ अध्याय कहल गेल अछि। कवीश्वरक रामायण मे कुल 62 गोट अध्याय अछि जाहि मे बालकाण्ड मे 6, अयोध्या काण्ड मे 9, अरण्यकाण्ड मे 10, किष्किन्धकाण्ड मे 9, सुन्दरकाण्ड मे 4, लंका काण्ड मे 16 तथा उत्तरकाण्ड मे 8 गोट अध्याय निवेशित अछि। बालकाण्ड मे अध्यात्मरामायणक छठम ओ सातम सर्गक कथा मिथिलाभाषा रामायणक छठमे अध्याय मे निवेशित अछि। सुन्दरकाण्ड मे अध्यात्मरामायणक चारिम ओ पाँचम सर्गक कथा मिथिला भाषा रामायणक चारिमे अध्याय मे सन्निविष्ट अछि। उत्तरकाण्ड मे अध्यात्मरामायणक पाँचम ओ छठम सर्गक कथा केँ मिथिला भाषा रामायणक पाँचमे अध्याय मे सन्निविष्ट क' लेल गेल अछि। एवं विधि दुहू रामायणक सर्ग ओ अध्याय मे तीन संख्याक अन्तर अछि। किंच, कथा वस्तुक समानता सर्ग-सर्ग ओ अध्याय-अध्याय मे उपलब्ध अछि।

एतद्रिक्त अध्यात्मरामायण ओ मिथिला भाषा रामायण मे बहुश: एहन स्थल सभ अछि जाहि मे साम्य परिलक्षित होइछ। उदहारण स्वरूप शांतापति ऋष्यशृंग

द्वारा दशरथक पुत्रेष्टि-यज्ञक समायोजन, अहिल्योद्धार-प्रकरण, मिथिला-वर्णन, रामक दार्शनिक एवं भक्तिपरक चित्रण, रावण द्वारा श्रीरामक हाथे मारल जयबाक अभीप्सा-ज्ञापन इत्यादि प्रसंग केँ लेल जा सकैछ। अध्यात्मरामायण मे मिथिला-वर्णनक अभाव अछि। ओतए विश्वामित्रक रामसहित विदेह-नगर मे प्रविष्ट करबाक संकेत मात्र भेटैछ किन्तु मिथिला भाषा रामायण मे कवीश्वर चन्दा झा द्वारा मिथिलाक गौरव-गरिमा, सांस्कृतिक पृष्ठाधार ओ लौकिक विध-व्यवहारक विषद वर्णन कएल गेल अछि जे मिथिला मैथिलीक प्रति हुनक अनन्य अनुरागक द्योतन करैछ। तदर्थ ओ मिथिलाक नगरीय परिवेश, जन-संस्कृति तथा लोक-व्यवहारक वर्णन तँ करबे करैत छथि, संगहि मिथिला सुन्दरीक सौन्दर्य-सुषमाक चित्रांकन करबाक भाव केँ संवरित नहि क' पबैत छथि :

नारि सुनयना शुभमती कुल दैवत लज्जावती।
सकल रसज्ञा नतिमती मत्त-मतङ्ग्ज-वर-गती॥[1]

अध्यात्म रामायण मे श्रीराम सर्वत्र वेदान्त सम्मत ब्रह्म रूप मे प्रतिष्ठित भेल छथि। एहि रामायणक अरण्यकाण्डक प्रारम्भहि मे राम स्वयं केँ ब्रह्म, लक्ष्ण केँ जीव ओ सीता केँ मायाक रूप मे प्रस्थापित कयलनि अछि :

अग्रे यास्याम्यहं पश्चात्त्वमन्वेहि धनुर्धरः।
आवयोर्मध्यगा सीता मायेवात्म परात्मनोः॥[2]

अध्यात्म रामायण मे अरण्यकाण्डक वर्ण्य-वस्तु दस सर्ग मे नियोजित अछि जकरा यथावत् कवीश्वर अपन रामायण मे दस अध्याय मे तँ विभाजित करबे कयलनि अछि, उपरि उद्धृत श्लोक केँ सेहो यथावत् प्रस्तुत क' देलनि अछि :

आगाँ हम पाछाँ अहाँ, सीता माझहि ठाम।
ब्रह्म जीव माया जेहनि, चलु दण्डक वन नाम॥[3]

मिथिला भाषा रामायण मे एहन अनेकहु प्रसंग ओ स्थल अछि जाहि पर अध्यात्म रामायणक स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होइछ। अध्यात्म रामायण मे बालकाण्डक दोसर सर्ग मे पार्वतीक उक्ति छनि :

धन्यास्म्यनुगृहीतास्मि कतार्थास्मि जगत्प्रभो।
विच्छिन्नो मेड़तिसन्देह ग्रन्थि र्भवदनुग्रहात्॥1॥

त्वन्मुखाद्गलितं रामतत्त्वामृतरसायनम्।
पिबन्त्या मे मनोदेव न तृप्याति भवापहम्॥2॥

श्रीरामस्य कथा त्वत्तः श्रुता संक्षेपतो मया।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि विस्तरेण स्फुटाक्षरम्॥3॥[4]

उपर्युक्त श्लोकहुक मिथिला भाषा रामायण मे यथावत् अनुकृति कएल गेल अछि। एतद्रिक्त आनहु अनेक प्रसंग अछि जकर मिथिला भाषा रामायण मे भावानुवाद कएल गेल अछि। दुहू रामायणक पर्यवेक्षण कयला सन्ता ई स्पष्ट भ' जाइछ जे कवीश्वरक रामायणक मूल उप-जीव्य अध्यात्म रामायणे अछि। इएह कारण जे आचार्य रमानाथ झा कहने छथि—''कवीश्वर अपन रामायणक रचना अध्यात्म रामायणक आधार पर कयल ओ से मूल सँ ततेक अधिक मिलैत अछि जे एकरा अध्यात्म रामायणक अनुवादो कही तँ दोष नहि।''[5] एतावता मिथिला भाषा रामायणक आधार-स्रोत अध्यात्म रामायण अछि से तँ निर्विवाद अछि, किन्तु मिथिला भाषा रामायण केँ ओकर अनुवाद मात्र कहि देब संगत नहि बुझना जाइछ। गोस्वामी तुलसी दास जेना 'रामचरितमानस'क प्रारम्भहि मे ''नाना पुराणनिगमागमसम्मतं'' कहि अपन आधार-क्षेत्रक व्याप्ति दिस संकेत द' चुकल छथि, ताहि रूपक कवि द्वारा देल गेल कोनो साक्ष्य अद्यपर्यन्त उपलब्ध नहि अछि, तथापि हुनक व्यापक आधार स्रोत केँ अस्वीकार नहि कएल जा सकैछ। हमरा विचारेँ जे स्थान हिन्दी मे 'रामचरितमानस' केँ थिक, मैथिली मे सएह स्थान 'मिथिला भाषा रामयणक' छैक। की विषय-वस्तु, की प्रस्तुति, की भाषा, की शैली; की कवि-कल्पना, की मौलिक उद्‌भावना-सभ क्षेत्र मे अद्वितिय, अप्रतिम।

अध्यात्म रामायणे जकाँ वाल्मीकि रामायणहुक यत्किंचित प्रभाव कवीश्वरक रामायण पर देखना जाइछ। आदि कवि महर्षि वाल्मीकि-विरचित 'वाल्मीकि रामायण' रामकाव्य सँ सम्बद्ध आदिकाव्य थिक। सभ रामकाव्यक आदि स्रोत इएह ग्रंथ रहल अछि। रामकथा सँ सम्बद्ध सभ रामोपाख्यानक मूल प्रेरणा-स्रोत इएह आर्ष-ग्रंथ रहल अछि। तदर्थ वाल्मीकि रामायण सँ प्रभावित होयब कवीश्वरक लेल स्वाभाविक। कवीश्वर चंदा झा कोनो सामान्य लोक नहि छलाह। हुनका मे विपुल प्रतिभा ओ विशाल दृष्टि छलनि। ओ अपना युगक अधीत विद्वान ओ अनुसंधित्व छलाह, हुनक दृष्टिक आस्फालन विभिन्न भाषाक क्षितिज केँ स्पर्श कयने छल। हुनका मिथिलाक राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक ओ साहित्यिक परिवेशक पूर्ण अभिज्ञान छलनि। इएह कारण जे नवयुग-प्रवर्तक चन्दाझाक संदर्भ मे विश्व-विश्रुत भाषा तत्त्वविद् जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (G.A. GRIERSON) अपन उद्गार व्यक्त कयने छथि :

...Pandit Chandra (Chanda) Jha whom I know to be one of the most learned men in that part of India.[6]

तात्पर्य ई जे गहन अध्ययन ओ गंभीर चिंतन मननक पश्चाते कवीश्वर अपन रामायणक प्रणयन प्रारम्भ कयलनि। ओ वाल्मीकि सँ प्रारम्भ क' व्यासकृत विभिन्न पुराण ओ तत्पश्चात् संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा लोकभाषा साहित्य केँ अपन

रामायणक उपजीव्य बनौलनि जे सर्वथा स्वाभाविक छल। इएह कारण जे वाल्मीकि रामायणक यत्किंचित प्रभाव मिथिला भाषा रामायण पर परिलक्षित होइछ। किछु दृष्टांत द्रष्टव्य थिक। वसिष्ठमुनि दशरथ केँ पुत्रेष्टि यज्ञ करबाक हेतु ऋष्यशृंग ओ शांता केँ आमंत्रित करबाक परामर्श दैत छथिन जकर स्रोत वाल्मीकि रामायण थिक। अध्यात्म रामायण ओ रामचरितमानस मे ई कथा अति संक्षिप्त अछि। किंतु वाल्मीकि रामायण सँ प्रभावित भ' कवीश्वर एहि प्रसंगक अत्यन्त विस्तृत वर्णन कयलनि अछि। अत: स्पष्ट अछि जे मिथिला भाषा रामायणक उक्त कथा-प्रसंग वाल्मीकि रामायणे पर आधृत थिक।

एतबहि नहि, वाल्मीकि रामायणक सुग्रीव द्वारा कुम्भकर्णक नाक-कान काटल जयबाक प्रसंग, मेघनादक युद्ध मे राम-लक्ष्मणक नागपाश मे बद्ध भेला उत्तर सीता-विलापक प्रसंग, किष्किन्धा काण्ड मे रामक विरह-दशाक प्रसंग मे कवीश्वर पर वाल्मीकि रामायणक स्पष्ट प्रभाव परीक्षणीय अछि। रामक विरह-दशाक क्रम मे वर्षाऋतु ओ शरदऋतुक उद्दीपकताक चित्रण भेल अछि। वाल्मीकि रामायण मे वर्णन अछि :

निद्रा शनैः केशवमभ्युपैति द्रुतं नदी सागरमभ्युपैति।
हृष्टा बलाका धनमभ्युपैति कान्ता सकामा प्रियमभ्युपैति॥[7]

कवीश्वरक वर्णन तुलनीय अछि :

निद्रा केशव तन लपटाथि। सरित सकल सुखसागर जाथि॥
विशद बलाका गगन समाथि। विरहीजन मनमन अकुलाथि॥[8]

यद्यपि अध्यात्म रामायण मे सेहो विरह-वर्णनक चित्रण अछि, किन्तु कवीश्वरक वर्णन ओहि सँ भिन्न अछि। स्पष्ट अछि जे कवीश्वर एत' वाल्मीकि रामायणक अनुसरण कयने छथि।

तद्वत् वन-गमनक प्रसंग मे कवीश्वर अपन रामायण मे सीता, राम आ लक्ष्मण केँ बाट मे गंगा पार करबा काल नाव पर चढ़ि सीता केँ गंगा सँ प्रार्थना करैत देखौलनि अछि, जकर सादृश्यता 'आनन्द रामायण' मे उपलब्ध प्रसंग सँ तुलनीय अछि। एतबहि नहि, कवीश्वरक रामायण मे सीताक निन्दा एक धोबिन द्वारा भेल अछि, जे आनन्दरामायण मे सेहो अछि, मुदा वाल्मीकि रामायण तथा अध्यात्म रामायण मे एकर चर्चा नहि भेल अछि। एतद्रिक्त मिथिला भाषा रामायणक बालकाण्ड मे एक आओर प्रसंग आएल अछि जत' रामकथाक अनन्तताक संदर्भ मे शिवजी पार्वती सँ कहैत छथिन :

कति बेरि राम लेल अवतार, कति बेरि हरलनि अवनी भार।
ओ रामायण अछि शतकोटि, ब्रह्म लोक महिमा बड़ि गोटि॥[9]

एहि प्रसंग मे आनन्द रामायणक उक्ति ध्यातव्य अछि :

चरित रघुनाथस्य शत कोटि प्रविस्तरम्।
एकैकमक्षर पुंसा महापातकनाशनम्॥[10]

अत: स्पष्ट अछि जे कवीश्वरक उपर्युक्त अंशक प्रभाव-स्रोत आनन्द रामायण अछि।

महाभारत मे रामकथाक वर्णन यद्यपि अत्यन्त संक्षिप्त रूप मे भेल अछि, मुदा कवीश्वरक रामायण मे अनेक स्थल पर महाभारतक प्रभाव सेहो लक्षित होइछ। रावण ओ मारीचक प्रसंग मे दुहू ग्रंथक वर्णन-साम्य परीक्ष्य अछि। एतद्रिक्त रावणक संदर्भ मे कवीश्वरक रामायणक निम्न प्रसंग तँ महाभारत सँ यथावत गृहीत बुझना जाइछ :

दशमुख नग्न सकल परिवार। तेल लगाओल भरल विकार॥
गोबर डाबर मध्य नहाथि खर पर चढ़ल ग्राम्य दिश जाथि॥[11]

महाभारत मे ई श्लोक एहि प्रकारें अंकित अछि :

तैलाभिषिक्तो विकचो मज्जन पंके दशाननः।
असकृत् खरयुक्ते तु रथे नृत्यन्निवस्थितः॥[12]

एतद्रिक्त मिथिला भाषा रामायण पर महाकवि कालिदास कृत रघुवंश महाकाव्यहुक प्रभाव कतिपय स्थल पर परिलक्षित होइछ। कवीश्वरक रामायण मे सेतुबन्ध निर्माणक समय रामक क्रोध एहि रूपें व्यक्त भेल अछि :

कहल प्रभुजलनिधि महाजड़, कयल अति अपमान।
खनल हमरे पूर्व्व पुरुष, अहित हमरे मान॥[13]

उपर्युक्त कथन पर 'रघुवंश' महाकाव्यक स्पष्ट प्रभाव द्रष्टव्य अछि :

गुरोथियक्षोः कपिलेन मेध्ये रसातलं संक्रमिते तुरंगे।
तदर्थमुर्वीभवदारयद्भिः पूर्वैः किलायं परिवर्धितोनः॥[14]

'रघुवंश'क अतिरिक्त मिथिलाभाषा रामायण पर 'प्रसन्न राघव' तथा 'हनुमन्नाटक'क प्रभाव सेहो यत्किंचित परिलक्षित होइछ। अयोध्या सँ वनगमनक हेतु प्रथान कयलाक पश्चात मार्ग मे सीताक कष्टक वर्णन, अंगद द्वारा रावण केँ काँख त'र दबयबाक वर्णन आदि प्रसंग मे मिथिला भाषा रामायण पर हनुमन्नाटकक स्पष्ट प्रभाव लक्षित होइछ। वन-गमनक हेतु अयोध्या सँ प्रस्थान कयलाक पश्चात मार्ग मे सीताक कष्टक वर्णन कवीश्वर एहि प्रकारें कयलनि अछि :

सिरिस कुसुम सन तन सुकुमारि। पुरि परिसर मे जनक दुलारि।
चलि नहि सकथि कहथि से घूरि। दंडक वन प्रिय अछि कतदूरि॥15

'हनुमन्नाटक' मे एहि प्रसंगक वर्णन एहि प्रकारें कयलनि अछि :

सद्यः परी-परिसरेषु शिरीषमृद्वीगत्वाजवात्रि चतुराणिपदानिसीता
गन्तव्यमस्ति कियदित्यसकृद ब्रुर्वाणा रामाश्रुणः कृतवती प्रथमावतारम्॥[16]

उपरि उद्धृत ग्रंथसभक अतिरिक्त 'रामचरितमानस'क सेहो प्रभूत मात्रा मे प्रभाव परिलक्षित होइछ। 'रामचरितमानस'क प्रभाव तँ भारतीय भाषाक विभिन्न साहित्य पर पड़बे कएल, ओकर व्यापक प्रभाव सम्पूर्ण मिथिलांचल पर सेहो पड़ल। अपना समयक अधीत विद्वान कवीश्वर चन्दा झा पर 'रामचरितमानस'क प्रभाव पड़ब स्वाभाविक छल। ओ अपन रामायणक विभिन्न स्थल पर 'मानस' सँ सेहो प्रभावित भेल छथि। शांतापति ऋष्यशृंगक दशरथक ओतए पुत्रेष्टियज्ञ करब पुराण एवं विभिन्न साहित्यक एक प्रचलित प्रकरण अछि। एहि प्रसंगक 'रामचरितमानस' मे संक्षिप्त उल्लेख कएल गेल अछि, यथा :

सृंगी रिषिहि वसिष्ट बोलावा। पुत्रकाम सुभजग्य करावा॥
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनिचरू करलीन्हें॥[17]

कवीश्वर चन्दाझा एहि प्रसंगक विस्तृत वर्णन अपन रामायण मे कयलनि अछि। एतए राजा केँ पुत्र-प्राप्तिक मंत्रणा दैत वसिष्ठ कहैत छथिन जे मित्र-जामाता शांतापति द्वारा कएल गेल यज्ञ सँ पुत्र-प्राप्ति संभव अछि। अत: हुनका बजायब आवश्यक :

शान्ता-स्वामी मित्र जमाय। आनू तनिका अपनहि जाय।
काम-यज्ञ करू विधि साँ भूप। हमरा सब मिलि कर्म्म अनूप॥[18]

एतद्रिक्त दुहू रामायण मे अनेक स्थल पर सादृश्यता परिलक्षित होइछ। उदाहरणस्वरूप मिथिलाक शोभा-वर्णन, पुष्प-वाटिका मे राम-सीताक साक्षात्कार ओ दुहूक हृदय मे पूर्वरागक उदय, धनुष यज्ञक आयोजन, अंगद-रावण-संवाद, सीता हरण ओ सीता-विलाप आदि केँ लेल जा सकैछ। रामचरितमानसक सीता, माय केँ आज्ञा सँ गिरिजा-पूजनक हेतु सखी लोकनिक संग पुष्प-वाटिका मे जाइत छथि। तुलसीदास एहि प्रसंग केँ निम्न रूपें उद्घाटित करैत छथि :

तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई॥[19]

कवीश्वर उपर्युक्त वर्णन सँ कतबा प्रभावित छथि, तकर प्रकटीकरण निम्न पंक्ति मे भेल अछि :

गिरिजा देवी पूजि मनाउ। माय कहल जानकि अहँ जाउ॥[20]

इएह ओ स्थल अछि जतए राम-सीमा एक दोसराक सौन्दर्य-सुषमा केँ प्रति आकर्षित होइत छथि तथा दुहूक हृदय मे पूर्व रागक उदय होइत अछि। एहि प्रसंग केँ तुलसीदास परम्परागत रूढ़ि केँ अधिक महत्त्व द' सीताक वाम अंग फड़कवाक वृतान्तक उल्लेख कयलनि अछि :

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल वामअंग फरकन लगे।[21]

तुलसीदासक उपर्युक्त कथन सँ कवीश्वर चन्दा झा एतवा अधिक प्रभावित

भेल छथि जे यथावत् ओकर अनुकृति अपन रामायण मे उतारि देलनि अछि :

गौरि पूजि पद कयल प्रणाम फरकल बेरि-बेरि अंग वाम॥[22]

एतबहि नहि, सीता-हरणक परिणामस्वरूप सीता विलापक प्रसंग मे दुहू कविक उक्ति तुलनीय अछि। तुलसीदासक 'मानस' मे सीताक कथन द्रष्टव्य अछि :

हा लछिमन तुम्हार नहि दोसा। सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोसा॥
विविध विलाप करत वैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही॥[23]

कवीश्वर उपर्युक्त प्रसंगक उल्लेख अपन रामायण मे एहि प्रकारें कयलनि अछि जे ओहि पर रामचरितमानसक अतिशय प्रभाव परिलक्षित होइछ। जानकीक पश्चाताप निम्न शब्द मे भेल अछि :

हा लक्ष्मण कछु अहँक न दोष भल कहइत हम कयलहुँ रोष॥[24]

एतबहि नहि, कवीश्वरक रामायणक प्रत्येक काण्ड रामचरितमानस सँ प्रभावित अछि। किष्किन्धाकाण्डक वर्षा वर्णन दुहू रामायण मे समान रूपें कएल गेल अछि। सादृश्यताक आभास द्रष्टव्य अछि।

दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई। वेदन पढ़हि जनु बटु समुदाई॥
नव पल्लव भ' विटप अनेका। साधक मन जस मिलें बिबेका॥[25]

रामचरित मानस सदृश्य मिथिला भाषा रामायणक वर्षा-वर्णन तुलनीय अछि :

भेक अनेक वचन उच्चार जनु पटु वटु रटु श्रुतिस्वर सार।
धन सुख सुग्रीवहि केँ प्राप्त दार-सहित अरि शूर समाप्त॥[26]

एतदरिक्त पुष्प-वाटिका मे राम ओ सीताक परस्पर साक्षात्कार भेला उत्तर दुहूक हृदय मे पूर्वरागक उदय होइछ। एहि संदर्भ मे दुहू रामायण मे विशद वर्णन कएल गेल अछि। अध्यात्म रामायण तथा वाल्मीकि रामायण मे एकर अभाव अछि। स्पष्ट अछि जे कवीश्वरक एहि वर्णनक आधार-स्रोत 'मानस'हि रहल अछि। कवीश्वरक रामायण मे जे धनुष यज्ञक आयोजनक वर्णन अछि ताहू पर 'मानस'क प्रभाव परिलक्षित होइछ। कारण अध्यात्म रामायण ओ वाल्मीकि रामायण मे एकर अभाव अछि। कवीश्वरक रामायण मे वर्णित अंगद-रावण-संवाद, सुरसा द्वारा हनुमानक परीक्षा, जनकपुरक शोभा-वर्णन, धनुष भंगक प्रसंग, 'यस्यांके च विभति भूधर' बला शिव वन्दनाक श्लोक, अहल्योद्धार, शबरी आदि अनेक स्थल पर 'मानस'क स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होइछ।

एतावता ई स्पष्ट अछि जे रामकथा केँ ल'क' जतबा ग्रंथक प्रणयन भेल अछि, ओतबा अओर कोनो कथानक ल'क' नहि। सुतरां निर्णित अछि जे मिथिला भाषा रामायणक मूल आधार अध्यात्म रामायणहि अछि। एतद्रिक्त एहि पर वाल्मीकि रामायण, अद्भुत रामायण, आनन्दरामायण, ब्रह्माण्ड पुराण, भागवत पुराण, रघुवंश,

प्रसन्न राघव, हनुमन्नाटक, रामचरितमानस, कृत्तिवास रामायण आदि ग्रंथक स्पष्ट प्रभाव पड़ल अछि। हमरा दृष्टि मे कवीश्वरक रामायणक दोसर उपजीव्य 'रामचरितमानस' रहल अछि। सीताक चारित्रित उत्कर्ष-रक्षण ओ रावण-वध सँ पूर्व रामद्वारा देवी पूजन पर बंगलाक कृत्तिवास रामायणक प्रभाव परीक्षणीय अछि।

सन्दर्भ

1. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 31
2. अध्यात्म रामायण, अरण्यकाण्ड, पृ. 100
3. मिथिला भाषा रामायण, अरण्यकाण्ड, पृ. 132
4. अध्यात्म रामायण, बालकाण्ड, पृ. 13
5. प्रबन्ध संग्रह, रमानाथ झा, पृ. 205
6. वैदेही, चन्दा झा स्मृति अंक, (1964), पृ. 128
7. वाल्मीकि रामायण, खण्ड-2, किष्किन्धाकाण्ड, पृ. 969
   द्रष्टव्य : Sleep slowly steals over lord vishnu; the river runs swiftly to the sea, the female, heron joyously moves on her wings to the cloud; while a loved woman full of loving approaches her darlings.
8. मिथिला भाषा रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, पृ. 182
9. धोबिन रूसि गेलि छलि घरसौं, धोबिकहल खिसिआय।
   जेहने नृपति प्रजा-गति तेहनि, राजा कर से न्याय॥ (मि.भा.रा. पृ. 39)
10. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 8
11. आनन्द रामायण, 2.17.8
12. मिथिला भाषा रामायण, सुन्दरकाण्ड, पृ. 212
13. महाभारत, वनपर्व, 280/65
14. मिथिला भाषा रामायण, लंकाकाण्ड, पृ. 280/65
15. RAGHUVANSAM : 13/3, Work of Kalidas, P. 240
16. मिथिलाभाषा रामायण, अयोध्याकाण्ड, पृ. 96
17. हनुमन्नाटकम्—चौखम्भा, वाराणसी, 3/12 (दामोदर मिश्र)
18. रामचरितमानस, बालकाण्ड, पृ. 153
21. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 14
22. रामचरितमानस, बालकाण्ड, पृ. 188
23. मिथिला भाषा रामायण, बालकाण्ड, पृ. 40
24. रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, पृ. 427
25. मिथिला भाषा रामायण, अरण्यकाण्ड, पृ. 156
26. रामचरितमानस, किष्किन्धा काण्ड, पृ. 450
27. मिथिला भाषा रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, पृ. 182

आलोचनाक संकट आ संकटक आलोचना

'आलोचना' शब्द लोचृ वा लोच सँ बनल अछि—आ+√लोच+अन+आ = आलोचना किंवा आ+√लोच+ल्युट (अन) = अलोचना। लोच वा लोचृक अर्थ होइछ देखब। तें कोनहु वस्तु वा कृतिक सम्यक व्याख्या, ओकर, मूल्यांकन आदि करब आलोचना थिक—आसमन्तात् लोचनम्, स्त्रियां आलोचना। आलोचक कोनो लेख वा कविता कें देखैत वा परीक्षण करैत छथि। 'परीक्षा'क अर्थ सेहो चारू भर सँ देखब होइछ 'परित: ईक्षा—परीक्षा।

उपस्थापन : आलोचना कवि वा लेखक आ पाठकक बीच शृंखलाक काज करैछ। कवि-कर्म कें प्रकाश मे आनबे टा कें राजशेखर (काव्यमीमांसा) भावयित्री प्रतिभा वा आलोचकक प्रतिभा कहलनि अछि। जहिना कवि-कर्मक हेतु कारयित्री प्रतिभा आवश्यक, तहिना समालोचना-कर्मक हेतु भावयित्री प्रतिभा। अपन एही प्रतिभा द्वारा आलोचक कोनो कृति कें नीक जकाँ देखैत छथि आ ओकर गुण-दोष सँ परिचित भ' आनो कें ओहि सँ परिचित करबैत छथि। अपन एही प्रतिभा द्वारा ओ कोनो काव्य-कृतिक नव भावबोधक नव आयाम, सौन्दर्य-बोधक नव स्तर आ मूल्यबोधक नव परिप्रेक्ष्यक उद्घाटन करैत छथि। कोनो कवि वा लेखकक कृति मे मानव-हृदयक कतबा आ केहन सुन्दरताक संग चित्रण भेल अछि, ताहि तथ्यक सम्यक् उद्घाटन करब आलोचकक उद्देश्य होइछ। साहित्य मे छिड़िआएल-भोतिआएल विभूतिक सौन्दर्य कें पाठक वा प्रमाताक समक्ष उपस्थित करब आलोचकक मुख्य कर्म होइछ। आलोचक कें मूल्यक निर्धारक मानल गेल अछि। कोनो रचना नीक अछि वा अधलाह, समय-सापेक्ष आ परम्परा सँ सम्बद्ध अछि वा नहि, तकर पता लगाएब, बिखिया क' देखब आलोचकक कर्त्तव्य होइछ। एतावता आलोचना—कर्म अत्यंत कठिन अछि आ महत्त्वपूर्ण अछि। ई कार्य मात्र भावयित्री प्रतिभा सँ सम्भव नहि। एकरा हेतु गहन अध्ययनक अपेक्षा छैक, काव्यशास्त्रक ज्ञान अपेक्षित छैक। सुतरां समालोचना-कर्म मात्र भावयित्री प्रतिभे सँ नहि सम्पन्न भ' सकैछ, तदर्थ गहन अध्ययन, परिश्रम आ शास्त्रीय ज्ञान सेहो अपेक्षित अछि।

आधार-बिन्दु : मैथिली मे हिन्दीए जकाँ 'आलोचना' वा 'समालोचना' शब्द अंग्रेजीक 'क्रिटिसिज्म'क पर्यायक रूप मे लेल जाइछ। किछु गोटय 'समीक्षा' शब्दक प्रयोग परिचयात्मक अध्ययनक रूप मे क' एकरा संकुचित अर्थ प्रदान करैछ जे भ्रामक थिक। वस्तुतः समीक्षा अर्थात् नीक जकाँ देखब वा जाँच करब—'सम्यक ईक्षा वा ईक्षणम्' सँ स्पष्ट होइछ जे कोनो वस्तु, रचना अथवा विषयक सम्बन्ध मे सम्यक् ज्ञान प्राप्त करब, प्रत्येक तत्वक विवेचन करब समीक्षा थिक। एवं विध 'आलोचना' आ 'समीक्षा' मे कोनो अन्तर नहि, दुनू पर्यायवाची शब्द थिक। दुनूक एकहि अर्थ मे प्रयोग होइछ। भारत मे सर्वप्रथम राजशेखर अपन 'काव्यमीमांसा' मे समीक्षा वा समालोचनाक सूत्रपात कयलनि। यूरोप मे पाँचम शताब्दी मे यवन दार्शनिक अरस्तू (Aristotle)क विख्यात ग्रंथ 'Poetics' (काव्यशास्त्र) सँ एकर सूत्रपात भेल। मैथिली मे परम्परा सँ आलाचनाक सूत्रपात कवीश्वर चन्दा झा (1830-1908) सँ मानल जाइछ।

प्राचीन भारतीय साहित्य मे आलोचनाक अनेक पद्धति उपलब्ध अछि। पाश्चात्य साहित्यहु मे समय-समय पर आलाचनाक अनेक पद्धति प्रचलित रहल अछि आ एखनहु अछि। मैथिली मे पूर्णतः प्राचीन पद्धति वा पाश्चात्य पद्धति किंवा मिश्रित पद्धति केँ अपनाओल गेल अछि। मैथिली आलोचक वर्ग मे अधिकांशतः आदर्शवादी, कतिपय आदर्शोन्मुख यथार्थवादी आ यत्किंचित प्रगतिवादी विचार धाराक संवाहक छथि। सम्प्रति पौर्वात्य आ पाश्चात्य मे जाहि आलोचना पद्धति केँ अपनाओल जाइछ, ताहि मे—प्रभावात्मक, अनुभावात्मक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, निर्णयात्मक, अभिव्यंजनावादी, नैसर्गिक, जीवनवृत्तान्तीय, कार्यात्मक, क्रियात्मक, तात्विक, मार्क्सवादी, भौतिकवादी, यथार्थवादी, समाज-शास्त्री, शास्त्रीय, गवेषणात्मक, व्याख्यात्मक, आत्मगत आदि आलोचना-पद्धति प्रमुख अछि। मैथिली मे मुख्यतः यत्किंचित पारम्परिक, गवेषणात्मक (ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक, चरित्रात्मक आदि) आ निर्णयात्मक (आदर्शात्मक, तुलनात्मक, अध्ययनात्मक आदि) केर दर्शन होइछ। एही दुनूक अतर्गत आओरो अनेकहु शाखा-प्रशाखा विकसित भेल अछि, मुदा सम्प्रति दू गोट आलोचना पद्धतिक विशेष प्रचलन अछि, आ से थिक—शास्त्रीय आलोचना (रूढ़िवादी, परम्परावादी, रूपवादी, यथास्थितिवादी) आ मार्क्सवादी वा प्रगतिवादी आलोचना। एवं विध, एही दुनू आलोचना पद्धति केँ ध्यान मे राखि, मैथिली आलोचना, ओकर संकट आ समाधान केँ हम प्रस्तुत करबाक प्रयास करब, जे हमर प्रतिपाद्य अछि। एहि सँ पूर्व शास्त्रीय आ प्रगतिवादी आलोचनाक स्पष्टीकरण आवश्यक, जे प्रेषित कएल जा रहल अछि।

शास्त्रीय आलोचना

यूरोप मे शास्त्रीय पद्धतिक प्रचार वा तँ मानवतावाद अथवा प्राचीन श्रेष्ठ साहित्यक अनुसरणक प्रवृत्तिक रूप मे भेल अथवा अरस्तू (Aristotle) केर प्रसिद्ध ग्रंथ 'पोइटिक्स' (Poetics) केर प्रभावक रूप मे अथवा तर्क प्रधानताक कारणें भेल। प्राचीन रचना सँ प्रेरणा ग्रहण क' साहित्यकार लोकनि काव्यमीमांसा सम्बन्धी ग्रंथ सभक रचना कएल आ एहि प्रकारें शास्त्रीय अनुकरणक परम्परा प्रारम्भ भेल। आलोचनाक ध्यान काव्य मे शब्द-चमत्कार, काव्य-विन्यास, शब्द-योजना, छन्द, औचित्य आदि बाह्य उपादान दिस गेल। आर्नाल्ड, गिलबर्ट मरे आ टी.एस. इलियट सदृश समर्थ आलोचकहु कोने-ने-कोनो रूपें अरस्तू, होमर आदिक महत्ता केँ स्वीकार कयलनि अछि। भारतहु मे शास्त्रीय आलोचना पद्धतिक प्रचार अति प्राचीन काल सँ आबि रहल अछि। श्रव्यकाव्य, दृश्यकाव्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य, रस-निरूपण, गद्य, पद्य, चम्पू, नायक, नायिका, नाट्य-रचना आदिक सम्बन्ध मे जे नियम निर्धारित भ' चुकल छल, तकरहि अनुसार आइयो किंबहुना साहित्य-समीक्षा कएल जाइत अछि। नियमबद्धते शास्त्रीय शैली केँ निर्धारित करैछ। शास्त्रीय पद्धति केँ अंग्रेजी मे 'क्लासिकल' (Classical) कहल जाइछ। शास्त्रीय वा 'क्लासिकल' केर विपरीत 'रोमानसिकता' अछि, जाहि मे कल्पनात्मकता आ स्वच्छन्दताक प्राधान्य रहैछ। आधुनिक आलोचना, शास्त्रीयता आ रोमानसिकता मे कोनो पार्थक्य नहि मानैत अछि, ओकरा विरोध तँ यथार्थ सँ रहैत छैक। निर्णयात्मक आलोचना, शास्त्रीय आलोचनेक व्यावहारिक रूप थिक आ एकरा सैद्धान्तिक आलोचना सेहो कहल जाइछ। ई वर्ग, विश्लेषणात्मक पद्धतिक पोषक अछि। एकर शैली मे काव्य-वस्तुक अन्तर्वृत्तिक विश्लेषणक प्रवृत्ति पाओल जाइछ। ई आलोचना भावुकताक क्रीड़ा नहि, अपितु गंभीर अध्ययन, विवेचन आ स्पष्ट विश्लेषणक परिणाम होइछ। साहित्यक निश्चित सिद्धांत मे, एहि वर्गक आलोचक केँ दृढ़ आस्था आ विश्वास रहैछ। हिनका लोकनिक सभ सँ पैघ विशेषता होइछ न्यायसंगत निष्पक्षता। एहि प्रकारक आलोचना बहुत अंश धरि सृजनात्मक होइछ। एकरहि आदर्शवादी आलोचना सेहो कहल जाइछ।

प्रगतिवादी आलोचना

शास्त्रीय ओाचनाक विपरीत अंग्रेजी मे जकरा 'मार्क्सिस्ट' (Marxist) कहल जाइछ, ओकरहि मार्क्सवादी, प्रगतिवादी वा द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी आलोचना कहल जाइछ। दर्शनक क्षेत्र मे जकरा मार्क्सवाद कहल जाइछ, साहित्य मे ओकरहि प्रगतिवादक अभिधा सँ अलंकृत कएल जाइछ। एहि धाराक प्रवर्तक जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स केँ मानल जाइछ। साहित्यक गतिशील आ ऐतिहासिक सम्बन्ध केँ उद्घाटित करैत,

सचेतन रूप मे समाज केँ बदलयवला साहित्यक सृष्टि दिस ध्यान आकर्षित कयनिहार समाजशास्त्रीय आलोचना केँ मार्क्सवादी आलोचना कहल जाइछ। एहि आलोचना मे मार्क्सक द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, वर्ग-संघर्ष तथा अन्य सभ सिद्धान्त केँ साहित्यक मूल्य निर्धारित करबाक कसौटी मानल जाइछ। सिडनी हुक केर अनुसार मार्क्स इतिहासक तर्क आ भावक काव्य केँ समन्वित करबाक प्रयास कयलनि अछि। इंगलैण्ड मे हर्बर्ट रीड, सी.डी.लेविस, स्टीफेन स्पेण्डर आ अमेरिका मे बी.एफ. कालवर्टन, ग्रैन्विल हिक्स, माइकेल गोल्ड, जोजफ फ्री मैन, बर्नार्ड स्मिथ आदि विचारक एही प्रणालीक समर्थक रहलाह अछि।

एवंविध, उपर्युक्त दुनू आलोचना पद्धतिक विश्लेषणक पश्चात् मैथिली आलोचनाक सन्दर्भ मे हम अपन विचार प्रस्तुत करब, जे हमर काम्य-विषय थिक।

मैथिली आलोचना साहित्य

मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा मे सभ सँ क्लान्त अवस्था मैथिली आलोचनेक अछि। तथापि साहित्य-परम्पराक अनुसारें मैथिली आलोचनाक प्रादुर्भाव कवीश्वर चन्दा झा द्वारा लिखित विभिन्न पोथीक भूमिका सँ मानल जाइछ। एहि पारम्परिक आलोचनाक विकास मे महामहोपाध्याय डॉ. गङ्गानाथ झा, डॉ. अमरनाथ झा, महामहोपाध्याय डॉ. उमेश मिश्र, कुमार गंगानन्द सिंह, पं. शिवनन्दन ठाकुर, नरेन्द्रनाथ दास आदिक विशेष योगदान रहलनि अछि। हिनका लोकनि मैथिली आलोचनाक विकास-यज्ञ मे हविसाक कार्य कयने छथि।

आचार्य रमानाथ झा

आधुनिक आलोचनाक सूत्रपात वस्तुतः आ. रमानाथ झाक आलोचना सँ होइत अछि। हिनका चिंतन प्रधान आलोचनाक जनक कहल जा सकैछ। ओ जन्म-जात आलोचक छलाह आ साधिकार निर्धोख भ' लिखैत छलाह। तें हिनक आलोचना नीर-क्षीर-विवेकी आलोचना थिक। हिनका सँ पूर्व मैथिली मे शोध आ आलोचना, नितान्त अविकसित अवस्था मे छल। यद्यपि आचार्य प्रवर कोनो स्वतंत्र आलोचना-ग्रंथ नहि लिखलनि, मुदा अपन संकलन तथा ओकर भूमिका आ टिप्पणी सभक अतिरिक्त किछु समालोचनात्मक निबन्ध लिखि, आलोचनाँक महार्घक पूर्ति क', एक चिंतन प्रधान नव आलोचना पद्धतिक सूत्रपात कयलनि। हिनक कालजयी कृति प्रबन्ध संग्रह, निबन्धमाला, प्राचीन मैथिली गीत, कथा-काव्य, कथा संग्रह, उदयन कथा, मैथिली नवीन गीत (तीन खण्ड) आदि मे हिनक जीवन-दृष्टि, सौष्टववादी चिंतन आ गवेषणात्मक वैदग्ध्य ओ वैदुष्य केँ सहजहि देखल जा सकैछ। हिनक आलोचना

मे एक दिस संस्कृत पृष्ठभूमिक प्रभाव देखना जाइछ, तँ दोसर दिस पाश्चात्य साहित्यक प्रभावहु स्पष्टतः परिलक्षित होइछ। ओ टी.एस. इलीयट आ आइ.आर. रिचर्डस सँ विशेष प्रभावित बुझना जाइत छथि। ओ अपन चिंतनमूलक आलोचना केँ अधिकाधिक व्यावहारिक बनाए, सांस्कृतिक परम्पराक अनुकूल जीवनोन्मुखी आलोचनाक सूत्रपात कयलनि। इएह कारण जे हुनका आधुनिक आलोचनाक जनक कहल जाइछ। हम तँ एतबहि कहब—

अन्धकार छल समालोचना मे गँहिरायल,
महा ज्योति बनि अपने अयलहुँ हे गंगाधर।

आचार्य रमानाथ झाक आलोचना पद्धति केँ विकसित आ पुष्ट कयनिहार अनेक आलोचक छथि, मुदा ताहू मे विशेष उल्लेखनीय छथि—प्रो. उमानाथ झा, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', रामानुग्रह झा, डॉ. रमानन्द झा 'रमण' आदि। एहि कालावधि मे प्राध्यापकीय आलोचनाक प्रणयन प्रारम्भ भेल जे मुख्यतः विद्यार्थी वर्ग केँ ध्यान मे राखि मैथिली प्राध्यापक लोकनि द्वारा शास्त्रीय पद्धति पर लिखल जाइत रहल अछि। एहि प्रकारक आलोचना केँ शास्त्रीय आलोचनेक रूप मे परिगणित कएल जा सकैछ। ई आलोचना पद्धति आनहु-आनहु भाषाक साहित्य मे उपलब्ध अछि आ एकर अपन महत्त्व छैक।

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली आलोचना साहित्य मे रूपात्मक आ गुणात्मक परिवर्तन परिलक्षित होइछ। एम्हर आबि शास्त्रीय, पारम्परिक, गवेषणात्मक, विश्लेषणात्मक, शोधपरक, प्रगतिवादी आदि कएक कोटिक आलोचना दृष्टि-पथ पर आएल अछि। गत शताब्दीक छठम-सातम दशक मे सघन लेखन सँ आलोचनाक बाट प्रशस्त भेल। आठम-नअम दशक धरि अबैत-अबैत सैद्धांतिक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, यथार्थवादी वैज्ञानिक आलोचना पद्धतिक सेहो दर्शन होमए लागल। एहि दीर्घ कालावधि (1960-1990) मे विभिन्न प्रकारक आलोचनात्मक कृति, टिप्पणी, पुस्तक-समीक्षा (Book Review), शोध-प्रबन्ध आदि आएल अछि जिनक आलोचक छथि डॉ. हरिमोहन मिश्र, प्रो. राधाकृष्ण चौधरी, डॉ. प्रबोधनारायण सिंह, डॉ. अणिमा सिंह, डॉ. जयकान्त मिश्र, डॉ. मुनीश्वर झा, सुधांशु शेखर चौधरी, पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', पं. गोविन्द झा, पं. राजेश्वर झा, प्रो. आनन्द मिश्र, प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', डॉ. रामदेव झा, डॉ. बासुकीनाथ झा, डॉ. महेन्द्र नारायण राम आदि। वस्तुतः एहि कालावधि मे जे वैविध्य आलोचना साहित्य मे परिलक्षित होइछ, से युग-परिवर्तनक देन थिक। प्रत्येक युगक रचनात्मक साहित्य एहि प्रकारक आलोचनाक उद्भावना करैछ जे ओकरा अनुकूल होइछ आ ताही प्रकारें ओहि युगक आलोचनो तत्युगीन रचना केँ अपन अनुकूल बना लैत अछि।

एकर प्रत्यक्ष साक्ष्य कवीश्वर चन्दा झा सँ ल' क' आ. रमानाथ झा धरि आ आचार्योत्तर कालहु मे देखल जा सकैछ।

डॉ. प्रेम शंकर सिंह

विगत डेढ़ दशक (1990–2005) मे उत्तमोत्तम रचनात्मक पुस्तकक बाढ़ि आबि गेल अछि। पत्रिका सभ मे जे पोथी-समीक्षा, समीक्षात्मक निबन्ध, आ चिन्तनप्रधान टिप्पणी सभ प्रकाशित होइत छल, तकरो एम्हर अभाव देखना गेल अछि। पूर्व मे प्राध्यापक लोकनि आलोचनाक क्षेत्र मे सक्रिय छलाह, मुदा ओहो सभ आइ थस ल' लेलनि अछि। तथापि एहि वर्ग सँ हेबनि मे एक गोट नीरव, परिश्रमी आ अध्ययनशील आलोचक धूमकेतु सदृश साहित्य-क्षितिज पर प्रकट भेलाह अछि आ ओ थिकाह डॉ. प्रेम शंकर सिंह। आलोचनाक क्षेत्र मे 'मैथिली नाटक ओ रंगमंच' (1978) नामक ग्रंथ ल' प्रवेश कयनिहार डॉ. सिंह एहि दू दशकक कालावधि मे अनेकहु गवेषणात्मक आ संकलनात्मक पुस्तक प्रदान क' आलोचना साहित्यक अभावक सम्पूर्ति मे निश्चित रूपें श्लाघ्य कार्य कयलनि अछि। हिनक गवेषणात्मक आ विश्लेषणात्मक दृष्टिक प्रतिमान सहजहि हिनक आलोचना-पुस्तक मे उपलब्ध भ' जाइछ। हमरा जनैत मैथिली नाट्य-साहित्य मे 'मैथिली नाटक ओ रंगमंच' मात्र एक आधार ग्रंथ अछि जे नाट्यालोचनक क्षेत्र मे रंगकर्मी आ नाट्य-जिज्ञासुक लेल अपरिहार्य बनि, प्रकाश-स्तंभक काज क' रहल अछि। हिनक 'मैथिली नाटक परिचय' (1981), 'पुरुषार्थ ओ विद्यापति' (1986), 'नाट्यान्वाचन' (2002), 'आधुनिक मैथिली साहित्य मे हास्य-व्यंग्य' (2005) आ 'प्रपाणिका' (2005) मे हिनक विवेचनात्मक शक्तिक अनेकहु दृष्टांत प्राप्त होइछ। भावयित्री प्रतिभा, शास्त्रीय ज्ञान आ परिश्रमशीलताक त्रिवेणी डॉ. सिंह मे प्रवहमान देखना जाइछ। एतदरिक्त, हिनक दर्जनभरि सम्पादित ग्रंथक भूमिका सेहो अवलोकनीय अछि जे हिनक आलोचनात्मक विचक्षणा प्रतिभाक प्रमाण थिक।

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

आलोचना एक टा सामाजिक कर्म थिक, संगहि एक टा सामाजिक दायित्व सेहो। मूल्य-निर्धारणक आधार-बिन्दु होइछ आलोच्य रचना आ दोसर होइछ समाज, जतए सँ रचनाकार विषय-वस्तु आ मूल्य केँ ग्रहण करैछ। तें आलोचक केँ एहि बातक परीक्षण कर' पड़ैछ जे रचनाकार द्वारा जे कथ्य आ मूल्य सम्प्रेषित कएल गेल अछि, से सामाजिक दृष्टि सँ कतेक प्रामाणिक आ स्वीकार्य अछि। आलोचना केँ सामाजिक कर्म आ सामाजिक दायित्वक रूप मे ग्रहण कयला सन्ता ओ सामाजिक संघर्षक एक

टा अंग बनि जाइछ। डॉ. रमानन्द झा 'रमण' जखन प्रो. हरिमोहन झा, मणिपद्म, पं. गोविन्द झा आदिक रचना आ व्यक्तित्व केँ राष्ट्रीय एवं सामाजिक विकास-प्रक्रियाक आलोक मे विश्लेषित क' ओकर वैशिष्ट्य केँ उद्घाटित करैत छथि अथवा मोहन भारद्वाज जखन अपन समीक्षाक माध्यम सँ व्यक्तिवादी विचारधारक धज्जी उड़बैत छथि तँ दुनू गोटय सामाजिक संघर्षहि मे भाग लैत छथि। अन्तर मात्र जीवन-दृष्टिक अछि—एक मे मानवतावादी जीवन दृष्टि काज करैछ तँ दोसर मे प्रगतिवादी दृष्टि! विगत डेढ़ दशकक कालखण्ड मे मैथिली आलोचना साहित्य मे दू गोट आओर जाज्वल्यमान आलोचकक प्रादुर्भाव भेल अछि जे विशेष चर्चित-समर्थित रहलाह अछि, आ से छथि डॉ. रमानन्द झा 'रमण' ओ मोहन भारद्वाज।

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' एक प्रभविष्णु आ मुखर आलोचक छथि। हिनका मे मौलिकता, अध्ययनशीलता, गम्भीरता, सरसता आ बौद्धिकताक सुन्दर समन्वय देखल जाइछ। अतीतक अन्हार-गुज्ज खाधि मे सड़ैत-गलैत, हेरायल-भोतिआयल साहित्यिक रचना केँ इजोत मे अनबाक प्रवृत्ति हिनक गवेषणात्मक आ तथ्यात्मक आलोचनाक परिचायक थिक। एहि डेढ़ दशकक मध्य हिनक सात गोट आलोचनात्मक पुस्तक—'नवीन मैथिली कविता' (1981), 'मैथिली न'व कविता' (1993) मैथिली साहित्य ओ राजनीति' (1994), 'अखियासल' (1995), 'बेसाहल (2003), 'भजारल' (2005) तथा 'रमानाथ झा आ मिथिला भाषा' (2006) प्रकाश मे आएल अछि जे हिनक संघर्षशीलता, भावयित्री प्रतिभा आ जीवन्तताक परिचायक थिक। हिनका द्वारा सम्पादित दर्जन-भरि पुस्तकक भूमिका, आलोचनांक उज्ज्वल दृष्टांत थिक। हिनका द्वारा निरन्तर लिखित हेबनि मे जे पुस्तक सभ आएल अछि, ओकर मूल्य अक्षुण्ण अछि।

मोहन भारद्वाज

हेबनि मे जे प्रगतिशील वैज्ञानिक सोचक आलोचना लिखल जाइत रहल अछि, ताहि मे रचनाक आन्तरिक संगति पर विशेष ध्यान देल गेल अछि। एहि प्रकारक आलोचना मे ई देखल जाइछ जे रचनाक एक अङ्ग दोसर सँ, दोसर तेसर सँ आ प्रत्येक, समग्र सँ कोना आ कोन प्रकारें सम्बद्ध अछि आ ओकर अर्थवत्ता केँ प्रकाशित करैत अछि। विकासवादी सिद्धान्तक आलोचना मे वैज्ञानिक आधार पर कएल गेल आलोचना केँ वैज्ञानिक समीक्षा कहल जाइछ। एहि वर्गक आलोचक रचना मे जीवनक संग प्रासंगिकता आ प्रतिबद्धताक तलाश करैत छथि। कोनहु रचनाक मूल स्रोत प्रासंगिकते रहैत छै। भाषिक संरचना सेहो एही पर आधृत रहैछ। भाषिक रचनाक विवेचना करबा काल मूल्यगत प्रासंगिकता केँ स्पष्ट कएल जाइछ। एहि आलोचनाक साफल्य,

पूर्वचिंतन परम्पराक संग सम्बद्धता आ सामाजिक परिवेशक संग सहभागिते पर अवलम्बित रहैछ। एहि दिशा मे मोहन भारद्वाज द्वारा उपरि चर्चित कालावधि मे लिखल गेल विभिन्न समीक्षात्मक आलेख ध्यानाकर्षणक केन्द्र रहल अछि। यद्यपि हुनक बहुत कम समीक्षात्मक ग्रंथ अद्यापि दृष्टि-पथ पर आएल अछि, तथापि मैथिली मे अधुना ओएह एकमात्र प्रगतिवादी आलोचक छथि जे आधुनिक रचनात्मक कृतिक वैशिष्ट्य कें उद्घाटित करबा मे समर्थ छथि। मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित हुनक समीक्षात्मक आलेख मोन कें आश्वस्त करैछ। विषय-प्रवेश, तथ्य-विश्लेषण आ जीवन-दृष्टिक आलोक मे कथ्य आ शिल्पक उद्घाटन हुनक अपन विशेषता छनि। आलेख सभ मे व्यक्त विचारधारा, तथ्यक प्रस्तुतीकरण आ शैली, हुनक अनुसंधित्सु प्रवृत्ति आ स्पष्ट जीवन-दृष्टिक परिचायक थिक। 'आरंभ' (17) पत्रिका मे प्रकाशित प्रो. हरिमोहन झा-सन्दर्भित हिनक आलेख, पूर्वापर सँ सर्वथा भिन्न, नवीन आ प्रासंगिक अछि तथा आलोचनाक नव दिगंतक आभास दैत अछि। हिनक शैली परिमार्जित, प्रखर आ ओजस्विनी अछि। हिनक चिंतन मौलिक, गंभीर आ संतुलित अछि। 'देशज' (2001) मे प्रकाशित हुनक आलेख 'एकैसम शताब्दी मे प्रवेश करैत मैथिली कविता' अत्यंत महत्त्वपूर्ण आ अवलोकनीय अछि।

मैथिली आलोचना कें प्रवर्द्धमान करबा मे, उत्कर्षता प्रदान करबा मे पुस्तक-समीक्षा (Book Review) ओ पत्र-पत्रिका केर सेहो उल्लेखनीय अवदान रहल अछि। मिथिला मिहिर, वैदेही, आरंभ, अंतिका, घर-बाहर, समय-साल, जखन-तखन, लोक-भूमि, कर्णामृत, मैथिली दर्शन, प्रवासी, देशज, भारती मंडन आदि मे जे समय-समय पर पुस्तक-समीक्षा प्रकाशित भेल अछि, ताहि सँ आलोचनाक प्रतिमानीकरण मे बेस सहयोग भेटल अछि। आरंभ, अंतिका, वैदेही आदि पत्रिका मे समय-समय पर प्रकाशित राज मोहन झाक आलेख, पुस्तक-समीक्षा, सम्पादकीय, 'प्रणम्यदेवता'क नव संस्करणक प्रकाशकीय वक्तव्य आदि आलोचना-साहित्य मे व्याप्त कुहेस कें फड़िच्छ करबा मे कारगर हथियारक काज कयलक अछि। ओ अपन आलेख मे विषय-वस्तु कें जतेक बेकछा क' आ स्पष्टताक संग रखैत छथि, से मैथिली आलोचना मे विरल अछि। पूर्वक अतिरिक्त हेबनि मे, भाषिक आलोचनाक क्षेत्र मे, पं. गोविन्द झा द्वारा जे अभूतपूर्व काज कएल गेल अछि ओ अप्रतिम, उपादेय आ स्पृहणीय अछि। तहिना मैथिलीक महान कवि-लेखक-चिंतक जीवकान्त द्वारा तारमतोर लिखल गेल विभिन्न विषयक टिप्पणी, आलेख, वक्तव्य आ अपन ढंगक पुस्तक-समीक्षा मैथिली आलोचनाक हेतु वरदान स्वरूप सिद्ध भेल अछि। एही क्रम मे कुलानन्द मिश्र द्वारा

समय-समय पर लिखल गेल दीर्घकाय पुस्तक-समीक्षा, आलेख आदिक मैथिली आलोचनाक विकास मे विशेष अवदान रहल अछि। विशुद्ध पुस्तक-समीक्षा केर रूप मे सर्वप्रथम पं. गोविन्द झा, रामलोचन ठाकुर, नवीन चौधरी, चन्द्रेश आदिक नाम उल्लेख्य अछि। हेबनि मे डॉ. तारानन्द 'वियोगी' द्वारा लिखित कतिपय गंभीर आलेख, आलोचनाक नव क्षितिजक द्वार फोलैत अछि, कहिया सँ बन्न गवाक्षक जीर्णोद्धार करैत अछि। तहिना डॉ. विभूति आनन्द द्वारा लिखल गेल विभिन्न पत्र-पत्रिका मे छिड़िआयल समीक्षा, अभिनन्दन ग्रंथ ओ स्मारिका मे हेरायल-भोतिआयल समीक्षात्मक टिप्पणी आ दर्जनहु पत्रिका मे लिखित सम्पादकीय, मैथिली आलोचनाक महान काज थिक।

मैथिली अनुसन्धान आ आलोचनाक क्षेत्र मे पटनाक 'चेतना समिति'क अत्यंत मूल्यवान सक्रिय सहयोग रहल अछि। अद्यपर्यन्त दर्जनहु अमूल्य ग्रंथक प्रकाशन, 'घर-बाहर' सदृश स्तरीय मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन, समय-समय पर परिसंवाद-गोष्ठीक आयोजन तथा अर्द्धशती सँ प्रतिवर्ष विद्यापति-स्मृति-पर्वक अवसर पर साहित्यिक आ सांस्कृतिक आयोजन कें अनुष्ठित क' साहित्यिक वातावरणक निर्माण मे जे महती योगदान देलक अछि, से सर्वतोभावेण स्तुत्य आ वरेण्य अछि। एतद्रिक्त मैथिली अकादमी, पटना तथा मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता द्वारा एहि दिशा मे कएल गेल कार्य कें सेहो विस्मृत नहि कएल जा सकैछ।

मैथिली आलोचनाक संवर्द्धन मे विभिन्न विश्वविद्यालय सँ डि. फिल., पी-एच.डी., डी.लिट्क हेतु साहित्यक विभिन्न विधा आ विषय पर कराओल गेल शोध-प्रबन्धक सेहो महत्त्वपूर्ण योगदान रहल अछि। आइ सँ कतेकहु वर्ष पूर्व डॉ. बासुकीनाथ झा द्वारा लिखित मैथिलीक विभिन्न प्रारम्भिक शोध सम्बन्धी आलेख पढ़ने छलहुँ जे सूचनात्मक होइतहुँ अत्यंत उपादेय छल। अद्यपर्यन्त विभिन्न विश्वविद्यालय सँ मैथिली मे कतबा आ कोन-कोन विषय पर शोधपरक कार्य कराओल गेल अछि, तकर विवरणात्मक परिचय प्राप्त भेला सँ अनेक विद्वान आ अनुसंधित्सु लाभान्वित भ' सकैत छथि। एहि कालावधि मे डॉ. मेधन प्रसादक शोध-ग्रंथ 'मैथिली कथा कोश' (1996) कें एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानल जा सकैत अछि।

आलोचनाक संकट

प्रत्येक सृजनात्मक रचना मे रचनाकारक कोनो-ने-कोनो ध्येय निहित रहैछ। एहि सम्बन्ध मे पाठक, लेखक आ आलोचकक दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न भ' सकैछ। आलोचक अपन आलोचना द्वारा एक प्रकारें लेखकक पुनर्संस्कार करैत छथि। कवि

वा लेखकक रचना मे बहुतरास एहन तत्व सभ अनुस्यूत रहैछ जकर अभिज्ञता रचनाकारहु केँ नहि रहैछ। आलोचने ओ साधन थिक जकरा द्वारा ओहि तथ्य सभ केँ उद्घाटित कएल जाइछ। एवंविध आलोचना, सृजनात्मक रचनाक पुनर्सर्जन करैछ, ओकरा नव रूप प्रदान करैछ। नाट्य-प्रस्तुति मे जे काज एक टा निर्देशक केँ करए पड़ैछ, ओएह काज बहुत हदधरि एक आलोचकहु केँ करए पड़ैछ। तेँ आलोचकक दायित्व अत्यधिक बढ़ि जाइछ, तटस्थता हुनका लेल अनिवार्य भ' जाइछ। तटस्थ आ निरपेक्ष भ' कएल गेल आलोचना स्वयं एक सुन्दर साहित्यक रूप धारण क' लैछ। एहि प्रकारें आलोचना द्वारा कोनो कृतिक स्वागतक तैयारी कएल जाइछ आ एहि सँ शिक्षित एवं सुसंस्कृत लोकक एक समुदाय निर्मित कएल जाइछ। आलोचना साधारण पाठकक लेल नहि होइछ। एतावता सूत्र रूपें कहि सकैछ जे आलोचनाक कार्य स्वस्थ मोन सँ साहित्यक अध्ययन-अनुशीलन आ ओकर सौन्दर्यक उद्घाटन करबे टा थिक।

मैथिली साहित्य मे आलोचनाक संकट पूर्वहि सँ आबि रहल अछि, मुदा आइ ई संकट विशेष जटिल भ' गेल अछि। एक शताब्दीक यात्रा पूर्ण करैत आइ आलोचना साहित्य जाहि स्थान पर पहुँचल अछि, ओ स्थल संकटापन्न अछि। ई संकट मात्र आलोचनेक नहि, सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक रहल अछि, तेँ एहि संकटक जाँच-पड़ताल करब, चीर-फाड़ करब परम अपेक्षित।

आइ जे साहित्यिक संकट उत्पन्न भेल अछि, उग्रतर रूप धारण कयलक अछि, तकर मूल मे राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्थिति अछि आ ओकर तीव्र प्रभाव सँ समाज आक्रांत भेल अछि। अमरीकी साम्राज्यवाद भूमण्डलीकरणक गरिजामा पहीरि, वैश्वीकरणक जाकेट झाड़ि आ माथ मे बजारीकरणक कनटोपा लगाए देश मे पूजीवादी संस्कृतिक प्रचार-प्रसार क' रहल अछि। एक दिस ओ व्यक्तिवादी व्यापार-विनियमक ढोल पीटि रहल अछि, दोसर दिस देशी कल-कारखाना मे ताला लागि रहल अछि। भारत आर्थिक दृष्टि सँ अमेरिकी ससरफाँस मे फँसैत चल जा रहल अछि। आइ पन्द्रह सय विदेशी कम्पनी हमर अर्थनीति केँ नियंत्रित क' रहल अछि। सरकार अबैत अछि, जाइत अछि। जेहने नागनाथ, तेहने साँपनाथ। आइ हम विश्वबैंक आ अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोशक सोझा मे कोन प्रकारें आत्मसमर्पण क' रहल छी आ ई हमरा सभ केँ कतय ल' जाएत, से कोनहु जागरूक व्यक्ति सँ नुकायल नहि अछि।

आइ उपभोक्ता संस्कृतिक महाकाल सम्पूर्ण व्यवस्था केँ गीड़ि जयबाक प्रयास मे अछि। कोला संस्कृतिक माध्यम सँ हमर समाजक रीढ़ केँ, हमर संस्कृति केँ बिनष्ट करबा पर तुलल अछि। एहि मे जन संचार माध्यम महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह क'

रहल अछि। मिडियाक प्रोपेगेंडा-मनोविज्ञानक शिकार लेखक आ बुद्धिजीवी सेहो भेलाह अछि आ भ' रहलाह अछि। आखिर हम कतए जा रहलहुँ अछि? 'पुनर्मूसिको भव:'—की हमर इएह नियति तँ नहि अछि? संस्कृतिक प्रश्न केँ आइ परिशिष्ट मे राखि देल गेल अछि, हासिया पर फेकि देल गेल अछि। आइ जे हमर संस्कृतिक अवस्था भ' गेल अछि, से सर्वविदित अछि। साँचे कहल गेल अछि—

खतम रामलीला हुई, अब है डिस्को डांस।
जो जितना फूहड़ वही, है उतना एडवांस॥

तेँ आइ, एहि संकट सँ उबरबाक अछि, एक शक्तिशाली विकल्प प्रस्तुत करबाक अछि। आइ इएह ओ मूल संकट अछि जाहि सँ सम्पूर्ण समाज त्रस्त अछि, नाना समस्या सँ ग्रस्त अछि। तेँ साहित्य सेहो ओहि सँ मुक्त नहि अछि। ई संकट नाना रूप आ भंगिमा धारण क' मैथिली साहित्य मे व्यक्त भ' रहल अछि। भूख, बेकारी, शोषण, अत्याचार सँ कि मिथिला मुक्त भ' गेल अछि? एकर विरुद्ध लड़ब, संघर्ष करब कि साहित्यकारक काज नहि थिक? एहू अवस्था मे जँ किनको समाजक गाल पर हँसीक फूल देखाइ दैत छनि, देश मे हर्ष आ उल्लासक वातावरण परिलक्षित होइत छनि, तँ ई मैथिली साहित्यक महान विडम्बना थिक।

बाह्य संकटक अपेक्षा आन्तरिक संकट आओर बेसी गँहीर अछि। स्वतंत्रता-प्राप्तिक पश्चात्—एहि पचास-साठि वर्षक अन्तराल मे—देश अनेकहु क्षेत्र मे प्रगति कयलक अछि ताहि मे कोनो सन्देह नहि, मुदा जन-साधारणक स्थिति जस के तस छै। मुट्ठी भरि लोक देश केँ अपना पाकेट मे राखि लेने अछि। सभ केँ आपस मे साँठ-गाँठ छै। सभ मालपूआ उड़ा रहल अछि, चारू भर सँ लूटि रहल अछि। लोक सुरक्षित नहि अछि। गरिबहा आओर गरीब भेल चलि जा रहल अछि। महिला-वर्गक ओएह अवस्था अछि। किसान आत्महत्या क' रहल अछि। लोक एखनहुँ भूख सँ मरि रहल अछि। 'रिमोट कंट्रोल' तेसराहाक हाथ मे छैक। आइ एकरहि विरुद्ध संघर्ष करबाक जरूरति अछि। परिवर्तनक लेल इनकलाब आवश्यक अछि। तेँ मैथिली लेखक केँ अपन लेखनक संग-संग मनुक्खक अस्तित्व आ अस्मिता पर होइत प्रहार सँ अवगत होमए पड़तनि। बाहरी आ भीतरी आक्रमण केँ चिन्हए पड़तनि, षडयंत्र सँ परिचित होमए पड़तनि। हुनका निर्णय लेबए पड़तनि। 'फेंस' पर रहयवला लोक बड़ खतरनाक होइत अछि। एहन लोकसभ सँ हुनका सावधान रहय पड़तनि। हुनका निश्चय करए पड़तनि जे ओ ककर पक्षधरता करथि—अमीरक वा गरीबक, व्यक्तिक वा समाजक? नवतुरियाक नारा थिक—

हयात लेके चलो, कायनात लेके चलो।
चलो तो सारे जमाने को साथ लेके चलो॥

मैथिली आलोचनाक दिशा-दशा सँ हमरा लोकनि परिचित छी। शुद्ध साहित्यिक आलोचनाक तँ श्री गणेशहु नहि भेल अछि। सम्प्रति मैथिली मे मोटा-मोटी ओएह दू प्रकारक आलोचना भ' रहल अछि—प्राध्यापकीय आ प्रगतिवादी आलोचना। एही विषयक सन्दर्भ मे आइ सँ कएक वर्ष पूर्व अग्निपुष्प 'आरंभ'क प्रथम अंक मे अत्यंत प्रासंगिक आ सार्थक प्रश्न उठौने छलाह। बेस चर्चा-परिचर्चा चलल छल। साहित्यिक दंगल आ छिटकी-कुश्ती शुरू भेल छल। ई एक टा नीक पहल छल, सार्थक आरंभ छल। परिणामहु बेजाय नहि भेलै। एहि पन्द्रह वर्षक कालावधि मे लेखक लोकनि मे सजगता आएल अछि, ओ सभ अपन वस्तु-स्थिति सँ परिचित भेलाह अछि। आलोचने जकाँ मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा पर, साहित्य-इतिहासक पुनर्लेखन पर चर्चा-परिचर्चाक बड़ बेगरता छैक, परिसंवादक बड़ खगता छै। एहि सँ संवादहीनताक स्थिति भंग हेतैक, नव चेतनाक उन्मेष हेतैक। तें ई आत्यियक, अनिवार्य अछि।

आइ युवा साहित्यकार लोकनिक आरोप छनि जे आलोचना क्षेत्र मे बड़ अराजकता आबि गेल अछि। मैथिली आलोचना मे फूहड़ता आ अतिरंजनाक प्राधान्य ओ दूषित साहित्यिक वातावरणक निर्माण भ' रहल अछि। परम्परावादी मठाधीश लोकनिक कारणें प्रगतिशील सोचक साहित्य आ साहित्यकार उपेक्षित-अचर्चित रहलाह अछि। ई आरोप-प्रत्यारोप कोनो नव बात नहि थिक। नव-पुरान पीढ़ीक संघर्ष अनन्त काल सँ आबि रहल अछि। ई अराजकता आइए नहि, पहिनहु छल। मुदा, पहिनुक अराजकता भिन्न छल, आजुक अराजकताक प्रकृति भिन्न अछि। आइ गोत्र-सम्बन्धवादी वा गुटवादी-गोंधियाँवादी आलोचनाक प्राबल्य अछि। कोनो सामान्य रचना कें महान घोषित क' देल जाइछ तँ कोनो महत्त्वपूर्ण रचना केर उपेक्षा कएल जाइछ। गोत्रविशेषक सामान्यहु रचना कें शीर्षस्थ कएल जाइछ तँ प्रवर्द्धमान गोत्रविहीन रचनाकारक रचना कें ताख पर राखि देल जाइछ। एकरा की कहबैक? आलोचनाक क्षेत्र मे एक टा नव आतंकवादे ने! कारण स्पष्ट अछि। देश जखन आतंकवादक चपेट मे पड़ल अछि तँ साहित्य कोना ओकरा सँ सुरक्षित रहत? वस्तुतः देश आ समाजक परिवर्तनशील प्रवृत्तिए साहित्य-निर्माणक दिशा निर्धारित करैछ, संगहि समीक्षाक स्वरूपहु निर्मित करैछ। जस राजा, तस प्रजा। स्पष्ट अछि जे जतए साहित्यिक जागरूकता सँ सम्पन्न ब्यापक पाठक वर्गक अभाव रहतैक, ओतए आलोचना मे अराजकता होएबे करतै। आइ मैथिली मे, हिन्दीए जकाँ कोनो डॉ. रामविलास शर्मा आ डॉ. नामवर सिंह सनक दिग्गज आलोचकक बेगरता छैक, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सनक निष्पक्ष समालोचकक आवश्यकता छैक।

मूल्यांकन

सुतरां अपन संस्कृति सँ कटि कए, अपन परम्परा सँ हटि कए कोनहु साहित्यक विकास संभव नहि थिक। क्रांतिकारी समाजो अपन धरोहरि केर रक्षा बड़ सहजतापूर्वक करैत अछि। सोवियत रूस आ चीनक उदाहरण सामने अछि। आइ जे आलोचना मे संकट आएल अछि, अराजकता आएल अछि, प्रदूषण आएल अछि, तकर समाधान ताकए पड़त। जन-जीवनक भाँति साहित्य मे जे अवरोध आएल अछि, तकरा यथाशीघ्र हटाबए पड़त। 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना' केर स्थिति खतरनाक होइछ। महाभारतकारक अनुसारें जाहि कुल मे सभ नेता मानी भ' जाइछ, घमंडी भ' जाइछ, तकर विपन्नता निश्चित छै—

'सर्वे यत्र विनेतार : कुलं तव सीदति।'

पुरान आ नवक ई एहन संक्रमण काल थिक जाहि मे पुरान परम्परा कतहु रूढ़ि बनि रहल अछि तँ नव साहित्य-बोध कतहु परम्परा सँ च्युत भ' रहल अछि। तें शताब्दीक एहि सन्धि-बेला मे आपसी भेद-भाव कें विसारि, एकबद्ध भ', आगाँ डेग बढाबी; निराशा कें त्यागि नव निर्माणक बात करी, नकारात्मकता कें झाड़ि-फटकि सकारात्मकता कें अपनाबी, दु:ख कें हँसी-ठहक्का मे भुस्साथरि बैसा दी—इएह थिक समयक माँग, इएह थिक संकटक समाधान। मूल्यक एहि संक्रमण काल मे जँ हम मैथिली आलोचक, आलोचना संकट कें दूर करए चाहैत छी, अराजकता कें समाप्त करए चाहैत छी, तँ इतिहास आ आलोचना—दुनू दिशा मे परस्पर सम्बद्ध चिंतन-पद्धति द्वारा एक-लक्ष्यमुखी भ' कार्य प्रारम्भ करए पड़त। अन्त मे हम एतबहि कहब—

ॐ सहनाववतु। सहनौ भुनक्तु। सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्वी नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।

मैथिली कविताक वर्तमान

आधुनिक मैथिली कविताक वृहत्त्रयी-यात्री, राजकमल आ सोमदेव सँ प्रेरित-अनुप्राणित मैथिली कविता नित नवीन प्रयोग करैत आइ एकैसम शताब्दी मे प्रवेश क' चुकल अछि। अपन माटि-पानिक सौरभ सँ आप्लावित, परंपरा-संप्रोषित आ आधुनिकता सँ सुपरिचित आजुक मैथिली कविता समय सँ साक्षात्कार करैत निरन्तर गतिशील अछि। निराशाक तिमिराच्छन्न आकाश आइ परिस्कृत भ' चुकल अछि, जीवनक प्रति आस्था घूरि आएल अछि आ नव ऊर्जा-उष्मा सँ सम्पृक्त भ' मार्गक खड़-पात, झार-झंखार केँ साफ करैत नव पथ-निर्माणक दिशा मे अग्रसर अछि। यात्रीक स्वप्न केँ साकार करबा हेतु कृत संकल्प अछि। ओकर जय-घोषक शब्द श्रुति-श्रव्य अछि :

उठह कवि तो दहक ललकारा कने
गिरि-शिखर पर पथिक दल चढ़तैक रे।

बीसम शताब्दीक महान काव्य-यात्री आ मैथिलीक शिखर-पुरुष वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', मैथिली काव्य-क्षेत्र मे शिल्पक नवीन प्रयोग कर्ता राजकमल चौधरी आ दलित वर्गक भाषा आ दलित लोकक उत्थान लेल संघर्षरत सोमदेव सँ ल' क' तेज-तर्रार कवयित्री कामिनी धरिक जे काव्य-यात्रा अछि, तकर एक संग निष्पक्ष सर्वेक्षण आ मूल्यांकन करब दुस्साध्य नहि तँ कठिन अवश्य अछि आओर से हमर काम्यो नहि। अस्तु, 'मैथिली कविताक वर्तमान' (1980-2000) जे हमर प्रतिपाद्य अछि, ताही पर अपन मनतव्य व्यक्त करब समीचीन बुझना आइछ।

बीसम शताब्दीक आठम-नवम दशक संक्रमण काल रहल अछि। उक्त काल-खण्ड घटना-दुर्घटनाक्रांत रहल अछि। एही कालावधि मे उदारीकरण, सोवियत संघक विघटन, समाजवादी विचारधारा पर साम्राज्यवादी विचारधाराक आक्रमण, भूमण्डलीकरण, सूचना-विस्फोट आदि घटना घटित भेल। उपभोक्तावादी संस्कृतिक प्रचार-प्रसार आ बाजारवादक विश्वव्यापी विस्तार भेल। ई सभ सुनियोजित छल। परिणाम स्वरूप भारत मे धर्मोन्माद प्रारम्भ भेल आ बाबरी मस्जिद केँ ध्वस्त कएल

गेल। एहि सभ घटनाक व्यापक प्रभाव भारतीय जन-मानस पर पड़ल। मैथिलीक कवि-सर्जक सेहो एहि सँ असम्पृक्त नहि रहि सकलाह जे सर्वथा स्वाभाविक छल। परिणामत: सहस्रमुखी काव्यधारा फूटि पड़ल। एहि काल-खण्डक सर्वाधिक सशक्त प्रगतिशील कवि कुलानन्द मिश्र समधानल डेग बढ़बैत 'ताबत एतबे' कविता-संग्रह ल' उपस्थित भेलाह। हुनका कहबाक लेल बहुत किछु छलनि, तें ओ अपना केँ नियंत्रित नहि क' सकलाह आ हुनक वाणी फूटि पड़ल :

जिनगी लग जएबा मे संकोच करैत कविता
नांगट गप्प करबा मे संकोच करैत कविता
सत्यक पाट छोड़ि क' विरोध करैत कविता
लोकक बीच रहियो क' निर्विकार होइत कविता
लघुता केँ छोड़ि विराट होइत कविता
अनचिन्हार चेहरा सँ चिन्हार होइत कविता
नव परिधान मे स्वीकार होइत कविता
आस्थाक नव भूमि पर कामनाक गान
नीरव शिथिल राति मे वंशीक तान
न'बे छारल घर मे दीपकक प्रकाश
स्नेह सँ आँखि खोलैत भोरक आकास
ओना कहबाक लेल बहुत किछु छल हमरा लग।

मैथिली कविता मे अपना माटिक गंध सँ युक्त एक सँ एक रूप-बिम्ब भेटैत अछि जे 'नास्टेलजिया' मे ल' जा क' मोन केँ मुग्ध क' दैछ। शीर्ष कवि कुलानन्द मिश्रक कविता मे एहि प्रकारक अनेकहु बिम्ब उपलब्ध होइछ जे अभिजात संस्कार केँ ध्वस्त करैत मैथिली मे एक टा नव प्रतिमान स्थापित करैछ। एहि प्रकारक बिम्ब-विधान (Imagery) सँ कविता मे प्रभविष्णुताक सृष्टि भेल अछि। आ गाम-घरक नारीक चित्त, कदबा कएल खेत मे धान रोपैत कृषक-कन्याक सहज सौन्दर्यक बिम्ब प्रत्यक्ष भ' उठैछ। प्रस्तुत बिम्ब मे रूप-माधुरी आ कविएषणाक चित्र द्रष्टव्य अछि :

ओ धान रोपैत हाथ सँ सीउथ परक खढ़ केँ हटौने रहय।
थोड़े गिल्ल माटि ओकरा कपार पर।
टिकुली जकाँ सटि गेल रहै।
हम सोचने रही एहने रमनगर मुद्रा मे।
हमरो आँगनवालीक फोटो बेजाय तँ नहिये लगतनि।

आइ देश असुरक्षा, असंतोष, भ्रष्टाचार, घोटाला, राजनीतिक अपराधीकरण, महँगाई आदि सँ त्रस्त भ' उठल अछि। एहि दू दशक मे जंगलराज्यक अवस्था आबि

गेल अछि। मुट्ठी भरि लोकक हाथ मे देशक धन-सम्पदा केन्द्रीभूत भ' गेल अछि, बाकी नब्बे प्रतिशत लोक मुँह ताकि रहल अछि। शासक-वर्ग, पूजीपति आ 'ब्यूरोक्रैट्स'क साँठ-गाँठ आ विदेशी कम्पनी सभक लूटि सँ जन-मानस उद्वेलित भ' उठल अछि। देशक धनकुबेर लोकनिक कारीधन (Black Money) सँ विदेशी बैंक खचाखच भरि गेल अछि आ बाँकी लोक दरिद्रताक अभिशाप सँ ग्रस्त अछि। अधिसंख्यक जनता गरीबी-रेखा सँ नीचा आबि गेल अछि आ किसानक आत्महत्याक 'ग्राफ' बढ़ि गेल अछि। आइ राजनीति सभ सँ लाभदायक धंधा बनि गेल अछि। मैथिलीक समसामयिक कविता पर निश्चित रूपें एहि अन्तरराष्ट्रीय आ राष्ट्रीय घटना-चक्रक तीव्र प्रभाव पड़ल अछि। मैथिलीक जन्मना विद्रोही कवि रामलोचन ठाकुरक कविता मे रणभेड़ीक स्वर सहजहि मुखरित भेल अछि, बरछी चलयबाक बिम्ब साकार भ' उठल अछि। विद्रोह भेल कविक मूल प्रवृत्ति तँ मोर्चाबंदी व्यक्तित्वक सहज स्वभाव। एहि विद्रोहक मूल मे कतहु ने कतहु करुणा निहित अछि जे हुनक कविता केँ पठनीय बना दैछ। मैथिली मे आइ परंपरावादी आ नवतावादी दुनू तरहक कविताक सृजन भ' रहल अछि। एक दिस व्यक्ति-पोषक कविता तँ दोसर दिस समष्टि-पोषक कविता। एक दिस अमेरिकाक जय-गान तँ दोसर दिस चीनक महानता आ शान। बीच मे ठाढ़ भारत महान। एहना स्थिति मे आजुक कवि सत्ता-संघर्ष सँ अवगत अछि, कुर्सीक लड़ाई सँ परिचित अछि आ 'भोट बैंक'क कुटचालि सँ भिज्ञ अछि। तें ओकरा मे 'आएल राम गेल राम' सत्ताक प्रति आक्रोश छैक, देशक प्रति निष्ठा रहलो सन्ता व्यवस्थाक प्रति विद्रोहक भाव छैक। यैह कारण जे 'लोचन कवि राय', माने रामलोचन ठाकुर हुंकार भरबा सँ परहेज नहि क' पबैछ :

भारत हमर महान छै, सरिपहु देश महान छै
चोर सकल छै जतए पहरुआ, नेता सभ बैमान छै।
शासन-सत्ता चलय वंशगत, प्रजातंत्र धरि नाम छै।
लाठी-पाइक नग्न नाच केँ नाम एतए मतदान छै।

कहबाक आवश्यकता नहि जे विद्रोही जन-कवि रामलोचन ठाकुर समय-सालक प्रहरी, भाषा-आन्दोलनक ध्वजवाहक आ मैथिलीक सुयोग्य-सुपरिचित अनुवादक सम्पादक रहलो सन्ता मूलतः कवि छथि। हुनक कविताक मूल स्वर विद्रोह रहलो सन्ता ओहि मे अपन माटिक सुगन्ध उपलब्ध अछि तँ बीमारी, बेकारी, गरीबी आ किसानक आत्महत्या सेहो प्राप्त होइछ। सत्ता आ नेता पर कएल गेल व्यंग्य सर्वतोभावेण श्लाघ्य अछि :

घर मे पत्नीक बीमरी
देश मे बढ़ैत बेकारी

मात्र किछु कैंचा लेल
अपन दुधमुहा केँ बेचबा ल'
बाध्य कोनो माय
आ महाजनी कर्ज सँ मुक्तिक निमित्त
आत्महत्या केँ वरण करैत किसान समुदाय
देशक खुशहाली
प्रगति-विकास पर नेता लोकनिक व्याख्यान

सामाजिक व्यवस्था, व्यवस्थाजन्य सामाजिक विकृति आ विकृति सँ निस्तारक उपाय—यैह थिक आजुक कविताक मूल विषय। एही विषय पर प्राय: समस्त कवि अपना-अपना ढंग सँ लिखि रहलाह अछि। अन्तर यैह अछि जे एक सजग-सचेत कविक कविता बहस करबैत अछि, आजुक लेल किछु चिन्ता रखैत अछि। अन्तर देखल जाइछ कविताक तेवर मे, ओकर शिल्प आ भाषा मे। स्पष्ट अछि जे आजुक कविता 'रजनी-सजनी' ब्रांडक कविता नहि अछि। 'काड़ा-छाड़ाक झनकार' आजुक कविता मे नहि छैक। ओहि मे सामान्य जनक लड़खड़ाइत अर्थतंत्र, ओकर असुविधा, ओकर विक्षोभ छैक। कथ्य आ शिल्प दुनूक मणि-कांचन-संयोग देखबाक हो तँ पढ़ू महाप्रकाशक कविता। स्थिति सँ आँखि भिड़बैत महाप्रकाश, विपन्न मनुक्खक कथा सुनबैत महाप्रकाश, वैज्ञानिक उत्कर्षक लेखा-जोखा प्रस्तुत करैत महाप्रकाश, सरकारी लोभ-लालच केँ ठेंगा देखबैत महाप्रकाश :

व्यस्त छथि वैज्ञानिक लोकनि
समृद्धि केर क्लोन
ओसभ तैयार करैत जेताह
हमरा-अहाँक घर मे
वित्तमंत्रीक मुदित मुखमण्डल
देश केँ आश्वस्ति सँ भरि रहल अछि
सरकार सरकार अछि
राष्ट्रहित मे एकरा
हमरा सभ केँ कौखन ठोस, कौखन तरल।
कौखन वाष्पीकृत धरि क' देबाक
संवैधानिक अधिकार अछि।

आजुक कविताक मूल स्वर व्यंग्यात्मक अछि, ओकर मूल प्रवृत्ति विकासात्मक अछि। व्यंग्य पूर्वहु मे छल, परञ्च हास्यक अन्तर्गत छल, ओकर अपन स्वतंत्र अस्तित्व नहि छलैक। व्यंग्य कथ्यक असंगति पर चोट करैछ, ओकर बहरिया-भितरिया रूप

केँ, कथनी-करनी केँ, आचरण आ मूल्यक अन्तर्विरोध केँ अनावृत्त क' ओहि पर समधानि क' आघात करैछ। ई आघात नहुँ-नहुँ हँसियो उत्पन्न करैछ आ बेचैनी सेहो। व्यंग्यक सम्बन्ध प्राय: समाज, व्यक्ति आ राजनीति सँ रहैछ, मुदा मुख्य रूपें जीवन सँ। मैथिलीक बहुचर्चित कवि सुकान्त सोम मे सामाजिक जीवनक अनुभव, प्रगतिशील दृष्टि आ राजनीतिक चेतनाक सुन्दर समन्वय भेल अछि। यैह कारण जे हुनक कविता मे सामाजिक-राजनीतिक जीवन मे व्याप्त भयंकर विसंगति आ अन्तर्विरोध पर करारा व्यंग्य कएल गेल अछि। हुनक व्यंग्य मे चोट आ दर्द दुनू उपस्थित अछि :

अहाँ मुस्काइ छी : चाउर मे आगि लागि जाइ छै
अहाँ मुस्काइ छी : गहूमक लहलहाइत खेत झरकि जाइ छै
अहाँ मुस्काइ छी : सरिसो की रैंची की तीसी अकास चढ़ि जाइ छै
अहाँ मुस्काइ छी : मटिया तेल अपने लहकि जाइ छै
अहाँ मुस्काइ छी : बाँगक खेती सुड्डाह भ' जाइ छै
अहाँ मुस्काइ छी : गाड़ीक पहिया जाम भ' जाइ छै
अहाँ मुस्काइ छी : हमर दाम्पत्य मे दरारि फूटि जाइ'ए।

स्पष्ट अछि जे आजुक कविता तेज-तीक्ष्ण धारदार व्यंग्य सँ लैस जोर-जुलुम पर चोट करबा मे माहिर अछि, नेता के असली चेहरा केँ उजागर करबा मे कोनहु भाषाक कविता सँ टक्कर लेबा मे समर्थ अछि। ओना प्रत्येक रचनाकारक अपन अनुभूति होइछ, जगत केँ देखबाक आ परिस्थिति केँ परखबाक अपन दृष्टि होइछ। यात्री-किरण-काव्ययात्रा केँ आगाँ बढ़बैत, राजकमल-सोमदेवक विचारधारा केँ उदरस्थ करैत आ कीर्तिनारायण-जीवकान्तक कविता केँ आत्मसात करैत आजुक जे तेज-तरीन नवतुरियाक कविता सभ प्रकाश मे आएल अछि, ताहि मे जीवनक प्रति अटूट आस्था छैक, तमाम विसंगति सँ टकरयबाक साहस छैक, शत्रु सँ लड़बाक लेल ओकरा लग मारक हथियार छैक। एहि प्रकारक कवि लोकनिक मध्य दूरहि सँ चमकैत-दमकैत देखना जाइत छथि वरिष्ठ कवि अग्निपुष्प। हुनक कविताक भाव, भाषा आ शिल्प, बेछप; हुनक तेवर, कहबाक ढंग सभ सँ फराक। वामपंथी विचारक अणु-आयुध लैस हुनक कविता स्वयं हुनक 'मैनोफेस्टो' बनि गेल अछि :

केहन ई भोर
गुड्डी जकाँ कतबो ओ
उड़ए आकाश
हमरे सक्कत हाथ मे छै अनन्त डोर
उमड़ल बलान सन
बढ़ल जा रहल'ए लोक

अही माटि पर खसल छल
घाम हमर इनहोर
अपन साम्राज्य बढ़ेबाक चारूकात छै होड़
हमरे सोणित सँ सुग्गा सन छै
रूसी आ अमेरीकी शासकक ठोर
हमरे गाम सन छै एल-साल्वाडोर

अग्निपुष्पक कविता मे अछि तथ्य, तर्क, भाषा आ शब्दक अद्भुत सामंजस्य। ओहि मे जीवन राग आ जनक्रांतिक स्वर—दुनू उपलब्ध अछि।

हरे कृष्ण झाक कविता उल्का-पिण्ड जकाँ आजुक कविता मध्य विभाषित देखना जाइछ। 'एना त नहि जे' कविता संग्रहक कविता सभ उस्सर भू-खण्ड केँ तोड़ैत, नव बीज-वपनक काज करैत, संक्रांत पीढ़ीक कवि लोकनि मे जीवनक प्रति अटूट आस्थाक संचार करैत, सर्वहाराक पीड़ा, टूटन आ घुटन केँ वाणी प्रदान करैछ। मार्क्सवादी विचारधाराक संवाहक हरे कृष्णा झाक कविताक उत्स अछि—जीवनक राग-विराग, ओकर जटिलता, ओकर हर्ष-उल्लास। सोहर-समुदाउन सँ ल'क' भूमंडलीकरण धरि हुनक कविताक व्याप्ति अछि। गांधी आ नेरूदा सँ प्रभावित हुनक कविता मे अपन परिवेशक विलक्षण चित्रण अछि, तँ जीवन सँ एक टा आत्मीय लगाव आ प्रकृतिक संग मानवीकरण (Personification in Nature) सेहो अछि। हुनक कविता विस्मृत होइत मैथिली शब्द-भंडारक मंजूषा अछि। यैह ओ तत्व सभ थिक जे हिनका आन कवि सँ विशिष्ट बना दैछ। एक टा उदाहरण अवलोकनीय अछि :

गमैया आदक स्वाद आब सकसीहन भ' जायत
मोहली सौँफ एक टा नाम भरि
जे फेर अचांचके बिला जायत;
तकैत रहि जायब करिया कामोदक ओ गमक
जे निरंतर बाधबोन आ भनसाघर केँ दलमलित क' दैत छल—
अहाँक भीतर अनेरे एक टा उत्सव रचि दैत छल;
सीकीक मौनी नहि रहत आब अहाँक
दैनिक जीवन केँ रंगटीप देबाक लेल—
ने लाल धामा मे राखल भेंटक चाउर;
की रसनचौकी पर बजैत तिरहुतक रागभास
भेटत अपन चौबगली जीवनक सोह मे—
कि अपन कल्पनाक लोक मे ?

मूल रूप सँ हरे कृष्ण झाक कविता विखण्डित होइत मानवता मे आशाक संचार करैछ, ध्वस्त-निस्पन्द होइत विश्वास आ आस्था मे सौन्दर्यक सृष्टि करैछ।

आजुक कविता निराशा, संत्रास, अस्तित्वहीनताक 'ब्लैक होल' सँ बाहर निकलिक', ह्रासोन्मुखी काल (Decadent Period) कैँ पाछाँ छोड़ि क' जीवनक लेल संघर्षरत अछि। नव-नव पेंपी आ कनोजरि फुटैत लक्षित भ' रहल अछि। सार्त्र, कामू आ काफकाक दर्शन सँ निर्लिप्त भ' ओहि मे जीवनक सुगन्ध, सौन्दर्य आ संगीतक संधान क' रहल अछि। एहि अनुसंधान कार्य मे संलग्न अनेकहु कवि मे सँ एक कवि छथि नचिकेता जे प्रशांत भाव सँ विशुद्ध प्रेम-कविता लिखबा मे विरल छथि। प्रेम दे, ब आ ले, ब—दुनू मधुर होइछ (All Love is Sweet, Given or Returned—Shelley)। कर्म-संकुल एहि भागमभागबला जीवन मे सेहो प्रेम-कविता लिखल जा सकैछ, तकर ज्वलंत दृष्टांत छथि नचिकेता। कविता निवेदित अछि :

अपना कविता मे
कैक बेरि अहाँ कैँ बजा क' देखने छी
मुदा एक अहीं छी
जे किछु जवाबे नहि दै छी
नहि किछु
तँ अहिना किछु बजने होइतहुँ
अहीं छी
जे कखनहुँ घुरियहु क' देखितो नहि छी
नहि तँ देखि सकै छलहुँ
हमर कविता
कोनो मामूली प्रेमक दस्तावेज नहि छल

काल्हुक कविता आ आजुक कविता सर्वथा भिन्न अछि। काल्हुक कविता अतीतगामी छल, आजुक कविता वर्तमानजीवी भविष्योन्मुखी अछि। आजुक कविताक तात्पर्य आइ जे लिखल जा रहल अछि, ताहि सँ नहि अछि, एकर अभिप्राय अछि जनताक जीवन-संघर्षक कविता, मनुक्खक उँन्नतिक लेल प्रयत्नशील कविता। आजुक कविता अतीत सँ ऊर्जा ग्रहण करैछ, परंपरा सँ शक्ति अर्जित करैछ, इतिहास-मिथक सँ प्रेरणा प्राप्त करैछ आ वर्तमान मे जीबैत भविष्यक संरचना करैछ। एकर विषय-वस्तु आ शिल्प दुनू मे अन्तर छैक। ओ मनुष्यक मुक्ति लेल संघर्ष करैछ, श्रम-शक्ति पर जोर दैछ। ओ जातिवादी आरक्षण आ आर्थिक उपनिवेशवादक विरोध करैछ। ओ समय कैँ अकानैत युग-यथार्थक चित्रण करैछ। ओकर दहिना पयर

आधुनिकताक दिशा मे उठल छैक, मुदा वामा पयर अपना जमीन पर छैक। एहि कवि लोकनिक मध्य एक टा नीरव कवि छथि अशोक, जे चक्रव्यूह कैँ भेदन करबा मे दक्ष छथि। व्यंग्य सँ सेहो हुनका परहेज नहि छनि। यैह कारण जे ओ आनंदोत्सवक उपरांत 'उतिष्ठत, जाग्रत' केर संदेश दैछ। पं. गोविन्द बाबूक मतें मैथिली महाभारतक उग्रास पर्व (22 दिसम्बर, 2003) मनौलाक पश्चात हमरा लोकनि एक टा दीर्घ नि:श्वास लेल आ पुनि सूति रहल। निष्क्रियताक एहि अवस्था पर अशोकक किछु पंक्ति श्रुति-श्रव्य आ उपादेय अछि :

हमर चान कैँ ग्रसित कयने छल एक टा राहु।
लगल छल ग्रहण
कतोक दिन सँ
ढोंढ़ी भरि जल मे ठाढ़ रही
उगरासक प्रतीक्षा मे
ह', ह', ह'
भ' गेल उगरास
भ' गेल मोक्ष
आब की करब भाइ
चलू गंगा नहाइ
गंगा नहाइ

बीसम शताब्दीक अंतिम दू दशकक कविता भूमंडलीकरणक प्रभाव सँ आक्रांत रहल अछि। साम्राज्यवादी ताकतक नवनिर्मित अणु बम (भूमंडलीकरण+उपभोक्तावाद+बाजारवाद) सँ आइ सौंसे संसार संत्रस्त-प्रकम्पित अछि। एहि विरड़ो मे लोक खढ़-पात जकाँ उड़िया रहल अछि। बड़का-बड़का गाछो उपड़ि गेल अछि। मिथिला सेहो एहि झंझावातक चपेट मे आबि गेल अछि। कवि-लोकनि पर जे एकर विशेष प्रभाव परिलक्षित होइछ, से सर्वथा स्वाभाविक आ दू टूक बात कहनिहार अपना युगक चर्चित-अर्चित कवि विभूति आनन्द बीसम शताब्दी कैँ सतर्कतापूर्वक विदा करबाक लेल सन्नद्ध छथि। कविताक किछु पंक्ति निवेदित अछि :

ओकरा सुनाइ पड़ि रहल छै, ओ बीसम
शताब्दी कैँ विदा करबा मे सन्नद्ध अछि:
शताब्दी आइ
मुँह लटकौने ठाढ अछि
विलुप्त होएबा लेल तत्पर अछि

अपेक्षाक संस्कृति
बहुत मश्किल भ' रहल अछि।
मित्रक स्नेह
कें बुझनाइ
संगहि संग
इमानदारी मे बुधियारी कें परखनाइ

विगत शताब्दीक अंतिम छोर पर ठाढ़, सभ कें आकृष्ट करैत जे एक टा कवि छथि, तिनक नाम भेल नारायणजी। नारायणजीक कविता मे जे त्वरा अछि, गत्यात्मकता अछि, सहजता आ संप्रेषनीयता अछि, से अन्य कवि मे दुर्लभ। ओ अपन एक कविता 'मंदिर' मे ओहि युग-यथार्थ कें अनावृत्त कयलनि अछि, जे मुँह पर अबितो बाजल नहि जाइछ। मंदिर पर की-की होइछ, से सर्वविविदत अछि। ई मंदिर सभ नगर-महानगरहि मे नहि, गामो मे विराजमान अछि। 'घाव करै गंभीर' उक्ति कें चरितार्थ करैत कवि आजुक राजनीति पर झटहा मारबा सँ नहि चुकलाह अछि। एकरा कहैत छैक लोक-कविताक शक्ति-सामर्थ्य। कविता प्रस्तुत अछि :

ताश खेलबाक अछि
चल मंदिर पर
एक बाजी जुआ सेहो
हे, चल मंदिर पर
ताबत एक चिलम
भ' जाय
हँ भाइ हँ, चल मंदिर पर
मंदिर
ककरो बापक नहि थिक
जे फेकी हम नहि पानक पीक एत'
अरे
एत' ककर थिक फूटल चूड़ी
राति केओ फेर अंनने हैत बुलकी कें
मंदिर पर
की एहने
एक टा आर मंदिर
बनयबाक सूरसार भ' रहलए
अयोध्या मे?

एवं विधि नारायणजीक कविता, कोनो अंचल विशेषक कविता नहि, ओ सम्पूर्ण धरतीक कविता थिक, भूमंडलक उजास थिक, सम्पूर्ण सृजनशील मानव-समाजक धड़कन थिक।

अन्धकार, सन्देह आ दुविधा सँ ग्रस्त आजुक जीवन जन-मानस मे भय आ आतंक सृजित क' देलक अछि। लोक कें त्रस्त आ भयभीत करबाक लेल आइ नित नव-नव हथियार गढ़ल जा रहल अछि। आहटि कें अकानैत लोकक निन्न हेरा गेलैक अछि। सगरो लोक आतुरताक संग भोरक प्रतीक्षा क' रहल अछि। सुस्मिता पाठकक कविता मे एहि छटपटैनी, एहि आतुरताक सशक्त चित्र उपलब्ध अछि :

हवा आतंकित
अन्धकार स्तब्ध
चुप्पी कें चीरैत
सर्द घाम सँ जागल चेहरा कें
भिजा दैत अछि
हल्लुक सन आहटि
आ कोनो छोटो सन ठक-ठक
एक क्षणक मृत्युक अनुभव
आँचर मे सटि जाइत अछि।

नारी-विमर्शक जे मूल स्वर रहल अछि से अछि पुरुष-प्रधान व्यवस्था मे नारीक शोषण, युग-युग सँ अपमानित-पदमर्दित नारी कें देवी कहि ओकर शारीरिक आ मानसिक शोषण-प्रताड़ना आ ताहि सँ मुक्ति पयबाक हेतु संघर्ष! सम्पूर्ण संसार मे आइ नारी-मुक्तिक (Woman Lib) संघर्ष उग्र सँ उग्रतर भ' गेल अछि। पूर्वापरक अपेक्षा आधुनिक नारी-जीवन मे आत्यंतिक परिवर्तन भेल अछि। मिथिलाक नारी सेहो एहि परिवर्तन सँ असम्पृक्त नहि रहलीह अछि। हुनको लोकनि मे गाम सँ शहर धरि ई परिवर्तन प्रत्यक्ष अछि। मैथिली कविता मे एहि परिवर्तनक अनेकहु दृष्टांत ज्योत्स्ना चन्द्रमक कविता मे उपलब्ध अछि। 'वैदेहीक नाम' कविताक एक उदाहरण द्रष्टव्य अछि :

प्रश्न पुछै छी अहाँ सँ एक टा
जे अहाँक जीवन देखलो पर
किएक ने टुटैत छनि भक्क जनक ओ सुनयनाक?
अगहन मे सीता वियाहलि गेलीह
दुखे भोगलनि सदिखन
तें धीया नहि बियाही अगहन मे कहनिहार माइ-बाप

दोष तँ ताकि लेलनि मास मे मुदा
किऐ ने तकलनि दोष राम मे?
किऐ एखनो धरि सभ जनक, सभ सुनयना
तकै छथि राम सन जमाय आ
सभ धीया चाहै छथि सीया सन भाग्य? किऐ?
किऐ बहिन वैदेही?

कवयित्री प्रश्नाकुल तँ छथिए, ओ पूर्वापर सँ भिन्न, युगानुरूप नारी केँ देखबाक एषणा रखैछ, ओ सर्वथा अल्ट्रा, तेज-तर्रार नारी केँ जन्म देबए चाहैछ :

बसयक एक समय-सीमा धरि अबैत
एहि तरहक भावना
आ कामनाक निरर्थकता केँ
रेखांकित करैत
ओ स्वप्न देखै
कोनो राजकुमारक नहि
ओ स्वप्न देखै
अपन अन्दर सँ
अंकुराइत
कोंढ़िआइत
भकरार जन्म भेल फुलाइत
आर्थिक रूप सँ सम्पन्न एक नारी केँ

नव पीढ़ीक सशक्त कवि विद्यानंद झाक कविता पूर्वापर सँ भिन्न, भंगिमायुक्त शैली मे रूपाकृत अछि। हुनक कविता शिल्प आ भाव (Form and Content) दुनू दृष्टिएँ नवीन बोधक परिचायक थिक। 'राति एक टा यातना गृह' कविता मे ओ लिखैत छथि :

हमर भीतर
एक टा जहलखाना अछि
जाहि मे बन्न अछि
हमरे कैक टा अंश सब
रोज राति भोंकैत रहैत अछि भाला
गत्र-गत्र मे
आ शोणित-शोणिताम
छटपटाइत रहैत छी

मैथिलीक सुपरिचित कवि विद्यानंद झाक एक टा छोट छिन कविता अछि— 'पिन कोड'। कविता की अछि—जादूक पेटारा, दियासलाइक काठी। अनेकानेक स्मृतिक पुंज थिक ई कविता—एक ध्रुवीय दुनियाक संकेत करैत ई कविता। जापानी कविता 'हाइकू' स्मृति केँ ताजा क' जाइछ ई कविता! कैथिनिया गाम केँ धन्य करैत ई कविता कविक अद्वितीयताक परिचायक थिक।

अधुना सर्वाधिक चर्चित युवा कवि-कथाकार तारानंद वियोगीक कविता मे जे धार अछि, उष्मा अछि, कहबाक ढंग मे जे वक्रता अछि, ओ हुनक कविताक प्राण थिक। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'—अन्धकारक विरुद्ध प्रकाशक लेल युद्ध, इजोतक निरंतर खोज। अपन संस्कृति, अपन परंपराक प्रति मोह तकबाक हो तँ वियोगी जी सँ बढ़िक' आर कोनो कवि नहि भेटताह! प्रत्यक्षक सोझा प्रमाणक कोन काज! हुनक 'बाबा' शीर्षक कविताक निम्न पंक्ति द्रष्टव्य अछि :

मुदा धन्य छी अहूँ बाबा। एत्ते संघर्ष! एत्ते प्रतिकार!!
एहन प्रतिहिंसा!
एत्ते धधरा!!
ओह!
अहीं! अहीं ठीक कहै छी बाबा
अन्यायक विरुद्ध लड़बाक उमेर
कहियो नहि बीतै छै।

हमर प्रिय कवि कृष्णमोहन झा एक विद्रोही तेवरक संग अपना कविताक माध्यमे हमरा लोकनि केँ आलोड़ित-विलोड़ित करैत रहला अछि। हुनक कविता घर-आँगन, चूल्हि-चिनवार सँ ल' क' देश-विदेश धरिक तरो-ताजा, एकदम टटका घटना-दुर्घटनाक विवरणिका प्रस्तुत करबा मे 'रनिंग कमेंट्रीज' केर काज करैछ। हुनक बभनगामावाली भौजी केँ हम आइ धरि नहि बिसरि पौलहुँ अछि। हुनक 'ओहि स्त्रीक कानब' कविता मे स्त्री-विमर्शक माध्यमे युग-यथार्थक अंकन कएल गेल अछि जे सहज संवेद्य थिक :

सुनू
खाली सपता विपता सँ बान्हलि नहि
सात हजार बिपैत सँ गछारलि अहाँक स्त्री
नूनक कोही लग उचरिंग जकाँ भटकि रहलि अछि
तेसर सालक तम्मा जकाँ
अछि कोठीक दोग मे दुबकलि
बरदक नाँगैरक कपचल केस जकाँ

टाटक बत्ती मे खोंसलि अछि।
सोमवारीक ताग जकाँ पीपरक गाछ सँ लटकलि
आ अहाँ
वाइलक बदला छपुआ साड़ी द'क' करै छी
अगाध प्रेमक प्रदर्शन।

हेबनि मे जे कविता लिखल जा रहल अछि तकर फलक राष्ट्रीय-होइत भूमंडल केँ परिव्याप्त कयने अछि। ओहि मे दलित-प्रश्न, स्त्री-विमर्श, उत्तर उपनिवेशवाद, वंशवाद, वर्णवाद आदि प्रमुख विचार-बिन्दु बनि गेल अछि। एहि धाराक सर्वथा टटका कवि लोकनि मे कामिनी, अविनाश, विनय भूषण, रमण कुमार सिंह, पंकज पराशर, अजित आजाद आदिक उपस्थिति परम आह्लादक अछि। सहज अभिव्यक्तिक तेक-तिक्ख मुद्रा कामिनीक कविता मे उपलब्ध होइछ :

आइ देह बेचनाइयो फैशन भ' गेल
आ विद्रोह
खरिदनाइयो
धर्मक जे मोट चादरि
ओढ़ि लेने छल लोक
आधुनिकताक विड़रो
उड़ि गेल ओहो...
कोनो सभा भवन
कोनो मंदिर सेहो
सभ जगह
स्त्री इस्तेमाल भ' रहलैए
छूरी आ कांटा जकाँ एकरंग।

एवंविधि मैथिली कविताक वर्तमानक सन्दर्भ मे हमरा बहुत किछु कहबाक छल, मुदा से भ' नहि पाओल। काल-सीमाक कारणें हमर अनेकहु वरिष्ठ आ अभिन्न कवि लोकनि छूटि गेलाह ताहि लेल मोन कचोटि रहल अछि। हम नवतुरियाक माँदि विशेष क' लिखए चाहैत छलहुँ, सेहो संभव नहि भ' सकल। अस्तु, हिनका-सभ पर फेर कहियो। इत्यलम्।

कविता मे जीवकान्त

मनुक्खक बात करैत जीवकान्त, मनुक्ख केँ पीड़ा सँ मुक्ति दियेबाक लेल चिन्तित जीवकान्त आ प्रकृतिक माध्यम सँ मनुक्खक सुख-दुःख, हर्ष-विषाद आ जय-पराजयक लेल संघर्ष करैत जीवकान्त प्रखर चेतना-सम्पन्न कविक रूप मे चर्चित आ समादृत रहलाह अछि। निम्न मध्यवर्गीय समाजक पीड़ाक चित्रण, अन्धविश्वास आ जड़ता सँ ओकरा त्राण दियेबाक हेतु चिंतन-मनन आ सत्ता ओ व्यवस्था मे आमूल परिवर्तन हुनक काव्यक मूलाधार रहल अछि। समाज, राजनीति आ प्रकृति—यैह हुनक काव्यक प्रतिपाद्य! विषय-वस्तु मे विविधता, भाषाक प्राञ्जलता आ शैलीक नवीनता हुनक काव्यक मुख्य विशेषता। जनसामान्यक सर्वविध विकास हुनक व्यक्तित्वक वैशिष्टय, नवतुरियाक उत्साह-वर्द्धन हुनक लोकप्रियताक आधार-स्तंभ! यात्रीक शब्द मे—

नवतुरिए आबओ आगाँ।
उएह करत रूढ़ि भंजन, आँगू मुँहें बढ़त उएह...
हमरा लोकनि दिअइ आशीर्वाद निश्छल मोने,
घिचिअइ नहि टाङ पाछाँ...
ढेकी नहि कूटी अपनहि अमरत्वक...

जीवकान्त बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार रहलाह अछि—एक संग कवि, कथाकार, उपन्यासकार, आलोचक, समीक्षक, भूमिका लेखक आदि बहुत किछु। हुनका सन लिक्खाड़ मैथिलीक नव पीढ़ी मे क्यो दोसर लेखक नहि भेलाह। ओ नवतुरियाक पोषक, प्रेरक आ प्रशिक्षक छलाह। ओ बहुशः स्थापित रचनाकारक मास्टर साहेब छलाह। ओ अपना पाछाँ एक गोट विशाल आ समर्थ लेखक मंडली केँ छोड़ि गेलाह अछि जे हुनक बहुत पैघ अवदान थिकनि।

जीवकान्त अत्यंत साहसी आ स्वाभिमानी छलाह। हुनका अनर्गल आ अनसोहाँत बात पसिन्न नहि छलनि, तें ओ प्रतिरोध मे ढाही लेबाक लेल ठाढ़ भ' जाइत छलाह आ तकर प्रतिकारो करैत छलाह। तें हुनक किछु आप्तलोक हुनका 'दुर्वासाक नवीन

संस्करण' कहैत छलथिन। ओ अनेरे साहित्यकार सभ सँ ढाही लैत रहैत छलाह, तें हिनक चेला-चटिया हिनका 'साहित्यिक अखाड़ाक राजनीतिक पहलमान' बुझ' लागल छलनि। कीर्ति नारायणक शब्द मे "ऊपर सँ ओ कतबो अखड़ाह अथवा अगिलकंठ अथवा मणिपद्मक शब्द मे 'तुरुच्छ तुरुक' लागथि आ अगिलेस शब्दक प्रयोग सँ लोक केँ नाराज क' देथि, अपन सृजन सँ विरोधियो केँ चकित-विस्मित केने रहैत छलाह। चन्द्रेशक शब्द मे "ओ ढेकरैत छलाह आ साहित्यिक साँढ बनि दुगोलाक जजाति केँ धाँगैत छलाह।" हमरा दृष्टि मे ओ सागर सदृश अथाह, विस्तृत आ उदार छलाह, सभ केँ अपना मे समेटने छलाह आ सभक कल्याण चाहैत छलाह।

हुनक जीवन-दृष्टि आ रचना-दृष्टि अपन रहनि। ओ एक प्रतिबद्ध रचनाकार छलाह। क्यो हुनका वामपंथी तँ क्यो दक्षिणपंथी, क्यो समन्वयवादी तँ क्यो प्रयोगवादी कहैछ, मुदा ओ कोनो 'वाद'क प्रवर्तक नहि छलाह। हुनका कोनहु 'वाद' सँ 'एलर्जी' छलनि। ओ दक्षिण-वाम, दलित-शोषित, जाति-धर्म, बुर्जुआ-सर्वहारा, शहर-गाम आदिक 'पंथ'-'वाद' मे अपना केँ बान्हि क' रखबाक पक्ष मे नहि छलाह। वस्तुत: ओ एक मानवतावादी (Humanist) साहित्यकार छलाह। ओ आजीवन ककरो मोजर नहि देलनि। आनक प्रशंसा करबा मे ओ कृपण छलाह। नारायणजीक शब्द मे—

ओ उत्तर सँ अबैत रहथि
हम उत्तर जाय चाहैत रही
भेटला पर ओ चट् कहने रहथि—
उत्तर टा केवल दिशा नहि थिक

जीवकान्त कठिन कविताक कवि छथि। हिनक कविता, गंभीर कविता थिक। ओ सर्वग्राह्य-सर्वसंवेद्य नहि अछि। ओ भावनाक नहि, विचारक, चिंतन-मननक वस्तु थिक। ओहि मे लोकरंजनक तत्व नहि, वैचारिक संघर्ष, अकुलाहटि आ खीझ छैक। तें ओ सर्वसाधारणक लेल बोधगम्य नहि, क्लिष्ट छैक। ओ बुद्धिजीवी, साहित्यकार, शिक्षक-प्राध्यापक आ सुशिक्षित लोकक कविता थिक। ओ 'रजनी-सजनी'क कविता नहि, मंच पर धूम मचबयवला गीत नहि, ओ प्रखर प्रज्ञाक कविता थिक। दुर्बोध भेलो सन्ता ओहि मे युग-यथार्थक अभिव्यक्ति, मनुक्खक गरिमाक अंकन ओ भविष्य हेतु आशाक सन्देश निहित अछि। नव कविताक पुरोधा जीवकान्त निराशा, वैराग्य आ पराजयक नहि, मानवीय संवेदना, करुणा आ युयुत्साक कवि छथि। हुनक काव्य, भाषाक प्रभावमयता, शैलीक नवीनता आ उपयुक्त शब्दक प्रयोगधर्मिताक कारणें मैथिली कविता केँ गौरवान्वित करैछ तथा शब्द-शक्तिक समुचित प्रयोगक कारणें सौन्दर्य-मंडित करैछ।

परिवेशक छवि-छटा, माटि-पानिक गंध, सांस्कृतिक सौष्ठव सँ समन्वित

हुनक कविता मैथिली काव्य मे एक नवीन कीर्तिमान स्थापित करैछ। यैह कारण जे डॉ. जयकान्त मिश्र हिनक कविता संग्रह 'नाचू हे पृथ्वी' केँ यात्रीक बाद नव कविता मध्य 'मीलक पाथर' घोषित कयलनि अछि—"Jeevkant seems to be the maturest and the best. His collection of poems 'Nachoo He Prithivi' is a landmark in the march of new poetry after Yatri and in it poems like these that one feels that the new poetry has been fully vindicated."

जीवकान्त आजीवन अन्याय, अत्याचार, जाति, वर्ण-व्यवस्था, अन्धविश्वास, रूढ़िग्रस्तता आ पुरान जर्जरित परम्पराक विरुद्ध लड़ैत-मरैत रहलाह, विद्रोहक स्वर मुखरित करैत रहलाह। हुनक स्पष्ट उद्घोष छल—

खबरदार! औ बूढ़
दुनू हाथ उठाउ
फटाक!!!
आपातकाल घोषित करैत छी?

हुनक कविता मे शोषित, उपेक्षित सर्वहाराक चित्र यत्र-तत्र उपलब्ध होइछ जे सामाजिक वैमनस्यता आ सरकारी तंत्रक शिकार अछि, क्षुधित आ पीड़ित अछि। 'लाठी आ महिस' कविता मे प्रशासनिक अव्यवस्था पर, जंगल राज्य पर धारदार व्यंग्य कएल गेल अछि—

जे डेढ़हत्थी लाठी मे
महिंस हाँकि सकए
प्रिय केदार,
हमरा सभ के हाथ मे/ओ लाठी नहि अछि
आ गाम मे रहबा लेल/खुटेसल छी।

डेढहत्थी लाठीक प्रतीक सर्वविदित अछि। की ई 'जकरे लाठी तकरे भैंस (might is right) कहावत केँ चरितार्थ नहि करैछ? की ई 'बन्दूकक नोक सँ शक्ति अर्जित कएल जाइछ' (Power comes out of the barrel of gun—Mao) कथनक पुष्टि नहि करैछ?

ओ देशक नेता लोकनिक स्वार्थान्धता, राजनीतिक कुटिलताक नग्न चित्र प्रस्तुत कयलनि अछि—

देशक नेता लोकनि खेलाइत रहताह
घरबा-दुअरबाक खेल/आइ ई घर खसौताह
काल्हि ओ घर खसौताह।

तहिना अपन 'सत्ता' कविता मे आजुक भ्रष्ट सत्ताधारी, ओकर चमचा, ओकर पिट्ठू सभक कुचक्र मे पिसाइत लोकक दुःख, औनाहटि, आक्रोश आ खीझ केँ व्यक्त करैत सत्ताधारीक निर्लज्जता केँ उद्घाटित कयलनि अछि—

हमरा आइ भरिपोख खाय दीअ
बसात आ पाइन/सभक बखराक
काल्हि धरि हम हरिण छलहुँ...
पात मे नुकाइत छलौं
खढ़ौ टोनबा मे धखाइत छलौं
एहि जंगल मे हम छी निर्द्वन्द्व
हम सत्ता मे छी।

'चिड़ैक कंठ' कविताक माध्यम सँ वाणीक वैशिष्ट्य केँ उद्घाटित करैत मौन आ मुखरताक महत्त्व केँ निर्दिष्ट कएल गेल अछि। 'रहिमन चुप ह्वै बैठिये' आ 'ऐसी वानी बोलिये' सदृश पंक्तिक भाव-बोध आ समयक महत्त्व केँ 'चिड़ैक कंठ' कविताक माध्यम सँ व्यक्त कएल गेल अछि—

ओ नहि खोलैत अछि लोल
आकाशक कनकनी मे
आ मेघक अन्धकार मे
आ मेघ सँ अनवरत
खसैत फूही मे/करुण क्रन्दन करबा लेल
ओ नहि खोलैत अछि लोल
प्रकाश आ तापक अक्षय भंडार
सूर्यक स्वागत मे अनेरे
फुजलैक अछि ओकर कंठ
मेघाओन अन्हार मे
किन्हु नहि फुजलैक अछि
ओकर कंठ कहियो

जीवकान्तक कविता आधुनिक मिथिलाक बनैत-बिगड़ैत सभ टा स्वरूप केँ वाणी प्रदान कयलक अछि। ओ ग्रामीण संस्कृति केँ अक्षुण्ण राखए चाहैछ, संगहि ओत्तुका माटि पर उद्योग-धंधा, कल-कारखानाक अम्बार देखए चाहैछ। मिथिलाक सर्वतोमुखी विकास—यैह थिकनि हुनक एषणा, एकान्त कामना। मुदा विडम्बना ई अछि जे, से भ' नहि पाबि रहल अछि। यैह कारण अछि जे 'नाचू हे पृथ्वी' कविता-संग्रह मे एक टा कछमछी, एक टा क्रोध, एक टा खीझक स्वर शतधा स्वर मे फूटि पड़ल अछि—

हम कविता मे नांगट नहि होइ छी
तें हम कार्यालय आ अपन आँगनक
भनसाधर मे नाङ्ट भए जाएब
हमर हुड़ार सभ केँ नहि पसिन्न छैक।

हुनक कविता मे दीन-हीन लोकक दुर्दशा, ओकर उपेक्षा, तिरस्कार एवं दमनक विरोध मे उठल वर्ग-चेतनाक स्वर मुखरित भ' उठल अछि—

आइ सभ टा गाछ प्रतिशोध लेत गाछ
बनकेर गाछ, चौबटियाक कात मे तेतरिक गाछ
आँगनक बाड़ी मे लतरल लतासभ
बेढ़ल रोपल फुलबाँस आ बबूर
आ बुढ़िया पाकड़िक एकसंग/लेत आइ प्रतिशोध।

हुनक कविता मे समसामयिक युग-यथार्थ यत्र-तत्र उपलब्ध अछि। 'तकैत अछि चिड़ै' (1995 ई.) मे, जाहि पर हुनका साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त छनि, प्रकृति-प्रेम आ समसामयिकताक सुन्दर समन्वय भेल अछि। उदाहरणस्वरूप निम्न पंक्ति द्रष्टव्य अछि—

ऋतुसभ बदलैत रहल अछि
अनेक बेर भेल अछि रौदी—
रौदी मे दूभिक पातो उज्जर भेल
अनेक बेर बाढ़ि मे भसिआएल अछि
बड़ पीपरक अकादारुण गाछ
अगिलग्गी भेल अछि अनेक बेर

'सूर्यक मृत्युक प्रक्रिया' कविता मे कविक प्रौढ़ कल्पना शक्तिक उड़ान (Flight of imagination) नव उपमा ओ गात्यात्मक बिम्बक संग व्यंजि भ' उठल अछि। द्रष्टांत द्रष्टव्य अछि—

सूर्य कोल्हुआ बरद जकाँ जोतल अछि
ओकर आगाँ अन्हार ओकर पाछाँ अन्हार
ओकर उपरो अन्हार ओकर नीचाँ अन्हार
सूर्य अन्हारक पानि पर गलैत हिमखंड।

हुनक कविता गाम-घर, बाध-बोन, खेत-खरिहान, घर-गृहस्थीक 'एलबम' अछि। 'धरतीक अवतार' कविता मे घाम सँ लथपथ, धानक बोझ उघैत नवयौवना बोनिहारिन केर सजीव चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि जाहि मे रूप बिम्ब ओ ध्वनि बिम्ब साकार भ' उठल अछि—

बोझ उठा क' बाट पर ढुलकैत जाइत नवयौवना
झुनझुन बजैत माथ पर
बोनिक धान
पसेना खसबै छै कपार सँ गाल धरि
धानक बोझ लादल छै
डाँड़क हाड़ पर
ठेहुनक जोड़का पर धानक बोझ नहि
सोंसे पृथ्वी बोझल आराम सँ।

हुनक काव्य-संसार एक सँ एक प्राकृतिक सौन्दर्य-सुषमा से आवेष्ठित अछि। 'गाछ झूल झूल', 'तकैत अछि चिड़ै', 'हमर अठन्नी खसलइ बन मे' (साहित्य अकादेमी द्वारा 1914 ई.क 'बाल-साहित्य पुरस्कार सँ सम्मानित), 'रहय चाहैत अछि गाछ', 'अध-रतिया मे चान' आदि कविता संग्रह केँ प्राकृतिक सौन्दर्यक सन्दर्भ मे देखल जा सकैछ। 'अधरतिया मे चान' कविता मे प्रकृति द्वारा मानवीकरण (Personification in nature) कएल गेल अछि—

रेलक पटरी नहि सुतैत अछि अधरतिया मे
अखबारक बंडल चलैत अछि अधरतिया मे
अधरतिया मे आमक कोसा जुआ रहल अछि
अधरतिया मे कुकुर कटाउझ सुना रहल अछि

हुनक 'साँझ' कविता मे प्रकृतिक उत्कृष्ट चित्र उपलब्ध अछि। सौन्दर्य शास्त्रीय दृष्टि सँ 'कुरूप' सेहो सौन्दर्यक एक गोट अंग मानल जाइछ। कारी कोइली आ अष्टावक्र केँ गुण-विशेषक कारणें सुन्दर मानल जाइछ। पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्री ए.सी. ब्रैडले (A.C. Bradley) आ एस. एलेकजेंडर (S.Alexander) एहि प्रकारक सौन्दर्य केँ 'कठिन सौन्दर्य' (Difficult Beauty) कहलनि अछि। 'साँझ' कविता मे जीवकान्त अस्ताचलगामी सूर्यक तुलना 'लाल मुँहवला बानर' सँ क' एही 'कठिन सौन्दर्य' (Difficult Beauty)क सृष्टि कयलनि अछि जे हुनक गहन अध्ययन ओ सौन्दर्य सम्बन्धी चिन्तनक परिचायक थिक। एहि मे नवीन उपमानक सौन्दर्य-सृष्टि सेहो कएल गेल अछि—

दिनान्त
आ बसबिट्टीक झोंझ मे
एक टा बड़का लाल मुँहवला बानर
ओझराएल अछि।

सुन्दर आ कुरूप एक दोसराक मूल्य आ सीमाक निर्धारण करैछ। यैह कारण

जे आदि कवि वाल्मीकि रामक सौन्दर्य केँ विशेष प्रभविष्णु एवं शूर्पनखाक कुरूपता केँ विकर्षक बनयबाक लेल सौन्दर्य आ कुरूपता केँ समानान्तर कय, एही 'कठिन सौन्दर्य'क निरूपण कयने छथि—

सुमुखं दुर्मुखी रामं वृतमध्यं महोदरी।
विशालाक्षं विरूपाक्षी सुकेशं ताम्रमूर्धजा।
प्रीति रूपं विरूपा सा सुस्वर भैरवस्वरा।
तरुणं दारुणं वृद्धा दक्षिणं वामभाषिणी।

—वाल्मीकि रामायण

जीवकान्तक बाल-कविता वस्तुतः बाल-कविता नहि भ', 'किशोर कविता' भ' गेल अछि, तथापि विभिन्न कविता संग्रहक बाल-गीत धीया-पुताक लेल महान शिक्षाप्रद, प्रेरणादायक आ उच्च कोटिक अछि। अधिकांश कविता किशोर आ तरुणक लेल संवेद्य, प्रीतिकर आ उत्साह-वर्द्धक अछि। युग-परिवर्तनक संकेत सेहो ओहि मे निहित अछि। यैह कारण जे महाप्रकाश लिखलनि अछि—

बाल गोपालक पोथी मे आब
ग सँ गणेश नहि गन
पसरैत अछि अपन आकार-प्रकार मे
पड़ोसिया सभहक मुँहथरि पर
लोहक जाल
जीवकान्त फेकैत छथि
जरैत आखरक शब्द...।

अविकसित मैथिली बाल साहित्य केँ अपन बालकविताक माध्यम सँ समृद्ध बनयबाक हुनक विनम्र प्रयास सर्वतोभावेन श्लाघ्य एवं प्रशंसनीय अछि। मैथिली बाल साहित्यक क्षेत्र मे निश्चित रूपें हुनक ई महान अवदान थिकनि। हुनक एक बाल गीत मे राष्ट्र-ध्वज तिरंगाक महत्त्व साकार भ' उठल अछि—

भारत देशक ध्वजा तिरंगा
बच्चा सभ के पीरा अंगा
पीयर रंग धुजा मे ऊपर
पीयर अछि गेना सतरंगा।

एवंविध मैथिलीक प्रख्यात कवि जीवकान्त जन्मना कवि रहलाह अछि। हुनक प्रथम प्रकाशित कविता 'इजोरिया' आ 'टिटही' मिथिला मिहिर, जनवरी 1965 ई. मे प्रकाशित भेल अछि। हुनक काव्य-कृति अछि—नाचू हे पृथ्वी (1971 ई.), धार नहि होइछ मुक्त (1991 ई.), तकैत अछि चिड़ै (1995 ई.), खाँड़ो (1996 ई.),

पानि मे जोगने अछि बस्ती (1998 ई.), फुनगी नीलाकाश मे (2000 ई.), गाछ झूल झूल (2004), छाह सोहाओन (2006), खिखरिक बोअरि (2007 ई.), हमर अठन्नी खसलइ वन मे (2009 ई.), रहए चाहैए गाछ (2011 ई.) आ अधरतिया मे चान (2012 ई.)।

हुनक 'नाचू हे पृथ्वी' (1971 ई.) चर्चित-प्रशंसित कविता-संग्रह थिक जाहि मे युग-यथार्थ केँ प्रमुखता प्रदान कएल गेल अछि। 'धार नहि होइछ मुक्त' (1991 ई.) मे समसामयिकताक अंकन ओ 'तकैत अछि चिड़ै' (1995 ई.) मे प्रकृति के द्वारा मानवीकरण प्रस्तुत कएल भेल अछि। हुनक 'खाँड़ो' (1996 ई.) मे कृषि-संस्कृतिक अद्भुत चित्रांकन भेल अछि, तँ 'पानि मे जोगने अछि बस्ती' (1998 ई.) मे भोगल यथार्थक जीवन्त चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि।

जीवकान्तक सन् 1971 ई. सँ ल'क' सन् 2000 ई. धरिक कविता केँ 'पूर्ववर्ती' ओ तकर बादक कविता केँ 'परवर्ती कविता'क संज्ञा प्रदान कएल अछि। हुनक पूर्ववर्ती कविता व्यक्तिप्रधान कविता अछि आ परवर्ती कविता समष्टि-प्रधान। एक मे व्यक्तिक पीड़ा, कुंठा, संत्रास, थकान आ अस्तित्वक संघर्ष अछि तँ दोसर मे समाजक पीड़ा, औनाहटि, छटपटाहटि आ खौंझ अछि। एक मे किर्केगार्ड, सात्र, कामू आ काफ्का बजैत अछि, दोसर मे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपें मार्क्स आ फ्रायड नुकायल अछि। एक मे शासन-सत्ता आ डगमगाइत समाज-व्यवस्थाक प्रतिरोध मे 'द्रष्टा-कवि' ठाढ़ अछि तँ दोसर मे आस्था, समर्पण आ विश्वास सँ परिपूर्ण 'स्रष्टा-कवि' कार्य मे संलग्न देखना जाइछ। समग्र रूप मे जीवकान्तक कविता मनुक्खक अजय शक्ति-सामर्थ्यक जय-घोष करैछ। ओहि मे समसामयिकताक अनुगुंज आ युग-यथार्थक निनाद अछि, विरोधक स्वर मुखर आ निर्माणक स्वर प्रखर अछि।

ओ अपन भाषा-शैली केँ ल'क' चिन्हार रहलाह अछि। भाषा हुनका पाछा-पाछा हाथ जोड़ने चलैत छल, शैली सदा हुनक वशवर्तिनी बनल रहैत छल। हुनक भाषा मे ग्रामीण ठेठ शब्दक बाहुल्य तथा मैथिलीक भूलल-बिसरल शब्द सभक भंडार निहित अछि। हुनक आखर बजैत अछि, हुनक शब्द-वैभव बिरल अछि। एतावता, मैथिली नव कविताक कीर्ति-स्तंभ जीवकान्तक कविता विषय-वस्तु आ शिल्प दुनू दृष्टियें अप्रतिम अछि। भाषाक प्राञ्जलता, शैलीक नवीनता, पौराणिक प्रतीक, अभिनव बिम्ब, मिथकीय प्रयोग, हास्य एवं व्यंग्यक कारणें ओ अमर्त्य थिकाह। 'उपमा तोहर करब ककरा सँ...।'

मैथिलीक वरिष्ठ कवि-साहित्यकार वीरेन्द्र मल्लिक सँ लक्ष्मण झा सागरक अन्तरंग वार्ता

10 दिसम्बर, 2016 ई.। दिल्लीक 'मयूर विहार' आवासीय परिसर। मल्लिकजीक वर्तमान आवास। हम 'ओला' सँ उतरैत छी। मल्लिकजी उपरे सँ देखि लैत छथि। घर अयबाक लेल दिशा-निर्देश दैत छथि। आब हम मल्लिकजीक सम्मुख ठाढ़ छी। ओ हमरा कान्ह पर हाथ दैत सोफा पर बैसा दैत छथि। अखबार सभ जे पसरल छलनि, तकरा समेटिक' कात मे राखि दैत छथि। कुशल-समाचार पुछैत छथि—'कोना एलहुँ? कोलकाताक समाचार कोना-की?' जेना लोक अपन सर-समाङकेँ पुछैत छै, तेना ओ पुछैत गेलाह आ हम हुनका उतारा दैत गेलियनि—'परसूए एलहुँ। छोटकी बेटी केँ चिकुनगुनियाँ भ' गेल छलै, तकरे जिज्ञासा मे आएल छी। सोचलौं, अहाँ केँ 'सरप्राइज' दी। ओना कोलकाता मे सब मैथिल समाङ अहाँ केँ बड़ 'मिस' करैत छथि।

एहि बीच भाभी जी गरम-गरम सिंघारा आ बड़ी-बड़ी टा रसगुल्ला आगाँ मे राखि जाइत छथि। बेटी ओत' सँ भोरे-भोर (दिल्लीक नओ बजे धरि भोरे रहैत छै) बासिए मुँह निकलल रही, से एत' भरिपेट्टा जलखै भ' जाइत अछि। मल्लिकजी मात्र चाह पीबा काल टा मे संग दैत छथि। आब हम हुनका अपन अयबाक अभीष्ट कहैत छियनि—'अहाँक 'इन्टरव्यू' लेब' आएल छी।' पहिने तँ ओ ना-नुकुर केलनि मुदा हमर आग्रह केँ टारि नहि सकलाह।

हम : सब सँ पहिने तँ हम अहाँ केँ बहुत-बहुत बधाइ दैत छी जे चेतना समिति, पटना द्वारा 'यात्री चेतना पुरस्कार—2016' अहाँ ग्रहण कएल।

मल्लिकजी : ई सब टा अहाँ लोकनिक शुभकामनाक फल थिक।

हम : ई पुरस्कार कोलकाताक डॉ. वीरेन्द्र मल्लिकजी केँ भेटलनि अछि वा दिल्लीक मल्लिकजी केँ?

मल्लिकजी : ई पुरस्कार निश्चित रूपें कोलकाताक मल्लिकजी केँ भेटलनि अछि

हम : की अहाँ केँ नहि लगैत अछि जे ई पुरस्कार अहाँ केँ बहुत पहिनहि भेटबाक चाही छल?

मल्लिकजी : हम पुरस्कारक लेल नहि लिखैत छी। लिखब हमर बाध्यता आ साहित्य भेल जीवन। तखन कोनो पुरस्कार, साहित्यकार आ विद्वान लोकनि द्वारा सम्मान भेल, तें सर्वतोभावेन वरेण्य! 'घरक मुर्गी दालि बरोबरि' आ 'बाड़िक पटुआ तीत'—कहबी तँ बुझले अछि। तथापि, देर आयद, दुरुस्थ आयद।'

हम : आब किछु साहित्यिक प्रश्न अहाँ सँ। अहाँ यात्रीजीक कोन रूप सँ सर्वाधिक प्रभावित भेल छी 'पारो' आ 'बलचनमा'क उपन्यासकार यात्री सँ किंवा 'चित्रा' आ 'पत्रहीन नग्न गाछ'क कवि यात्री सँ?

मल्लिकजी : हम 'चित्रा' आ 'पत्राहीन नग्न गाछ'क कवि यात्री सँ सर्वाधिक प्रभावित रहलहुँ अछि। 'पारो' आ 'बलचनमा' हमरा लेल कोनो बाँतर नहि। दुनू उपन्यास अद्‌भुत, संवेद्य। ओना यात्री जी समग्रतः हमरा लेल प्रेरणाक स्रोत रहलाह अछि। वस्तुतः हुनक सम्पूर्ण जीवन गत्यात्मक (dynamic) आ हुनक सम्पूर्ण साहित्य बुद्ध, मार्क्स आ फ्रायड सँ प्रभावित रहलनि अछि। तें ओ स्वयं लिखने छथि—

'नमस्तेऽस्तु पिशाचाय, वैतालाय नमो नमः।
नमो बुद्धाय मार्क्साय, फ्रायडाय च ते नमः॥'

हम : जीवकान्तजी, यात्री जी केँ 'मार्क्सवादक ढोलकिया' कहने छथि। एहि मादे अहाँक विचार की अछि?

मल्लिकजी : जीवकान्त जी वस्तुतः मर्यादावादी छलाह। हुनका कोनो दर्शन मे विश्वास नहि छलनि। मार्क्सवाद सँ हुनका बेस 'एलर्जी' छलनि। तें ओ यात्रीजी केँ 'मार्क्सवादक ढोलकिया' कहने छलथि आ ताहि लेल साहित्यकार लोकनिक द्वारा हुनका बेस हुरपेटल गेल छल। वस्तुतः यात्रीजी परिवर्तनकामी छलाह।

हम : जीवकान्तजीक प्रसंग उठल अछि तँ एक टा व्यक्तिगत जिज्ञासा अछि। अहाँ जीवकान्तजी सँ वयस मे जेठ छी। दुनू गोटे मे घनिष्ठ सम्बन्ध रहल अछि। पेशा सँ दुनू गोटे शिक्षक रहल छी। साहित्य लेखन मे अहाँ जीवकान्तक आगू अपना केँ कोन स्थिति मे पबैत छी?

मल्लिकजी : जीवकान्तजी आधुनिक मैथिली साहित्यक एक महान लेखक छथि। एक संगे श्रेष्ठ कवि, महान कथा-शिल्पी आ चर्चित उपन्यासकार—जेना सोनाक अँगूठी मे हीराक नग! हम भेलहुँ एक साधारण साहित्यकार—'कुत्र गण्यो गणेशः?' तें तुलनाक कोनो औचित्य नहि।

हम : परसौनी (तहिया दरभंगा जिला)क बालक वीरेन्द्र मल्लिक सँ कोलकाताक डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक धरिक जीवन-यात्राक संक्षिप्त जानकारी कोना देब' चाहब?

मल्लिकजी : बाल्यावस्थे मे माता-पिताक असमय देहान्त भेल आ हम भ' गेलहुँ टुअर, सदा सर्वदाक लेल मातृ-पितृ-स्नेह सँ वंचित! तीन भाइ-बहीन मे जेठ

हमहीं। तथापि हमर बाल्यावस्था व्यतीत भेल मातृतुल्य पितिआइन (काको) आ पितृतुल्य कक्का (ननू—स्व. उदित नारायण मल्लिक) केर स्नेहिल छत्रछाया मे। भट्ठा धरौलनि सीताराम गुरुजी आ प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कएल गामक अपर प्राइमरी स्कूल मे।

जीवन-संघर्ष भेल प्रारम्भ! अन्हर-बिहारि, रौद-पानि, सर्दी-गर्मी सभ केँ पार करैत परसौनी सँ तीन मील दूर पढ़बाक लेल जे प्रतिदिना, यात्रा प्रारम्भ भेल, से अगिला पाँच वर्ष धरि जारी रहल। तै दिन कटैया धार मे पूल नहि छलै, आओर तें 'एहि नदी केर यैह व्यौहार, खोलू धरिया उतरू पार।' गमछा पहिरि चटिया सभ केँ नदी पार करए पड़ैक। अन्ततोगत्वा बेनीपट्टी मिडिल इसकुल सँ मिडिल आ श्री लीलाधर हाइ इसकुल सँ मैट्रिक केर परीक्षा उत्तीर्ण कएल। मिडिलक बोर्ड परीक्षा भेल मधुबनीक सूड़ी इसकुल मे। ई हमर मधुबनीक प्रथम यात्रा छल। मैट्रिक परीक्षाक अन्तिम दिन, मधुबनी वाटसन इसकुल सँ संगी सभक संग जयनगर जा 'नूरजहाँ' सिनेमा देखल। ई छल हमर जीवनक पहिल सिनेमा!

गौआँ-घरुआक इच्छा छलनि जे हम नाएबगिरी वा पटबरिकाक नोकरी पकड़ि ली, मुदा हमर लिलसा छल उच्च सँ उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक। सब सँ लड़ि-झगड़ि मधुबनीक आर. के. कॉलेज मे 'एडमिशन' लेल। आर्थिक समस्या मुँह बओने ठाढ़ छल। संयोग सँ एक सूड़ीक ओहिठाम रहबाक आश्रय भेटल। भद्र लोकक बच्चा केँ पढ़ाबी, बदला मे जलखै, दुनू साँझक भोजन आ आवासक सुविधा प्राप्त भेल। कृतज्ञ छी ओहि गृह-स्वामिनीक जे हमरा सन नेनाक सुविधा-असुविधाक खेआल अपने बच्चा सन रखैत छलीह। तथास्तु, गाड़ी गुड़कए लागल।

गामक लोक केँ जखन पता लगलै तँ अप्रत्यक्ष रूपें सब 'बाइकॉट'क' देलक। मुदा हम ठहरलहुँ जिद्दी, पाछाँ मुड़ि क' देखबाक पलखति नहि छल। एतावता, आइ.ए.क परीक्षा पास क' गाम घुरलहुँ। पुनि 'ढाकक तीन पात'—'ओएह रामा, ओएह खटोला!' नोकरी, नोकरी आ नोकरीक 'डिमांड'। हमरा चैन नहि छल।

संयोगवश पं. सम्पत्ति मिश्रजी (हमर स्वर्गीय पिताजीक मित्र) गाम आएल छलाह। ओ हमर परिस्थिति सँ अवगत भेलाह आ ओएह महापुरुष हमरा कानपुर ल' गेलाह। ई छल जीवनक दोसर पड़ाओ। संघर्ष पुनः प्रारम्भ! पुराना कानपुरक गोशाला आ तकरा निकट छल प्रसिद्ध 'रानी घाट'। कलकल-छलछल करैत इतराइत गंगाक धार आ तट पर विशाल शिव मन्दिर। मन्दिरक प्रांगण मे लागल रहैत छल मैथिल पंडित लोकनिक भीड़! कतहु पूजा-पाठ तँ कतहु साधु—संन्यासीक प्रवचन! प्रारम्भ मे एहीठाम पंडित सभक संग पूजा-पाठ करी आ दाता लोकनि सँ जे किछु प्राप्त होअए, ताही सँ सन्तोष करी—'जाको कछु नहिं चाहिए, सोई शहंशाह।'

पंडितजीक कृपा सँ बी.ए. मे नामांकन कराओल सनातन धर्म कॉलेज मे। एहिठामक जीवन आर संघर्षपूर्ण छल। रहबाक कोनो ठेकान नहि, भोजन-वस्त्रक कोनो व्यवस्था नहि। मुदा कहैत छै ने 'जतय चाह, ततहि राह।' संयोग सँ पनरह टकाक एक ट्यूशन भेटल। आर की चाही ? होटल मे खाइ आ मन्दिर मे आबि बमबम करी! बेर-कुबेरक लेल एक मित्र भेटि गेल छलाह—राज श्रीवास्तव। ओएह हमर 'फ्रेंड, गाइड एण्ड फिलॉसफर'! थाकल-ठेहिआएल देखि, अगइवाली भौजी जबरदस्ती भोजन करा देथि। जाड़ हो वा गर्मी—एक्कहि कपड़ा पहिरि कॉलेज करए पड़ैत छल।

मोन पड़ैत छथि हिन्दीक प्रोफेसर डॉ. गौड़ साहेब। ओ हमर दशा देखि एक महासेठक ओहिठाम ल' गेल छलाह आ मारते रास ऊनी वस्त्र दियौने छलाह। परम श्रद्धेय तिवारी जीक ओहिठाम सेहो बरमहल चाह-पानिक संग असीम सिनेह भेटि जाइत छल, कारण हुनक सुपुत्री हमर सहपाठिन जे छलीह! अस्तु, जीवन-यात्री केँ विश्राम कतय! 'चरैवेति चरैवेति' वैदिक मंत्र केँ गुनगुनाइत हम चलैत रहलहुँ, चलैत रहलहुँ।

अन्ततोगत्वा कानपुर सँ बी.ए.क डिग्री प्राप्त क' गाम आपस आएल। पुनः नोकरीक चर्चाक संगे एहि बेर विवाहोक चर्चा चरम पर छल। मुदा हमरा विश्राम कतय ? पुनः संयोग सँ परिवारक ज्येष्ठ भ्राता स्व. भुवनेश्वर मल्लिक हमरा कोलकाता ल' अनलाह। ई छल जीवनक तेसर पड़ाओ—नव संघर्षक शुभ यात्रा। किछु दिन धरि दीदीक डेरा मे (76 नं., अपर चितपुर रोड, बड़ा बजार) आवास आ भोजन भात! अपनत्वक तार झंकृत भेल, सिनेहक अपार वृष्टि होमय लागल। ई छल मिथिलाक सुप्रसिद्ध संगीताचार्य बाबू श्याम नन्दन सिंहक आवास। ककरा ने एत' आश्रय भेटल छलै! ओ छलाह हमर पाहुन—पितृतुल्य।

तथास्तु, हमरा विश्राम कत'? संघर्ष पुनः प्रारम्भ भेल। गाड़ी पटरी पर दौड़' लागल। अन्ततः कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ हिन्दी मे एम.ए. कएल आ एहीठाम चाकरी क' जीवनक पचास-पचपन बर्खं व्यतीत कएलहुँ। यैह थिक हमर जीवन-यात्रा, संघर्षक कथा सागर जी! कहबाक तँ बहुत किछु छल, मुदा एखन एतबे—

'संघर्षहि जीवनक कथा रहल।
की-की ने कएल, की-की ने सहल॥'

हम : अहाँ रूंगटा इसकुल सँ ल'क' प्रेसिडेंसी कॉलेज धरि हिन्दीक प्राध्यापक रहल छी। मैथिलीक प्रति झुकाओ कोन परिस्थिति मे आ किनका प्रेरणा सँ भेल ?

मल्लिकजी : हम पूर्व मे कविता, कथा, समीक्षा आदि लिखैत छलहुँ आ 'कॉफी हाउस' मे राजेन्द्र यादव, मनमोहन ठाकौर, अवध नारायण सिंह, विमल वर्मा, सकलदीप सिंह आदिक संग अड्डा दैत छलहुँ। जखन एम.ए.क छात्रे छलहुँ तखनहिं

श्री राज कुमार मल्लिक आ श्री महेन्द्र नारायण झा जी सँ परिचय भेल। ओएह सभ हमरा घीचि क' 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद' मे ल' अनलाह। एत' सर्वश्री परमेश्वर मिश्र, उदित नारायण झा (हैंठीवला), चन्द्रकान्त मिश्र, शरतचन्द्र मिश्र प्रभृति एक सँ एक महान विभूतिक सम्पर्क मे अएलहुँ। कालान्तर मे परिषदक महामंत्री सेहो नियुक्त कएल गेलहुँ।

ई ओ काल-खण्ड छल, जखन परम श्रद्धेय आचार्य रमानाथ झा जी द्वारा कोलकाता केँ मिथिला-मैथिलीक 'तीर्थस्थल'क संज्ञा सँ विभूषित कएल गेल छल। प्रत्येक रबिदिन बड़ा बजारक 'गिरीश पार्क' मिनी मिथिलाक रूप धारण क' लैत छल। जेम्हरे देखू, गप्प-सड़क्का, हँसी ठहक्का, पिहकारी पर पिहकारी, पान पर पान दकड़ैत, बीड़ी-सिगरेट धुकैत किसिम-किसिम के लोक! पंडित सँ ल'क' भनसिया धरि, कुली-मजदूर सँ ल'क' 'रिक्शा-पुलर' धरि, बस-ट्रामक ड्राइवर-कंडक्टर सँ ल'क' सेठ-सेठानीक नोकर-नोकरानी धरि, प्रोफेसर सँ ल'क' ट्यूशनिया मास्टर धरि, नेता सँ ल'क' चमचा धरि—सभ तरहक लोकक संगम छल 'गिरीश पार्क' तहिया! आइ एहि पार्कक एक कोन मे स्थापित अछि गिरीश घोषक विशाल प्रस्तर-मूर्ति, तँ दोसर कोन मे अछि मिथिला विकास परिषद द्वारा स्थापित विद्यापतिक संगमर्मर-मूर्ति! दुनू विलक्षण कीर्ति-स्तम्भ! ई भेल बड़ा बजारक सुयश गाथा। ओहुना बड़ा बजार मे जत' जाउ, ततहि मिथिलाक लोक सँ साक्षात्कार भ' जाएत—

फलकल धोती, थकरल टीक।
जखनहिं देखी, तिरहुतिया थिक॥

ताहि समय मे बड़ा बजारक महत्त्व तँ छलैहे, आइ आर बेसी बढ़ि गेल छैक। कारण, एत' गली-गली मे टाकाक भण्डार छैक, सड़क पर नोट उड़ैत रहैछ। अर्थक केन्द्र छैक बड़ा बजार! तें तँ बाबा (नागार्जुन)क कथन छनि—

'द्रव्य—दोहन-धाम
हे बड़ा बजार तुमको
बार-बार प्रणाम!'

आओर एही बड़ा बजार मे, युवातुर्क कॉमरेड पीताम्बर पाठक हमरा हिन्दी छोड़ि मैथिली मे लिखबाक लेल कहलनि, मैथिलीए मे सपना देखबाक लेल उत्प्रेरित कएलनि। से तहिए सँ हम हिन्दी मे लिखब छोड़ि, मैथिली मे लिखब प्रारम्भ कएल।

हम : हमरालोकनि अस्सीक दशक मे वीरेन्द्र मल्लिक जीक कविता प्रवाह सँ जाहि रूपें प्रभावित होइत रही, से कविताक धार क्रमशः कोन कारणें बीझाए लागल ?

मल्लिकजी : ओ चढ़तीक बेर छलै। कविता-धारा मार्गक तमाम विघ्न-बाधा

केँ धाडैत, शिला-खण्ड सब केँ धकिअबैत उन्मुक्त गतियें प्रवहमान छलैक। आइ कविताक धार आओर वेगवती भ' गेल छै। संगहिं ओहि मे वैचारिक परिपक्वता आबि गेल छै, उच्छृंखलताक स्थान विनम्रता ल' लेने छैक। चिनमार सँ निकलि क' आइ ओ 'ग्लोबल' भ' गेल छैक।

हम : अहाँ साहित्य मे कविते विधा केँ किएक चुनलहुँ, जखन कि अहाँक शोधपरक निबन्ध सेहो पाठक वर्ग मे बेस चर्चित आ लोकप्रिय अछि।

मल्लिकजी : साहित्य मे हमर जन्म कविते सँ भेल। कविता अछि जीवन आ जीवन अछि कविता—एक दोसराक पर्याय! तें हमर सर्वप्रिय विधा भेल कविता। दोसर प्रिय विधा थिक आलोचना आ शोधपरक निबन्ध। ओना हम कथा, संस्मरण, रिपोर्ताज, टिप्पणी आदि सेहो लिखने छी।

हम : अहाँक कविता पर कोन कविक सर्वाधिक प्रभाव पड़ल अछि?

मल्लिकजी : हमरा पर पूर्ववर्ती कोनो कविक कोनो खास प्रभाव नहि अछि। हमर कविता नितान्त हमर अछि। ओना यात्री जी (बाबा नागार्जुन)क कविता हमरा लेल सर्वाधिक प्रिय रहल अछि। हम अपन कविताक विषय मे स्वयं ही कहू—

'हम नहि, कविता कहत
हमर कथा, हमर व्यथा।'

हम : अहाँ कविता स्वत: स्फूर्त लिखैत छी, किंवा किनको फरमाइश पर?

मल्लिकजी : हम स्वत: स्फूर्त कविता लिखैत छी। गद्य पर्यन्त हम किनको फरमाइश पर नहि लिखल।

हम : अहाँ सँ बुझय चाहैत छी जे कविताक जन्म कोना भेल?

मल्लिकजी : शब्द-विस्फोटक दोसर नाम भेल कविता। एकरहि दोसर अभिधा भेल शब्द-ब्रह्म। कविताक लेल शब्द-चयन आ अर्थ-गाम्भीर्य दुनू अपेक्षित। कविता 'जगच्येतश्चमत्कारि', सहृदय-आह्लादकारी आ सुन्दर हो। कवि मे क्रातिन्दर्शिता, प्रतिभा, कल्पना, सहृदयता आ भावुकता प्रभृति गुण आवश्यक। तें कहल जाइछ 'कवय: क्रान्तिदर्शिन:।' कविताक जन्म पीड़ा सँ होइछ, वेदना सँ होइछ। क्रौंच पक्षीक आर्तनाद सँ मर्माहत-द्रवित आदि कवि वाल्मीकिक मुँह सँ जे शब्द-विस्फोट भेल, ओएह छल पहिल कविता। ओ शब्द छल—

'मा निषाद प्रतिष्ठांत्वमगम: शाश्वती समा:।
यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधी: काममोहितम्॥'

अंग्रेजी कवि कीट्स (Keats)क तें तँ कहब छनि—

'Our sweetest songs are those
That tell us the saddest thoughts.'

हिन्दीक सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पन्तक उक्ति सेहो प्राय: एहने अछि—

'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
बरसकर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान॥'

हम : साहित्य मे कविताक की उपयोगिता अछि?

मल्लिकजी : साहित्य मे कविताक ओएह उपयोगिता जे शरीरक लेल प्राणक होइछ। विश्व-साहित्य सँ कविता केँ हटा दियौक, साहित्य नीरस-निष्प्राण भ' जाएत। वाल्मीकि, कालिदास, तुलसीदास, विद्यापति आ रवीन्द्रनाथ केँ हटा दियौन, भारतीय साहित्यक की दशा हएत?

हम : भारतीय वाङ्मय मे मैथिली कविता आइ कत' ठाढ़ अछि?

मल्लिकजी : मैथिली कविता आइ भारतक कोनहु समृद्ध भाषाक कविताक समकक्ष ठाढ़ होयबाक सामर्थ्य रखैछ। यात्री, सोमदेव कीर्तिनारायण, जीवकान्त आदिक कविता केँ कोनहुँ भाषाक कविताक समकक्ष-सामानान्तर राखल जा सकैछ।

हम : विद्यापति, चन्दाझा आ मनबोधक कविता केँ आजुक कविता सँ कोन रूपें तुलना करैत छी?

मल्लिकजी : विद्यापति, चन्दा झा आ मनबोध हमरा लोकनिक इतिहास थिकाह। तीनू भेलाह कालजयी रचनाकार, अक्षर पुरुष! इतिहास केँ छाड़ि हम आगाँ नहि बढ़ि सकैत छी। आजुक कविता ओकरहि शाखा-प्रशाखा थिक, ओकरहि परिष्कृत-परिवर्धित रूप थिक। तें तुलनाक कोनो औचित्य नहि। इतिहासक संग पाछाँ नहि, आगाँ बढ़ब, सएह थिक उचित। कहलो गेल अछि—

We do not say : 'Back to Goethe'
We say : 'Onward to Goethe'
'Onward with Goethe'

हम : कविवर सीताराम झा, कांचीनाथ झा 'किरण', सुरेन्द्र झा 'सुमन', चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आ आरसी प्रसाद सिंहक रचना आजुक साहित्यिक परिवेश मे कतेक वांछनीय अछि?

मल्लिकजी : कोनहु युगक कवि केर कविता सामान्यत: समय-सापेक्ष होइछ। मुदा ताहू मे जे महान कवि होइछ, हुनक कविता कालजयी बनि जाइछ। उपरिउद्धृत सभ कवि मैथिली साहित्यक चर्चित-अर्चित कवि छथि। कोनहु कविक कविताक मूल्यांकन, हुनक कविताक विषय-वस्तु आ शिल्प (Contents and Form) के आधारहि पर कएल जाइछ। समयानुसार शिल्प मे परिवर्तन होइत रहैछ, परंच जीवन-सत्य सदति अक्षुण्ण रहैछ। उपर्युक्त सभ कवि हमरा हेतु परम पूजनीय आ आदरणीय छथि। आइयो ओ सभ परम वांछनीय छथि। उदाहरणस्वरूप—

'पायब किछु अधिकार, कतहु की बिना झगड़ने?
अछि सलाइ मे आगि, बरत की बिना रगड़ने?'

'तञ हे माटिक महादेव! नहि करह कनेको अहंकार,
तखनहिं हेतह विसर्जन, लगतह सब बोकियाबय।'
'हमर कथा कियो कान दैत अछि,
जे खोपड़ी छरबा ने सकै छल,
से सभ ऊँच मकान दैत अछि।'
डंक बाजि गेल, आगि लंक मे लागि रहल अछि,
अभिनव विद्यापतिक भवानी जागि रहल अछि।'
आदि कविता केँ की कहियो बिसरल जा सकैछ?

हम : वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', राजकमल चौधरी, सोमदेव, मायानन्द मिश्र, जीवकान्त, गंगेश गुंजन, वीरेन्द्र मल्लिक, कीर्त्तिनारायण मिश्र, भीमनाथ झा, उदयचन्द्र झा 'विनोद', महाप्रकाश, सुकान्त सोम, रामलोचन ठाकुर, नारायण जी, केदार कानन, तारानन्द वियोगी, रमेश, कामिनी, अजित आजाद प्रभृतिक कविता मिथिलाक सर्वहारा समाज (पाठक) केँ कतेक बोधगम्य होइत अछि?

मल्लिकजी : अपनेक एहि प्रश्न मे वस्तुत: दू गोट प्रश्न अन्तर्भुक्त अछि। पहिल—मैथिली कविक आ पाठक आ दोसर—मैथिलीक नव कविता मे बोधगम्यता। मैथिली साहित्य मे पाठकक समस्या अदौ सँ रहल अछि। ई समस्या आनहु भाषाक साहित्य मे रहल अछि। पूर्वहुमे ई समस्या मैथिली मे रहल अछि आ अधुना ई समस्या आओर विकराल रूप धारण क' लेलक अछि। आइ मैथिली कविता मे पाठकक अभाव आर बेसी भ' गेल अछि।

वास्तविकता तँ ई अछि जे मैथिली साहित्यकार लोकनि केँ छाड़ि, जनसामान्य केँ मैथिली कविता सँ कोनो प्रयोजन नहि छैक। एकर मुख कारण छैक शिक्षाक अभाव। उच्च वर्गक लोक मे शिक्षाक अभिवृद्धि थोड़-बहुत अवश्य भेल अछि, मुदा सर्वहारा वर्ग (down trodden class) मे एखनहुँ शिक्षाक नितान्त अभाव छैक। एहना अवस्था मे, किछु लोक केँ छाड़ि, अहाँक कविता सँ ककरो की लेबाक-देबाक छैक? रहल अतुकान्त कविता मे बोधगम्यताक प्रश्न। यथार्थ तँ ई अछि जे अधुना विश्व भरि मे अतुकान्ते कविता (Blank Verse) क बोलबाला छै आ संसार मे सर्वाधिक अतुकान्ते कविता लिखल जा रहल अछि। मैथिली एहि दिशा मे ककरहु सँ पाछाँ नहि अछि। महाकवि यात्री सँ ल'क' अजित आजाद धरि जाहि कवि लोकनिक नामोल्लेख अपने द्वारा कएल गेल अछि, ओ सभ नव (अतुकान्त) कविताक प्रतिनिधि कवि छथि आ हिनका लोकनिक कविता सर्वथा बोधगम्य अछि, सुपाठ्य अछि। ओना आइयो 'रजनी-सजनी' मार्का कविता, किंवा छन्दक आश्रय मे जे 'अगड़म-बगड़म' लिखल जा रहल अछि, ताहि सम्बन्ध मे हम किछु नहि कहए चाहैत छी। मैथिली मे 'अहो रूपम् अहो ध्वनि:' केर प्रचलन खूबे छैक, से तँ अहाँ केँ बुझले अछि।

हम : की अहाँ मानैत छी जे मैथिलीक नव (अतुकान्त) कविता जतबे मैथिली भाषा केँ विश्व साहित्यक समकक्ष ठाढ़ केलक अछि, ततबे मिथिलाक जड़ि सँ कटि गेल अछि?

मल्लिकजी : हमरा दृष्टि मे नव कविता मिथिलाक जड़ि सँ कटल नहि अछि, प्रत्युत ओकर आयाम विस्तृत भ' गेल अछि। आइ नव कविता आँचलिकताक परिधि केँ तोड़ि, 'डॉगमैटिज्म' केँ नकारि, वैश्विक भ' गेल अछि जे एकर जीवन्तताक परिचायक थिक। ओ आइ मिथिलाक कलमबाग सँ निकलि अनंत अकास मे चान-सुरुज केँ स्पर्श करए चाहैछ, मुदा ओकर पएर अपन सुजला-सुफला भूमिए पर छैक। खेत मे काज करैत लोकक हाथ मे हँसुआ-खुरपीक संग-संग मोबाइल सेहो आबि गेल अछि। गाम सँ ल'क' शहर धरि घर-घर मे कम्प्यूटर, टी.वी., इन्टरनेटक व्यवस्था छैक; गाम-गाम मे आइ पसीखाना आ भाँगक स्थान पर जूआखाना आ शराबखाना आबि गेल अछि; गाम-घर मे आइ बन्नूक-पिस्तौलक अवाज सेहो सुनल जाइछ। एकरा की कहबैक अहाँ? युगानुरूप परिवर्तनें ने?

हम : की अहाँ कहि सकैत छी जे विद्यापति आइयो किएक प्रासंगिक छथि?

मल्लिकजी : महाकवि विद्यापति महान ऊर्जस्वित, क्रान्तिकारी, समन्वयवादी, प्रखर चेतना-सम्पन्न राजनीतिज्ञ, दरबारी कवि होइतहुँ जनसामान्यक पक्षधर रहलाह अछि। भारतीय भाषाक प्रथम 'सेक्यूलर' कवि ओएह रहलाह अछि। विद्यापतिक राधा, उत्तर आधुनिक नायिकाक रूप मे प्रस्तुत होइत छथि—देश-काल आ समाजक वर्जना सँ उन्मुक्त, विन्दास, आ क्रान्तिकारी। तें प्राचीन होइतहुँ विद्यापति प्रासंगिक छथि, सार्वकालिक आ आधुनिक छथि।

हम : मिथिलाक जनसामान्यक लेल काशीकान्त मिश्र 'मधुप', प्रवासी साहित्यालंकार, चन्द्रभानु सिंह, प्रभु नारायण झा 'मैथिल पुत्र', रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सियाराम झा 'सरस', चन्द्रमणि, फूलचन्द्र आ 'प्रवीण', अशोक कुमार मेहता, जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत बेसी कर्णप्रिय आ रुचिगर होइत अछि। की अहाँ एहि सँ सहमत नहि छी? जँ 'हँ' तँ किएक? आ 'नहि' तँ किएक?

मल्लिकजी : उल्लिखित सभ महापुरुष मैथिली साहित्यक वरिष्ठ आ लोकप्रिय गीतकार छथि। जनसामान्य आइयो हिनका लोकनिक गीत सुनि झूमि उठैत अछि। साहित्य मे गीतकाव्य (Lyric) केर अपन महत्त्व छैक आ मुक्त छन्दक अपन वैशिष्ट्य थिकैक। गीत गाओल जाइछ आ कविता पढ़ल जाइछ—'गीतम् गेयम् कविता पठ्यम्।' गीतकार मंचक शोभा होइछ, तँ कवि साहित्यक शृंगार। दुनूक सहयोग सँ लोकवेदक रंजन होइछ। निम्न गीत अपना समय मे कतेक जनप्रिय छल, से सर्वविदित अछि—

'हम जेबै कुसेसर भोर, रंगि क' ठोर,
पहिरि क' काड़ा, झनकाय झनाझन छाड़ा।'

हम : की अहाँ वर्तमान परिदृश्य मे मैथिली कविता सँ आश्वस्त छी?

मल्लिकजी : हम वर्तमान मैथिली कविता सँ आश्वस्त छी। सर्वश्री रमेश, नारायणजी, कामिनी आ अजित आजाद हमर प्रिय कवि छथि। सर्वथा नव तूरक कवि मे चन्दन कुमार झा, दिलीप कुमार झा, मनोज शाण्डिल्य, विकास वत्सनाभ, प्रभृति कविक कविता हमरा आश्वस्त करैछ।

संसद सँ चिनमार धरिक परिवेश मे जे परिवर्तन आएल अछि, भारतीय समाज मे जे एक नव कठजीवी मानव प्रजातिक जन्म भेल अछि, गिरगिट जकाँ रंग बदलैत नेता, निर्लज्ज सांसद, खानदानी मंत्री आ भ्रष्ट तंत्र—जतए नैतिकता बिला गेल अछि, विश्वास निपत्ता भ' गेल अछि, तकर 'फोटो कॉपी' सहजहिं उपलब्ध भ' जाइछ चन्दन कुमार झाक कविता मे।

दिलीप कुमार झाक कविता मे युग-यथार्थक जीवन्त चित्रण, बजारवादक दुष्परिणाम सँ टकराइत कछमछाइत लोकवेदक विवशताक विश्लेषण, महँगीक मारि सँ संत्रस्त जनसामान्यक रूदन-क्रन्दन केर अति यथार्थ (Sur-realism)क अंकन आ राजनेता वर्ग मे व्याप्त अराजकता ओ भ्रष्टाचार आदिक एक सँ एक चित्र प्राप्त होइछ। जीवनक प्रति अटूट आस्था, जिजीविषा आ अन्तहीन संघर्ष हिनक कविताक अपन वैशिष्ट्य छनि।

तहिना मनोज शाण्डिल्यक कविता मे जीवनक प्रति अटूट आस्था आ विश्वासक प्राप्ति होइछ, तँ नकारात्मकताक स्थान पर सकारात्मकताक उपलब्धि होइछ। हुनका पूर्ण आशा आ विश्वास छनि ('आशा पर संसार टिका है') जे अराजकताक एक दिन हेतैक अन्त, धुन्ध छटतैक निराशा हटतैक आ मिझैतैक बर्बरताक आगि। ई सकारात्मक सोच आ चिन्तन नव तूरक कवि लोकनिक बड़ पैघ उपलब्धि अछि आ जे हमरा आश्वस्त करैछ।

हम : की अहाँ मानैत छी जे लिखबाक लेल पढ़ब आवश्यक अछि?

मल्लिकजी : वर्तमान युग मे लिखबाक लेल पढ़ब आवश्यक। अधुना ज्ञान-प्राप्तिक प्रमुख साधन भेल पोथी, सद्ग्रन्थ। विभिन्न विषयक पोथीक अध्ययन-अनुशीलन सँ विभिन्न प्रकारक ज्ञान प्राप्त होइछ। 'वेद'क तँ अर्थे अछि ज्ञान (Knowledge)। ज्ञान-विज्ञानक भण्डार भेल वेद। ओना ज्ञान-प्राप्तिक आओर अनेक साधन उपलब्ध छैक एहि वैज्ञानिक युग मे। कूप-मंडूक बनला सँ काज नहि चलैछ। बन्न घर मे रहला सँ रौद-बसात सँ वंचित रहए पड़ैछ। प्रकृतिक अनुपम-अनिन्द्य सुषमाक दर्शन घर सँ बहरेले सन्ता प्राप्त होइछ। लोक-वेदक बीच रहि क', ओकर सहभोक्ता बनि क' सेहो ज्ञानार्जन कएल जा सकैछ। सत्संग तँ अदौ काल सँ ज्ञानार्जनक सहज ओ उत्कृष्ट साधन रहल अछि। तँ कहलो गेल अछि—

काचः कांचन संसर्गात् धत्तेमारकतों द्युतिम्।
तथा तत्संनिधानेन मूर्खोयाति प्रवीणताम्॥

गोस्वामी तुलसीदासक कथन तँ जगत-प्रसिद्ध अछिए—

सठ सुधरहिं सतसंगति पाई।
पारस परस कुधातु सुहाई॥

एतबहि नहि, यात्राक माध्यम सँ सेहो बहुविधि ज्ञानक उपलब्धि होइछ। यथार्थे कहल गेल अछि—

सैर कर दुनिया का गाफिल, जिन्दगानी फिर कहाँ?
जिन्दगानी 'गर मिली तो, नौजवानी फिर कहाँ?

हम : वेदव्यास, कालिदास आ विद्यापति की पढ़िक' महाभारत, अभिज्ञान शाकुन्तलम् आ कीर्तिलता, पदावली लिखलनि?

मल्लिकजी : वेदव्यास, कालिदास आ विद्यापति सदृश महाकविक प्रादुर्भाव विरल होइछ। कालजयी कविक संख्या अल्पे होइछ। 'वयमपि कवयः कवयस्ते कालिदासाद्याः' कहला सँ की क्यो कालिदास भ' सकैछ? कीट्स (Keats), शेली (Shelley) आ शेक्सपियर (Shakespeare) कएक टा अछि? 'एकः चन्द्रः तमो हन्ति न च तारा सहस्त्रसः।' कोहिनूर हीरा तँ जगत मे एकहि टा छै ने? वेदव्यास, कालिदास आ विद्यापतिक प्रादुर्भाव की बेरि-बेरि होइछ? सभक अपन-अपन प्रतिभा, अपन-अपन वैशिष्ट्य। तँ अनेरे नहि कहल गेल अछि—

उपमा कालिदास्य भारवे अर्थ गौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यम् माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

निश्चित रूपें वेदव्यास, कालिदास आ विद्यापति केँ अपन युगक ज्ञान-साधन, तत्कालीन समाज ओ वेद-पुराणक गहन अध्ययन छलनि, विश्व-ब्रह्माण्डक गुरु-गम्भीर मनन-चिन्तन छलनि, तें ओ सभ उपर्युक्त कालजयी कृतिक रचना क' सकलाह। हँ, हुनका कोनो विश्वविद्यालय द्वारा पीएच.डी., डी.लिट. आदिक उपाधि सँ अलंकृत नहि कएल गेल छलनि। साहित्य-लेखन लेल तकर कोनो बेगरतो नहि पड़ैछ।

हम : की अहाँ साहित्य-लेखन केँ सरस्वतीक वरदान मानैत छी? जँ 'हँ' तँ किएक आ 'नहि' तँ किएक?

मल्लिकजी : हम साहित्य-लेखन केँ सरस्वतीक वरदान मानबाक पक्ष मे नहि छी, कारण धर्म-प्राण एहि देश मे जतेक देवी-देवताक पूजा होइछ, ओ सभ मनुक्खे छलाह, कोनो विशिष्ट इतर प्राणी नहि। वस्तुतः साहित्य-लेखनक पाछाँ कोनो-ने-कोनो रूप मे आनुवंशिकताक हाथ रहैछ। 'जीन्स' (Genes) पर जे सम्प्रति अनुसन्धान भेल अछि, से एहि बातक पुष्टि करैछ। तखन जन्मजात प्रतिभा आ अभ्यास साहित्य-लेखनक लेल अपेक्षित।

हम : अहाँ चारू वेद आ अठारहो पुराणक अध्ययन आ मनन कएने छी, तथापि अहाँ मात्र 'अग्नि-शिखा' टा मैथिली साहित्य केँ अद्यावधि देलियैक अछि। एकर की कारण?

मल्लिकजी : सर्वप्रथम हम स्पष्ट क' दी जे हम एक साधारण मनुक्ख छी— जिजीविषा आ युयुत्सा सँ परिपूर्ण, 'अर्जुनस्य वचने द्वै न दैन्यम् न पलायनम्' मे विश्वास केनिहार, यथाशक्ति जीवन मे चरितार्थ केनिहार। प्रारम्भिक साहित्यिक जीवन मे हम मार्क्स, लेनिन, माओ आदिक दर्शन आ साहित्य (Philosophy and Literature) मे डूबल रहलहुँ। कामू, कफ्का, सार्त्र, किरकेगार्ड, साइमन-द-बुआक अध्ययन करैत रहलहुँ, पाश्चात्य साहित्य आ दर्शन केर अध्ययन-अनुशीलन मे व्यस्त रहि फ्रायड, युंग, एडलर आदिक मनोविज्ञान केँ पढ़ैत-गुनैत रहलहुँ। तत्पश्चात् जिज्ञासावश प्राचीन वैदिक वाङमय केर यत्किंचित ज्ञान प्राप्त करबाक लेल वेद-वेदांग, पुराण आदिक थोड़-बहुत अध्ययन कएल। वास्तव मे हम शास्त्र-पुराणक ज्ञाता नहि, मात्र एक विद्यार्थी छी। वैदिक वाङमय ज्ञानक अनन्त सागर थिक आ तकर अनुभव आइ जीवनक अन्तिम अवस्था मे क' रहल छी। मुदा 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।' अस्तु, रहल पोथी प्रकाशनक बात, से अद्यपर्यन्त हम मैथिली साहित्य केँ किएक मात्र 'अग्नि-शिखा' (काव्यसंग्रह) आ 'प्रेम सौन्दर्य विधायक विद्यापति' (शोध-ग्रन्थ) द' पओलहुँ अछि, तकर ओना तँ अनेक कारण अछि, मुदा प्रधान कारण अछि मैथिली मे पुस्तक प्रकाशन-व्यवस्थाक अभाव। अन्य कारण मे अछि अर्थाभाव आ 'गृह कारज नाना जंजाला'। ओना, पाँच-सात गोट पोथीक पांडुलिपि तैयार प्रकाशनक बाट जोहि रहल अछि।

हम : अहाँ कीर्त्तिनारायण मिश्रक सहयोग सँ 'आखर' पत्रिकाक सम्पादन केलहुँ। ओहि पत्रिकाक खूब चर्चो भेल छल। मुदा असमय बन्न भ' गेल, से कोन परिस्थिति मे?

मल्लिकजी : कोलकाता सँ सन् 1967 ई. मे लीक सँ हटिक' 'आखर' नामक मासिक पत्रिकाक प्रकाशन प्रारम्भ भेल जकर युगल सम्पादक छलाह कीर्त्तिनारायण मिश्र आ वीरेन्द्र मल्लिक। एकर प्रकाशन, संचालन आ वितरणक दू गोट स्तम्भ छलाह—राजनन्दन लाल दास आ पीताम्बर पाठक। सुन्दरकान्त झा जीक डेराक छत पर 'आखर'क बैसार होइत छलैक आ बहसा-बहसीक उपरान्त गरम-गरम सिंघारा आ चाहक संग सभा विसर्जित होइत छल। एवं विध, नव लेखनक स्थापना आ भाषा-आन्दोलन मे 'आखर'क अहम् भूमिका छलै। अर्थाभाव आ आपसी ईर्ष्या-द्वेषक कारणें एकर प्रकाशन बन्न भ' गेल। बाद मे कोलकते सँ 'अग्नि-पत्र'क प्रकाशन प्रारम्भ भेल जकर सम्पादक छलाह वीरेन्द्र मल्लिक ओ सहयोगी छलाह सुकान्त सोम आ रामलोचन ठाकुर। उच्च स्तरीय रचना-चयन, नव लेखनक संवर्धन आ अभिनव

कलात्मकताक कारणें ई मैथिली साहित्य जगत मे खूब धूम मचौने छल। एकरहि प्रकाशन सँ 'अग्नि पीढ़ी'क जन्म भेल छल। मुदा आपसी वैमनस्यक कारणें, अहम् (Ego)क टकराहटि सँ एहू पत्रिकाक प्रकाशन बन्न भ' गेल।

हम : 'मि' पत्रिकाक मादे अहाँक की अवधारणा छल? ओहि पत्रिका मे जीवकान्तजीक एक टा चर्चित कविता 'खबरदार! औ बूढ़, दुनू हाथ उठाउ, फटाक!' कोन परिप्रेक्ष्य मे लिखल गेल छल?

मल्लिकजी : 'मि' पत्रिका सेहो कोलकते सँ प्रकाशित भेल छल सन् 1970 ई. मे। एकर सम्पादक छलाह वीरेन्द्र मल्लिक आ गुणनाथ झा। ई ओ समय छल, जखन भारतक विभिन्न भाषा-साहित्य मे मिनी पत्रिका हड़विर्रो मचौने छल, मुदा मैथिली मे एकर सर्वथा अभाव छल। दिनकरक एक कविता-पंक्ति—

'छप्पड़ तक उड़कर जा सकती,
अम्बर मे आग लगा सकती,
एक छोटी-सी चिनगारी भी।'

सँ उत्प्रेरित आ अंग्रेजीक एक कविताक निम्न पंक्ति सँ प्रोत्साहित भ' 'मि' पत्रिकाका प्रकाशन कएल—

'Little drops of water
Little grains of sand
Make a mighty ocean
And the pleasant land'

'मि' पत्रिकाक सन्दर्भ मे एक घटनाक उल्लेख करब आवश्यक बुझना जाइछ। 'मि' पत्रिकाक प्रथम अंक हाथ मे आबि गेल छल। हम आ गुणनाथ जी ऊर्जस्वित-प्रोत्साहित भ' एकरा बेचबाक लेल हावड़ा स्टेशन पहुँचलहुँ। 'मिथिला एक्सप्रेस' मैथिल यात्री सँ खचाखच भरल छल। 'दस पइसा, दस पइसा, मात्र दस पइसा मे मैथिली मिनी पत्रिका किनैत जाउ, पढ़ैत जाउ, गाम सनेस नेने जाउ' केर हाक लगबैत 'पेपर वेंडर' जकाँ हम दुनू गोटे प्लैटफार्मक कएक बेर चक्कर लगेलहुँ, मुदा निराशाक अतिरिक्त किछु हाथ नहि लागल। गाड़ी फुजि गेल छलै। हम दुनू गोटे मुड़ी लटकओने हावड़ा पुल दिस विदा भेलहुँ। मोन तँ भेल जे हावड़ा पुल सँ कुदि पड़ी, मुदा कहबी 'हिम्मते मर्द, मदते खुदा' केँ स्मरण करैत कोनो तरहें बासा पहुँचलहुँ। ई छल भोगल यथार्थ-मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन, वितरण आ विपणनक एक छोट-छीन कथा।

जतय धरि जीवकान्तजीक चर्चित कविताक सन्दर्भ अछि, सुनैत छी जे एहि कविता केँ पढ़िक' कोनो सम्मेलन मे ऊर्जावान कवि किरण जी जीवकान्तक सोझाँ मे अपन दुनू हाथ ऊपर उठाक' ठाढ़ भ' गेल छलथिन। जे-से। वस्तुत: ई ओ काल-

खण्ड छल जखन मैथिलीक नव-पुरान पीढ़ी मे संघर्ष चरम पर पहुँचि गेल छलै। नव लेखनक रचनाकार अपन अस्तित्वक लेल संघर्षरत छलाह। नवहु मे कतेको 'सुरसुर-मुरमुर' दुनूक उपभोग क' रहल छलाह। एहने परिस्थिति मे जीवकान्तक कविता प्रकाश मे आएल छल। तथास्तु, 'मि' पत्रिकाक लेल बहुचर्चित कवि धूमकेतुक एक लघूत्तम कविता सेहो आएल छल जे हमरा हिलाक' राखि देने छल। ओ कविता एखनहुँ याद अछि—

'की यौ—
यैह ?'—धूमकेतु

हम : अहाँक परिचय अग्निजीवी कविक रूप मे रहल अछि। 'मिथिला मिहिर'क सम्पादक सुधांशु शेखर चौधरी अग्निलेखक रामलोचन ठाकुर, अग्निपुष्प, कुणाल, गौरीनाथ, नरेन्द्र प्रभृति केँ अगिमुतु साहित्यकार कोन परिप्रेक्ष्य मे कहने दलाह ?

मल्लिकजी : 'मिथिला मिहिर'क बहुचर्चित-अर्चित सम्पादक सुधांशु शेखर चौधरी जी 'अग्निपत्र'क मुक्त कंठ सँ प्रशंसा कएने छलाह, जनिक अभिमत संक्षिप्त रूप मे 'अग्नि-पत्र'क दोसर अंक मे प्रकाशित अछि। अग्निजीवी लेखक पाखण्डक विरुद्ध ठाँहिं-पठाँहिं बजैत छलाह। कटु सत्यक प्रवक्ता छलाह। 'न ब्रूयात् सत्यमप्रियमं' मे किनको विश्वास नहि छलनि। ताहि समय मे 'नक्सलवाद'क अनघोल मचल छलै। 'आमार बड़ी तोमार बाड़ी नक्सल बाड़ी' गीतक बोल सँ कॉफी हाउस गुंजित रहैत छल। अग्निजीवी लेखक पर तकरहु यत्किंचित प्रभाव पड़ल छलै जाहि सँ अनेक पुरानपंथी लेखक मर्माहत छलाह। तें सुधांशुजीक उपर्युक्त शब्द (अगिमुत्तू) व्याजस्तुति (निन्दा द्वारा प्रशंसा आ प्रशंसा द्वारा निन्दा)क रूप मे प्रयुक्त कएल गेल अछि।

हम : अहाँ कोलकाताक रंगमंच सँ सेहो जुड़ल रहल छी। रंगमंचक अपन अनुभव कोन रूपें साझी कर' चाहब ?

मल्लिकजी : मैथिली नाटक आ रंगमंचक विकास मे कोलकाताक अमित योगदान रहल अछि। एहि सन्दर्भ मे गुआहाटी सँ सत्यानन्द पाठकक सम्पादन मे प्रकाशित 'पूर्वोत्तर मैथिल'क कोलकाता विशेषांक' (सम्पादक : लक्ष्मण झा सागर) संग्रहणीय ओ पठनीय अछि जाहि मे 'मैथिली नाटक आ रंगमंच मे कोलकाताक अवदान' शीर्षक सँ हमर एक विस्तृत आलेख सेहो प्रकाशित अछि। वस्तुतः मैथिली नाटक आ रंगमंचक विकास मे कोलकाताक विभिन्न नाटककार, नाट्यानुवादक, नाट्य संस्था, रंगकर्मी ओ अन्यान्य सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाक अमित अवदान रहलैक अछि। मैथिली रंगमंच केँ आधुनिक, आकर्षक आ प्रभावपूर्ण बनयबा मे 'मिथिला कला केन्द्र', मैथिली रंगमंच' ओ 'मिथि यात्री'क संस्था सदति अग्रणी रहल अछि। उल्लिखित तीनू संस्था गम्भीर, प्रायोगिक आ शैल्पिक; मौलिक, अनूदित आ

रूपान्तरित नाटकक मंचन करैत रहल अछि। एहि तीनू नाट्य संस्थाक ऐतिहासिक महत्त्व छैक, कारण एकरा द्वारा नव-नव शैलीक रंगनाटकक निरन्तर प्रकाशन ओ मंचन होइत रहल अछि। मैथिली रंगमंचक विजय-यात्राक दोसर चरण मे (सन् 1983 ई. सँ अद्यपर्यन्त) जाहि संस्था सबहिक सर्वाधिक अवदान रहलैक अछि, तकर नाम थिक—'मिथिला विकास परिषद', 'कोकिल मंच' ओ 'झंकार' जे निरन्तर एक सँ बढ़िक' एक नाट्य-मंचन क' रहल अछि आओर एहि संस्था सभक क्रमशः सिपहसालार छथि अशोक झा, गंगा झा ओ शम्भूनाथ मिश्र।

एतावता, ई कोलकते अछि जतय सर्वप्रथम डॉ. अणिमा सिंहक अध्ययन कक्ष मे कुणाल द्वारा 'ड्राइंगरूम ड्रामा' प्रस्तुत कएल गेल छल। बूबी (नचिकेता)कें कोठरी मे बन्न क' श्रीकान्त मंडल द्वारा मैथिलीक चर्चित नाटक 'एक छल राजा' केर रचना करबाओल गेल छल तथा रामलोचन ठाकुर द्वारा लेक गार्डेन्सक फुटपाथ पर 'स्ट्रीट ड्रामा' प्रस्तुत कएल गेल छल। ई कोलकते अछि जतय गुणनाथ झा, दयानाथ झा, विश्वम्भर ठाकुर, राजेन्द्र मल्लिक, फेकू मिश्र आदिक संयुक्त सहयोग सँ टिकट बिक्रीक व्यवस्था आ 'काउन्टर सेल'क नियोजन क' मैथिली रंगमंच कैँ व्यावसायिकताक दिशा मे अग्रसर कएल गेल छल।

ई कोलकते अछि जे गुणनाथ झा, नचिकेता, बाबू साहेब चौधरी, कुणाल, राजनन्दन लाल दास, अशोक झा, कृष्णचन्द्र झा 'रसिक', विन्देश्वर मंडल, उत्तम लाल मण्डल, देवन मंडल, मधुर लाल मंडल, ललन प्रसाद ठाकुर, प्रमोद कुमार ठाकुर प्रभृति नाटककार; डॉ. प्रबोध नारायण सिंह, डॉ. अणिमा सिंह, डॉ. इलारानी सिंह, डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक, सीताराम चौधरी, कुणाल, निरसन लाभ, दीनानाथ झा, मोहन चौधरी सदृश नाट्यानुवादक; श्रीकान्त मंडल, दयानाथ झा, कमल नारायण कर्ण, रामलोचन ठाकुर, कुणाल, अशोक झा, गंगा झा, शम्भूनाथ मिश्र सदृश नाट्य-निर्देशक; दयानाथ झा, राजेन्द्र मल्लिक, फेकू मिश्र, विश्म्भर ठाकुर, श्रीकान्त मंडल, रामलोचन ठाकुर, अशोक झा, गंगा झा, शम्भूनाथ मिश्र सन माँजल अभिनेता; तथा चन्द्रकला, उमा भारती, शारदा चौधरी, मंजु मल्लिक, शैल झा, शैल झा 'सागर', प्रतिभा झा, वन्दना झा सुदृश प्रवीण अभिनेत्री प्रदान कएने अछि।

कत' धरि बताउ ! गुणनाथ झाक सम्पादन मे 'लोकमंच' ओ रामलोचन ठाकुरक सम्पादन मे 'रंगमंच' सदृश नाट्य-पत्रिकाक प्रकाशनक प्रथम श्रेय कोलकते केँ प्राप्त छैक। किम् अधिकम् ?

हम : कोलकाताक मैथिली आन्दोलन मे रंगमंचक केहन भूमिका रहल अछि ?

मल्लिकजी : कोलकाताक मैथिली आन्दोलन मे रंगमंचक अहम भूमिका रहल अछि। कारण प्रत्येक कार्यक्रम मे भाषण-भूषण, नाच-गानक पश्चात् कोनो-ने-कोनो

नाटक खेलल जाइत छलैक। नाटकक नाम सुनितहि लोकक करमान लागि जाइत छलैक प्रेक्षागृह मे। दर्शक जुटयबाक हेतु, भीड़ एकट्ठा करबाक लेल कोनहुँ संस्थाक वास्ते नाटक करब एक तरहें अनिवार्य भ' गेल छलैक। सुतरां, नाट्य-प्रस्तुति दर्शक जुटयबाक एक सशक्त माध्यम बनि गेल छलैक। एतावता, गाम सँ ल'क' नगर-महानगर धरि मे रंचमंच मैथिली आन्दोलनक अभिन्न अंग बनि गेल छलैक।

हम : अहाँक सहकर्मी रंगकर्मी के सभ छलाह? अहाँ किनका सँ सर्वाधिक प्रभावित छलहुँ?

मल्लिकजी : हम छात्र-जीवनहि सँ नाटक ओ रंगमंच सँ जुड़ल रहलहुँ अछि। अपना गामक नाट्यायोजन मे अभिनव अभिनय करबाक हेतु मुख्य अतिथि तत्कालीन डी.एम. ए.डी. मोडी सँ हम पारितोषिकक संग-संग अजस्र प्रशंसा प्राप्त कएने छलहुँ। गामक एक अन्य नाटक मे मौलवीक अभिनय मे अपन प्रतिद्वन्द्वी केँ स्टेज पर बन्नूक चलाक' खूनेखुनाम क' देने छलियैक। दर्शक मध्य बैसल प्रतिद्वन्द्वीक माय छाती पीटैत जोर-जोर सँ चिचिया उठल छलथिन—'दैवा रे दैवा! सरधुआ हमरा बेटा केँ मारि देलक रे दैवा! दौड़ैत जाइत जाह हौ लोक सभ।' एक विचित्र हंगामा ठाढ़ भ' गेल छलैक आ किछु कालक लेल नाटक बन्न भ' गेल छलैक। पुन: शान्ति स्थापित भेले पर नाटक चालू भेल। चिचिआएवाली महिला आर क्यो नहिं, हमर गुलाबकाकी छलीह आ खून मे रंगल छलथिन हुनक दुलरुआ पूत कुशेश्वर। ई घटना हमरा गामक गांधी स्मारक पुस्तकालयक प्रांगण मे घटित भेल छल।

जतय धरि कोलकाताक रंगमंचक सम्बन्ध अछि, हम 'मिथि यात्री'क एक नाटक मे डाक्टरक अभिनय केने छलहुँ, तकरा बाद अभिनय छोड़ि देल। वस्तुत: हम मुख्य रूपें पर्दाक पाछाँ सूत्र-धारक काज करैत रहलहुँ अछि। दोसर शब्द मे—'पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर' केर काज करैत रहलहुँ अछि हम, सएह बूझल जाए। रहल सहकर्मी रंगकर्मीक बात, से 'मिथि यात्री'क ऊर्जावान रंगकर्मी गुणनाथ झा, दयानाथ झा, विश्वम्भर ठाकुर, राजेन्द्र मल्लिक, फेकू मिश्र आदि ओ 'मैथिली रंगमंच'क 'बेकन लाइट, शलाका पुरुष श्रीकान्त मंडल आदि हमर सहकर्मी रहलाह अछि। हम बंगलाक महान रंगकर्मी रूद्रप्रसाद सेनगुप्त आ हिन्दीक स्वनामधन्य रंगकर्मी उषा गांगुलीक रंगकर्म सँ अनुप्रेरित-अनुप्राणित होइत रहलहुँ।

हम : वर्तमान परिदृश्य मे कोलकाताक रंगमंचक प्रति अहाँक की धारणा अछि? केहन अपेक्षा अछि?

मल्लिकजी : सन् 1955 ई. सँ 1975 ई. पर्यन्त—एहि दू दशकक कालावधि मे कोलकाताक मैथिल द्वारा नाटक आ रंगमंचक विकास मे जे कार्य कएल गेल अछि, ओ सर्वतोभावेन स्तुत्य एवं वरेण्य अछि। रंगमंचक जे समृद्ध परम्परा एहि दू दशकक

मध्य स्थापित भेल छल से आइयो सुरक्षित अछि आ द्रुत गतिएँ अग्रसर भ' रहल अछि। वर्तमान मे कोलकाताक दू गोट संस्था—'मिथिला विकास परिषद' आ 'कोकिल मंच' पूर्व स्थापित परम्पराक निर्वहन मनसा-वाचा-कर्मणा क' रहल अछि। 'मिथिला विकास परिषद'क आधार-स्तम्भ अशोक झा ओ हुनक युवा सहयोगी लोकनिक अनन्य मैथिली-प्रेम तथा 'कोकिल मंच'क प्रतिबद्ध रंगकर्मी गंगा झाक दुर्दान्त साहस ओ नवो नारायण मिश्रक अपरिमेय संगठनात्मक शक्ति अनन्त श्लाघाक अधिकारी अछि। हम हिनका लोकनिक कार्य-क्षमता सँ पूर्णतया आश्वस्त छी। ई सभ एकबद्ध भ' आगाँ बढ़थि, सभ केँ संग ल' जमानाक साथ चलथि, नवतुरिया केँ संग ल' भविष्य केँ सुरक्षित राखथि, सएह हमर एषणा, हमर अपेक्षा। अन्त मे हम तँ इएह कहब—

'हयात ले के चलो, कायनात ले के चलो।
चलो, तो सारे जमाने को साथ ले के चलो॥'

हम : कोलकाता सँ विस्तापनक टीस कोन रूपें व्यथित करैत अछि?

मल्लिकजी : कोलकाताक जुनि चर्चा करू। विस्थापनक बाद 'कोलकाता' केर नाम सुनितहि हृदय मे एक टीस उठय लगैछ, एक सँ एक चित्र सिनेमाक रील जकाँ घूमय लगैछ—हावड़ा ब्रिज, गणेश टाकीज, कलाकार स्ट्रीट, तारा सुन्दरी पार्क, गिरीश पार्क, सोना गाछीक भौजी, भुवन बाबूक चायखाना, 14-मदन चटर्जी लेनक अपन बासा—एक-एक टा स्थान आ लोक मोन पड़ि रहल अछि। आओर ओएह रहल कालेज स्ट्रीट, विद्यापति विद्या मन्दिर, राजेन्द्र छात्र निवास, कने आओर आगाँ बढलापर प्रेसिडेंसी कालेजक गरिमामय वातावरण, ओकरा मुँहथरिपरक फुटपाथ पर पुरना पुस्तक सभक विराट मेला, सोझाँ मे कालेज स्ट्रीकक प्रसिद्ध कॉफी हाउस आ बगले मे ठाढ़ कलकत्ता विश्वविद्यालयक विशाल गगनचुम्बी भवन! आओर कने बढ़ू—ओएह रहल चौरंगी, धर्मतल्लाक कॉफी हाउस, शाकी बार, खलासी टोला, ग्रैंड होटलक 'एस्क्रिप्टीज डांस', पार्क स्ट्रीटक 'जीरो आवर'क रंगारंग प्रोग्राम!

आओर ई रहल दक्षिण कोलकाता, रासबिहारी एवेन्यूक लगीचे मे नरेन्द्र झा जीक डेरा आ ताहि मे पन्नाजी (डॉ. पन्ना झा)क हाथक बनाएल गरमागरम चाह आ बिस्कुट, संगहिं साहित्यिक चर्चा-परिचर्चा, आगाँ देशप्रिय पार्कक साहित्यिक अड्डा, बउदीक दोकानक बेगुन भाजा, शेली कैफेक 'फिश फ्राइ', लेक गार्डेन्सक चायखाना आ झाजीक पानक दोकान, मोटर गैरेजक ऊपर श्रीकान्त मंडल जीक कोठरी आ ताहि मे कतेकहु मैथिली नाटकक 'रिहर्सल', सटले गुणनाथ जीक डेरा आ तकर छत पर सँ स्पष्ट देखाइत ढाकुरिया लेक, स्पष्ट सुनाइ पड़ैत रेलक सीटी, आओर पानक दोकान सँ कनेक आगाँ सोझाँ मे तिकोनियाँ पार्क आ तकर सटले ए-132,

'मिथिला दर्शन'क कार्यालय, मतलब प्रबोध बाबूक आवास, यानि मिथिलाक विभूति लोकनिक आतिथ्य-स्थल आ महिमा-मंडित मिलन-मंडप!

आ, ई रहल गयिहाटक चौराहा—दक्षिण कोलकाताक हृदय-स्थल, कने आगाँ भेटत बालीगंज रेलवे स्टेशन आ तकरा पाँजर मे बैकुण्ठ घोष रोड, माने कस्बावला हमर डेरा-स्मृति-पुंजक आवास, एहि सँ दू डेग पच्छिम पिकनिक गार्डे रोडवला हमर डेरा, जतय आएल छलाह सोमदेव-जीवकान्त, जतय बिताओल गेल छल रिफ्यूजी सभक बीच संघर्षपूर्ण जीवनक कएक बर्ख। आओर लिअ', ई रहल बालीगंज फाड़ी आ तकर सटले एम.जी. रूँगटा अकादमी—जतय कार्यरत रहलहुँ जीवनक महत्त्वपूर्ण पचपन बर्ख, लड़ैत-झगड़ैत, संघर्ष करैत, आनन्द मनबैत लोकप्रिय शिक्षकक रूप मे हम। आ ई रहल यादवपुर थानाक मंडल जीक एगारह तल्लाक फ्लैट, आ ताहि मे 'ललका पाग' फिल्मक लेल नायक-नायिकाक हेतु एकत्र भीड़, गीत-नाद आ हंगामा! की कहू सागर जी, एक-एक दृश्य आइयो बिम्बित-प्रतिबिम्बित भ' उठैछ! 'नॉस्टेल्जिया'क शिकार भ' जाइत छी हम!

ओना कोलकाता मे हमर पर्दापण भेल छल सन् 1957 ई. मे आ तहिया सँ, हमर सम्पूर्ण जीवन ओत्तहि कटल। मैथिली आन्दोलन, नाट्य आन्दोलन, पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन, विद्यापति पर्व समारोह, मिथिला-मैथिली सँ सम्बन्धित प्राय: सभ कार्य-कलाप मे सहभोक्ता-सहधर्मी रहलाह अछि वीरेन्द्र मल्लिक, अपन घर जराक' आनन्दित होइत रहलाह अछि ई कबीर।

अहाँ कोलकाताक चर्चा कएल आ आँखिक सोझाँ मे नाचय लागल अछि आइ ओतुक्का एक सँ एक महान विभूतिक दीपित दिनेन्द्र सदृश मुखमंडल—सर्वप्रथम बाबू साहेब चौधरी, डॉ. प्रबोध नारायण सिंह, डॉ. अणिमा सिंह, हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु', परमेश्वर मिश्र, उदित नारायण झा, उदित नारायण झा 'हैंठीवाली', महेन्द्र नारायण झा, चन्द्रकान्त मिश्र, राज कुमार मल्लिक, शरतचन्द्र मिश्र, शुकदेव ठाकुर, नरेन्द्र झा, डॉ. पन्ना झा, श्रीकान्त मंडल, डॉ. इलारानी सिंह, डॉ. अशर्फी झा, महावीर झा, इन्द्रगोविन्द झा, मदन चौधरी, सत्यनारायण लाल, अर्जुन लाल कर्ण, गुणनाथ झा, दयानाथ झा, ब्रह्मानन्द सिंह झा आदि-आदि। ई सभ भेलाह मैथिली आन्दोलनक आधार-स्तम्भ।

आओर तकरा बाद युवा तुर्कक विराट दल, लड़ाकू दस्ता—किशोरीकान्त मिश्र, डॉ. कालीकान्त झा, प्रो. शंकर झा, ब्रह्मनारायण झा, राजनन्दन लाल दास, पीताम्बर पाठक, लूटन ठाकुर, मिश्र 'निराला', कृष्णचन्द्र झा 'रसिक', शारदानन्द झा, विवेकानन्द झा, रामलोचन ठाकुर, कुणाल, अग्निपुष्प, सुरेन्द्र ठाकुर, अशोक झा, मुन्ना जी, विनय प्रतिहस्त, नवोनारायण मिश्र, लक्ष्मण झा सागर, ताराकान्त झा, एम. हजारी, यांगेन्द्र

पाठक 'वियोगी', कमलेश झा, विष्णुदेव मिश्र आदिक अपार स्फूर्ति आ ऊर्जा सँ दीप्त आकृति आँखिक सोझाँ मे आबि ठाढ़ भ' जाइछ एक-एक व्यक्ति, मिथिला-मैथिलीक लेल समर्पित-प्रतिबद्ध!

आओर लिअ', मिथिलाक लक्ष्मी पुत्र सभ केँ कोना विस्मृत कएल जा सकैछ जे रहलाह अछि प्रत्येक मोर्चा पर तैनात! ओ महा विभूतिसभ छथि—कामदेव झा, युगल किशोर झा, जीवेन्द्र मिश्र आ भोगेन्द्र झा। ई लोकनि भेलाह तन-मन-धन सँ समर्पित अपन मातृभूमिक बहुमुखी विकास आ उन्नयनक हेतु! तें प्रणम्य! वन्दनीय!! एवं विध, कोलकाताक महिमा रहल अछि, अपरम्पार-छूटि रहलाह अछि। किन्तु वर्तमानक कवि-साहित्यकार। मुदा तकरो अभाव नहि, जतेक चाही, भेटि जयताह एतय। ओ सभ छथि—स्वनामधन्य राजनन्दन लाल दास, रामलोचन ठाकुर, नवीन चौधरी, डॉ. उदयनारायण सिंह 'नचिकेता', प्रो. विद्यानन्द झा, सुशील झा, लक्ष्मण झा सागर, प्रो. शंकर झा, डॉ. अनमोल झा, आमोद झा, अशोक झा, नवोनारायण मिश्र, विनय भूषण, अंजय चौधरी, चन्दन कुमार झा, मिथिलेश कुमार झा, भास्करानन्द झा, अजय तिरहुतिया, उमाकांत बक्शी, अमरनाथ झा भारती, कमलेश झा 'कमलेश', विजय 'ईस्सर' आदि जनिक नाम लैत गौरवान्वित भ' उठैछ मोन, तृप्त भ' जाइछ आत्मा।

सागर जी, जें कि अहाँ उठाओल कोलकाताक बात, तें एतेक रास विभूतिक स्मरण भ' आएल अछि हठात्। अहाँ कोलकाताक चर्चा कएल, तँ मौन पड़ि गेलाह अछि आइ मिर्जा गालिब। ओहो एक बेर कोलकाता आएल छलाह। सुनैत छी, कोलकाता सँ घुरला सन्ता हुनक महबूबा हनका सँ जखन कोलकाताक मादे पुछलखिन, तँ हुनक उतारा छलनि—

'कलकत्ते का जो जिक्र किया तुम ने हमनशीं,
एक तीर-सा सीने मे चुभा कि हाय-हाय।'

हम : की दिल्ली मे साहित्यिक परिवेश सँ अहाँ सन्तुष्ट छी? जँ 'हँ' तँ कोना? आ 'नहिं' तँ कोना?

मल्लिकजी : दिल्लीक कथा किछु आओरे छैक। दिल्लीक मिजाज किछु दोसरे रंगक—तल्ख ओ ऊर्जावान। एतुक्का लोक 'टका'क पाछाँ पागल। टका, टका आ टका, एकरा छाड़ि आओर चाहबे की करी? टका रहला पर सब साधन उपलब्ध। एतुक्का लोकक लेल—

Money! Money! Money!
Brighter than sunshine
Sweeter than honey.

एतबहि नहि, हिनका लोकनिक कथन अछि—

Money is might
Money is bright
Money is life
Money is wife

हमरा दृष्टि मे एतुक्का लोकक पास समयक नितान्त अभाव। कोनो बटोही केँ रस्ता बतयबाक लेल दू मिनटक समय नहि, बस मात्र भागम-भाग। संवेदना मरि गेल छैक, आपकता बिला गेल छैक। फूसिक व्यापार चरम पर आ तें देखाबा शिखरपर! तैयो दिल्ली, दिल्लीए थिकैक। एतुक्का साहित्यिक परिवेश सन्तोषप्रद, आह्लादक, मुदा व्यक्ति-केन्द्रित, अहम (Ego) सँ भरल लोक सभ। एक सँ एक विद्वान! हम सन्तुष्ट छी, हमरा सन अदना आदमी केँ आओर चाहबे की करी? मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ अर्चित-चर्चित नाटककार महेन्द्र मंगलिया, स्वनामधन्य महान लेखक गंगेश गुंजन, राजकमल-साहित्यक अधिकारी विद्वान देवशंकर नवीन आदि साहित्यकारक संगति-साहचर्य यदा-कदा उपलब्ध होइत रहैछ। नारी-चेतनाक जीवन्त प्रतीक, मैथिलीक चर्चित—सम्मानित लेखिका आ चूड़ान्त विदुषी शेफालिका वर्मा सेहो शान सँ दिल्लीक शोभा बढ़ा रहलीह अछि। नवतुरिया वर्गक लेखक मे 'मैलोरंग'क यशस्वी सम्पादक प्रकाश झा ओ 'मैथिली लोकमंच पत्रिकाक सम्पादक ऋषि कुमार झा बरोबरि खोज-पुछारि करैत रहैछ। एतद्धि रामायणम्।

हम : निकट भविष्य मे पोथी प्रकाशनक कोनो योजना अछि? जँ 'नहिं' तँ किएक? आ 'हँ' तँ की?

मल्लिकजी : हमरा लग समय अछि कम आ काज अछि सभ टा बाँकी। 'अग्नि-शिखा' (कविता संग्रह) क प्रकाशनक दस बर्ख पश्चात् हेबनि मे 'प्रेम-सौन्दर्य विधायक विद्यापति' (शोध-ग्रन्थ) प्रकाशित क' पओलहुँ अछि। एहि विलम्बक प्रधान कारण रहल अछि अर्थक अभाव। पहिनहि कहि चुकल छी, मैथिली मे पाठक आ पइसा दुहूक कमी अछि; प्रकाशन, वितरण आ विपणनक कोनो व्यवस्था नहिं। लोक खेत भरना राखि अपन पोथी प्रकाशित क' रहल अछि। एहि समस्या सँ सभ क्यो छथि परिचित, मुदा निराकरणक कोनो उपाय नहि। तथास्तु, हम यथाशीघ्र अपन समस्त अप्रकाशित पोथीक प्रकाशनक ब्योंत मे लागल छी। 'जस्ट वेट एंड वाच'।

हम : अहाँ अध्यापक रहि चुकल छी। की अहाँ मानैत छी जे विद्यार्थी केँ ओकर मातृभाषाक माध्यम सँ शिक्षा देला सँ विषय-वस्तु केँ बुझबा मे सुगमता रहतैक?

मल्लिकजी : 'माताभूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्यां'—वेदक अनुसार माय आ मातृभूमि। तदवत् महत्त्वपूर्ण होइछ मातृभाषा। यथार्थे कहल गेल अछि—

'जिसको न निज भाषा तथा निज देश पर अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है॥'

हमहीं किएक, आइ सम्पूर्ण विश्व मानि रहल अछि जे बच्चा अपन मातृभाषा मे शिक्षा ग्रहण क' बेसी चंसगर होइत छैक, तैयो हमरालोकनि केँ अपना अधिकार सँ वंचित कएल जा रहल अछि। प्रशासनिक कुचक्रक विरुद्ध, राजनैतिक षडयंत्रक विरुद्ध अवाज बुलन्द करबाक आवश्यकता अछि, संघर्षक प्रयोजन अछि। सूतल छी, विवाह होइत अछि—ताहि सँ काज नहि चलत। तखन अपन जे विभिन्न कमी अछि, तकरहु यथाशीघ्र दूर करए पड़त। 'विद्वानक लेल इशारा काफी।' तें तँ कहलो गेल अछि—

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल॥'

हम : अहाँ साठि बर्ख मे नोकरी सँ अवकाश प्राप्त केलहुँ। एखन अहाँ बिरासी बर्खक उमेर मे सेहो पचास बर्खक लोक जकाँ सक्रिय छी आ लेखकीय ऊर्जा जोगौने छी। एकर की राज?

मल्लिकजी : हमर सक्रियता आ ऊर्जाक मूल मे छथि हमर धर्मपत्नी मणिबालाजी (सोमदेवक शब्द मे 'मैनजी')। ओएह छथि हमर हाथ—पएर, मुदा किछु नहि क' सकलियनि हुनका लेल अद्यपर्यन्त जकर क्लेश सदति सीदैत रहैछ। अन्य कारण भेल प्रतिदिनक नियमपूर्वक योगाभ्यास, खान-पान मे संयम आ सकारात्मक सोच, 'The goal of life is to die young—as late as possible.'

हम : परसू हम कोलकाता लौटब। ओतुक्का मैथिल समाडक लेल किछु सुझाओ? कोनो सनेस?

मल्लिकजी : कोलकाताक मैथिल समाडक प्रति हमर अशेष मंगल कामना आओर अपन ऊर्जावान नव लेखकलोकनि सँ हमर इएह कहब अछि जे पहिने गहन अध्ययन करथि, निरन्तर अभ्यास करथि, तखन लिखथि।

हम : जेनाकि भाभीजी कहलनि, अहाँ प्रतिदिन साँझुक पहर नीचाँ मे हनुमान मन्दिरक प्राडण मे एक-दू घंटा समय बितबैत छी, जखनकि हमरा बूझल अछि जे अहाँ कॉमरेड सेहो रहल छी आ कॉमरेड लोकनि देवी-देवता मे विश्वास नहि रखैत छथि। एहि मादे की कहय चाहब?

मल्लिकजी : हम मार्क्सवादी जीवन-दर्शनक समर्थक रहलहुँ अछि, कॉमरेड नहि। नित नवीन प्रयोग, चिर नवीनताक खोज आ परिवर्तनशीलता मे हमर आस्था ओ विश्वास रहल अछि। सरिपहुँ पूर्व मे हम महानास्तिक छलहुँ, नित्शे (Neitzsche) सँ प्रभावित, हुनक 'द सांग्स ऑफ जरथुस्ट्रा' (The Songs of Zarathustra) सँ

प्रोत्साहित आ हुनक 'सुपर ह्युमन'—महामानवक परिकल्पनाक समर्थक। हुनक कथन हमरा जिह्वा पर अंकित छल—'God is dead. I have seen him lying on the road.' चार्वाक सेहो हमरा विशेष प्रभावित कएने छलाह—'यावत् जीवेत सुखम् जीवेत, ऋणं कृत्वा घृतम् पीबेत' आ 'भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत:'—सदृश हुनक कथन बेस प्रभावित कएने छल। मुदा आइ हम घोर आस्तिक छी।

रहल मन्दिर मे जयबाक गप, से जखन कोनो साहित्यकार बन्धु अबैत छथि, तँ साहित्य-चर्चाक लेल मन्दिरक निरापद प्रांडण सँ बढ़िक' आओर स्थान कतय उपलब्ध भ' सकैछ एतय? एहि मन्दिर मे कोनो खास ताम-झाम नहि, पुजारी मैथिल आ नीक लोक। दोसर, मन्दिर मे भिन्न-भिन्न प्रकारक लोकक दर्शन करबाक सुयोग सहजहिं प्राप्त भ' जाइछ। मन्दिरक सिंह द्वारि पर करमान भिखमंगा-भिखमंगनीक दल, तकर अपन जीवन-गाथा, अपन नियम-कानून, अपन समाज। दस टाका सँ कम भीख नहि लेबयवला स्टैंडर्ड भिखमंगा भला आनठाम कतय भेटत! 'तुलसी एहि संसार में, भाँति-भाँति के लोक'—कहबी सँ तँ अहाँ परिचिते हएब सागर जी!

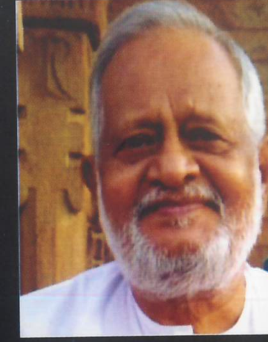
आब बुझबा मे अबैछ जे मनुक्खे एहि संसारक परम सत्य थिक। ओकरा अहाँ ईश्वर, गॉड, अल्लाह, प्रकृति, एनर्जी, एटम—कोनहु नाम सँ अलंकृत क' दियौक, कोन अन्तर हेतैक, कोना पहाड़ टूटि पड़तैक! तें हमर इएह निष्कर्ष थिक—

मनुक्खे एहि सृष्टिक शृंगार अछि, ओ धरा केर संकुचन विस्तार अछि।
सत्य थिक भगवानक जँ कल्पना, मनुक्खे भगवानक अवतार अछि॥

हम उठिक' ठाढ़ भेलहुँ, कहलियनि—'मल्लिक जी! बहुत रास गप केलहुँ आ ढेर जानकारी प्राप्त कएल। आब विदा दीअ', बड़ अबेर भ' गेल अछि। हमरा लेल एतेक समय निकालबा लेल अहाँ कें अशेष धन्यवाद। आब देखियौ, फेर कहिया दिल्ली आबि अहाँक दर्शन करबाक सौभाग्य भेटैछ वा अहाँ सब कोलकाता अबै छी!' भौजी कें सेहो प्रणाम कयलियनि।

एतबा गपक' हम घर सँ बहरयलहुँ। मल्लिक जी दुनू प्राणी देहरि तक छोड़य एलाह।

•••



वीरेन्द्र मल्लिक

जन्म तिथि : 3 जनवरी, 1937 ई. (प्रमाणपत्र)
9 नवम्बर, 1934 ई. (जन्मपत्र)

शिक्षा : एम.ए., पी.एच-डी.

वृत्ति : एम.जी.आर.अकादमी, कोलकाताक अवकाश प्राप्त हिन्दी विभागाध्यक्ष।

प्रकाशित पोथीक नाम : अग्नि-शिखा, अथातो काव्य जिज्ञासा (कविता-संग्रह), प्रेम-सौन्दर्य विधायक विद्यापति (शोध ग्रंथ), नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान (आलोचना), प्रथम पुरुष (काव्यालोचना)।

अप्रकाशित पोथी : विभूति-विमर्श (शोधपरक साहित्यिक परिचय); कविता ठाढ़ बजार मे (कविता संग्रह); मिस लाल (कथा संग्रह); मैथिली पत्र-पत्रिका : एक सर्वेक्षण (शोधपरक आलेख); धिया-पुताक नाम (नामकरण); प्रेम-गीत-विद्यापति (संकलन); मूल्यांकन विद्यापति (समालोचा) आदि।

सम्मान : मिथिला विकास परिषद, कोलकाता—यात्री सम्मान, विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाता, लाइफटाइम एचिवमेंट अवार्ड, अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली, साहित्य सम्मान, चेतना समिति, पटना, यात्री चेतना पुरस्कार, अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली, भोगेन्द्र झा सम्मान, मिथिला सांस्कृति परिषद, आसाम, राजकमल सम्मान, मैलोरंग, दिल्ली, ज्योतिरीश्वर सम्मान आदि सँ सम्मानित।

स्थायी पता (पैत्रिक) : ग्राम+पो. परसौनी, मधुबनी, बिहार-847228

पत्राचार-पता : ए-816, जी.डी. कालोनी, फर्स्ट फ्लोर, हनुमान मंदिर के निकट, मयूर विहार, फेज-3, नई दिल्ली-110096

ई मेल : virendra mullick@gmail.com